गांधीजी के साथ सात दिन

(लुई फ़िशर की A week with Gandhi का अनुवाद)

श्री सुदर्शन

श्री कुलभूषण बी. ए.

व्होरा ऐन्ड कम्पनी, पब्लिशर्स, लिमिटेड

३ राउन्ड बिल्डिंग, कालबादेवीरोड, बम्बई २

भूमिका

इस छोटी सी किताब के छपने में मेरा दोष नहीं। मैंने गांधीजी के साथ सात दिन गुज़ारे और उनकी डायरी लिख ली थी। मुझे डर था, कहीं यह नोट गुम न हो जाएं। इस लिए अमरीका वापस आते ही मैंने उन्हें सिलसिलेवार लिख लिया। मेरे कुछ मित्रों ने यह नोट देखे, तो बोले-इन्हें छपवा डालो। मैंने कहा यह मेरी भारत-यात्रा का अधूरा हाल होगा। मैं बहुतसे और लोगों से भी मिला हूं और मैंने उनसे भी काफ़ी बातें की हैं जो कम ज़रूरी नहीं। गांधीजी पर लिखी हुई किताब हिंदुस्तान के बारे में लिखी हुई किताब नहीं कही जा सकती। "यह सब ठीक है," उन्होंने कहा। "मगर यह बात तुम भूमिका में कह सकते हो।" और मैं कह रहा हूं।

गांधीजी के साथ मेरी बात-चीत एक उत्तेजना जनक और विचारशील अनुभव था। दिल्ली-निवासी वायसराय लार्ड लिन्लिथगो ने मुझसे कहा था—"गांधी हिन्दुस्तान की सबसे बड़ी चीज़ है।" और यह बिल्कुल ठीक है। गांधीजी एक अनोखे अचरज हैं। उनकी ज़ात और दिमाग़ के क़रीब आना उत्तेजनीय है। जो कुछ भी उन्होंने मुझसे कहा मैंने उसे लिख लिया था। मैं उसे अगले पन्नों पर उद्धृत करता हूं। मेरी अपनी आलोचना आख़िरी अध्याय में है।

लुई फ़िशर

दो शब्द

मिस्टर लुई फ़िशर की यह किताब एक अमरीकन पत्रकार के संस्मरण हैं और वह पत्रकार अभी अभी गांधीजी के साथ सात दिन गुज़ार कर आया है। इसे गांधीजी और कांग्रेसका Defence (जवाब दावा) समझकर पढ़ना भारी भूल होगी। लेखक के लफ़्ज़ोंमें यह हिन्दुस्तानके महापुरुष के साथ गुज़ारें हुए आनन्दभरे समय का सच्चा सच्चा बयान है जिसे एक पत्रकार ने अपनी तर्ज़ में लिख दिया है। ज़्यादातर लोगों का ख़याल है कि गांधीजी एक रहस्यमय आब–हवा में रहते हैं। यह किताब इस ख़याल का ख़ातमा कर देगी। कुछ लोग गांधीजी को राजकाज में लगे हुए लीडर की हैसियत से जानते हैं। यह किताब गांधीजी को एक घरेलू वातावरण में दिखाएगी। आजकल कुछ लोग ऐसे हैं, जो गांधीजी की ज़रूरत से ज़्यादा तारीफ़ करते हैं, कुछ लोग ऐसे हैं जो हरवक्त उनकी बुराई ही करते रहते हैं। यह किताब गांधीजी को समझने में इन दोनों तरह के लोगों को बहुत मदद देगी। इसमें बहुत सी बातें भी हैं, जिनसे पढ़ने वाले लेखक से एकराय न होंगे।

कार्ल हीथ

गांधीजी के साथ सात दिन

३ जून १९४२

नई दिल्ली से चलकर, गरमी से झुलसती हुई और गर्द से भरी हुई एक्सप्रेस ट्रेन में सत्ताईस घंटे के सफ़र के बाद मैं रातके साढ़े आठ बजे वर्धा पहुंचा। वर्धा मध्यप्रांतका एक छोटा सा गांव है। दस दिन पहले मैंने जवाहरलाल नेहरू से कहा था, कि वह गांधीजी से मेरे मिलने का इंतज़ाम करा दें। कुछ दिन बाद उन्होंने मुझे ख़बर दी—"गांधीजी ने आप से मिलना मंज़ूर कर लिया है। आप उन के मंत्री महादेव देसाई को लिखिए, वह समय नियत कर देंगे।" मैंने देसाईजी को लिखा, कि मेरे लिए कोई भी समय ठीक होगा, और उन्होंने तारमें जवाब दिया—"स्वागतम्—महादेव देसाई।"

जब मैं वर्धा के स्टेशन पर गाड़ी से उतरा, तो एक सफ़ेद पोशाक वाले नौजवान ने मेरे पास आकर पूछा—"आप फ़िशर हैं?" मेरे हां कहने पर उसने कहा—"मुझे गांधीजी ने भेजा है।"

बाहर एक तांगा खड़ा था। तांगा एक घोड़े और दो पहियों की एक ऐसी गाड़ी है जिसमें सवारियां कोचवान के पीछे घोड़े की तरफ़ पीठ करके बैठती हैं। हमें लेकर तांगा गांव की तरफ़ रवाना हुआ। और कुछ देर बाद हम गांवके बाहर ही एक मकान के सामने

खड़े थे। यह मकान एक हिन्दुस्तानी लखपति[1] देसभक्त ने कांग्रेस को इसलिए दिया था कि उसमें मेहमान ठहरा करें। यहां मैं दूसरी मंज़िल के खुले छज्जे पर सोया। सारी रात कांग्रेस का बसंती-सफ़ेद-हरे रंगका झंडा तार-जंतर की तरह आवाज़ करता रहा, फड़फड़ाता रहा।

४ जून १९४२

मैं सवेरे जल्दी उठा, और गांधीजी के दांत-डाक्टर के साथ तांगे में बैठकर सेवाग्राम को रवाना हुआ। गांधीजी जब जेलमें नहीं होते, तो इसी गांवमें रहते हैं। दांत-डाक्टर ने कहा—इंगलैंड एक 'समझदार स्वामी' है। मैंने उसके साथ गांधीजी के बारेमें बातचीत करने की कोशिश की, मगर उसने राजनीति की बातें शुरू कर दीं।

तांगा रुका। मैं नीचे कूद पड़ा। सामने एक लम्बा और भूरा आदमी खड़ा था। यह गांधीजी थे। मैं लम्बे लम्बे डग भरता हुआ जल्दीसे उनके पास पहुंचा। उनके हाथ उनके दोनों तरफ़ खड़ी दो औरतों के कंधोंपर टिके थे। उनकी पतली भूरी टांगें घुटनों तक नंगी थीं। उनके पांव में चमड़े के चप्पल थे, कंधों पर सफ़ेद खादी की एक चादर, सिर पर तह किया हुआ

१—इशारा जमनालाल बजाज की तरफ़ है—अनुवादक

एक रूमाल। उन्होंने अंग्रेज़ी उच्चारण (तलफ्फुज़) में कहा "मिस्टर फ़िशर" और हमने हाथ मिलाए। उन्होंने दांत-डाक्टर को नमस्कार किया और पीछे मुड़े। मैं उनके पीछे चला। देसी बनावट के एक बैंचपर बैठकर उन्होंने उसके तख़्ते पर हाथ रक्खा और बोले—"बैठ जाओ।" फिर कहा—"तुम्हारे और तुम्हारी किताब के बारे में जवाहरलाल ने मुझ से ज़िक्र किया था। हम लोगों को ख़ुशी है कि तुम यहां आए हो। कितने दिन रहोगे?"

मैंने कहा—"मैं कुछ दिन रह सकूंगा।"

"ओह" उन्होंने कहा, "तब तो हम काफ़ी बातचीत कर सकेंगे।"

इतने में एक नौजवान उनकी तरफ़ बढ़ा और पास पहुंचकर उन्हें प्रणाम किया और फिर पांव छूने को झुका। गांधीजी ने कहा–बस बस। मैंने सोचा इसका मतलब अंग्रेज़ी में "Enough" होगा। बादमें मालूम हुआ कि मेरा अंदाज़ा ठीक था। कुछ देर बाद दो और नौजवान प्रणाम करने के लिए आए। लेकिन गांधीजी ने उन्हें जल्दी ही टाल दिया।

मैंने पूछा—"आपने अपने रहने के लिए यह गांव क्यों पसंद किया है?" उन्होंने कहा–"फ़लां आदमी ने–(यहां उन्होंने एक नाम लियां, जो मैं न सुन सका)—यह गांव मेरे लिए चुना है।"

मैं चुप रहा। वे भांप गए, कि हिन्दी नाम मेरी समझ में नहीं आया। बोले—"मीरा बहन मिस स्लेड नामकी अंग्रेज़ी महिला का हिन्दी नाम है। वह बहुत देर से मेरे साथ

हैं। वह चाहती थीं, कि मैं मध्य भारत के किसी गांव में रहूं। मैंने उससे कहा कि तुम्ही मेरे लिए कोई जगह पसंद कर दो। मेरी मरज़ी गांव में रहने की न थी, क्योंकि गांव गंदे और रोगोंका घर होते हैं। मगर यह जगह गांवके बाहर है, और गन्दी नहीं है।" दांत-डाक्टर ने नकली दांतों के बारेमें कुछ कहा। गांधीजी ने उसे समझाया कि उनके दांतों की काट ठीक नहीं बनी। एक औरत पीतल का बर्तन लाई, जिसमें पानी भरा था। उसमें नकली दांतों के तीन सेट धरे थे। मैंने सोचा अब मुझे चलना चाहिए। गांधीजी ने कहा—"सुबह और शाम दोनों वक्त तुम मेरे साथ सैर किया करो। इसके इलावा और भी समय हमें बातें करने के लिए मिलेगा।" मैंने उन्हें प्रणाम किया और चला आया।

मुझे सेवाग्राम के मेहमान-घरमें जगह मिली, जो मिट्टी की एक झोंपड़ी है। इसमें सिर्फ़ एक कमरा है। इसका फ़र्श मिट्टी का है, छत बांस की है। इसमें कई बिस्तर लगे हैं। कमरे के साथ ही एक छोटा सा रसोईघर है, और एक पानीघर है, जिसका फ़र्श पत्थर का है। यहां पीतल और टीन की कुछ बाल्टियां और कपड़े धोने के दो डोल रक्खे थे। बूढ़ी नौकरनी "बाई" कुएं से पानी के घड़े भर भरकर लाती थी, और डोलों को भरती रहती थी। गांधीजी ने मुझसे कहा था कि खुरशेद बहन मेरी ख़बरगीरी करेंगी। यह कुमारी खुरशेद बहन चालीस बरस की एक पारसी महिला हैं। उन्होंने उस समय खद्दर की एक पीली साड़ी पहनी हुई थी। वह छः साल तक इटली और फ्रांसमें गाना सीखती रहीं हैं। आज से पंद्रह साल पहले उन्होंने गाना बजाना छोड़ दिया और तब से

अब तक गांधीजी की सेवा में हैं। उनका घराना करोड़पति है। उनका दादा, जो पिछली लड़ाई में ९५ बरस का होकर मरा, ब्रिटिश हाउस आव कामंस का पहला हिन्दुस्तानी मेम्बर था।

खुरशेद बहन स्यानी और सजीव हैं। मैंने उनसे कहा:— "हिन्दुस्तान में राष्ट्रीयता पर हमेशा ज़रूरत से ज्यादा ज़ोर दिया जाता है। मैं समझता हूं कि आज़ाद हिन्दुस्तान के फ़ासिस्ट हो जानेकी सम्भावना है। और अगर यह हो गया, तो लोगों की आज़ादी आज से कम हो जाएगी जो आज वह ब्रिटेन के आधीन हैं।" खुरशेद बहन ने इस तर्क को नहीं माना। वह बोलीं—पहले अंग्रेज़ यहां से निकल जाएं इसके बाद हिन्दुस्तानी अपनी सारी समस्याएं अपने आप हल कर लेंगे। यों समझो कि एक औरत के घरमें बहुत देर से मेहमान आ टिके हैं, और वह निकलने का नाम तक नहीं लेते। वह चाहती है कि किसी तरह वह जाएं तो सही। वह उन्हें बड़े दरवाज़े से बाहर जाता देखने के लिए तड़प रही है। इस वक्त वह कुछ और सोच ही नहीं सकती।"

खुरशेद ने आश्रम के दूसरे वासियों के साथ मेरी मुलाक़ात कराई। इनमें से कुछ कांग्रेस के काजकर्ता थे, कुछ गांधीजी के मंत्री थे और कुछ ऐसे लोग थे जो गांधीजी के चरणों में रहने के लिए आते हैं और कुछ देर रह कर चले जाते हैं। इन लोगों में हिन्दुस्तान के सभी सूबों के लोग हैं, और उनकी ज़बानें अलग अलग हैं। इसलिए जब उन्हें आपस में बात-चीत करनी होती है तो अंग्रेज़ी में करते हैं। यहां के बच्चे बहुत सुंदर हैं।

मैं महादेव देसाई के झोंपड़े में गया। सिर गंजा, पेट बढ़ा हुआ; एक धोती पहने चटाई पर बैठे थे और चर्खे पर सूत कात रहे थे। उनकी धर्मपत्नी भी एक मामूली साढ़ी पहने साथके कमरेमें चर्खा कात रही थीं। देसाई जी दिन में पांच सौ गज़ सूत कात लेते हैं। चर्खा एक मामूली-सी मशीन है, जिसे आम किसान बना लेते हैं, या बाज़ार से ख़रीद लेते हैं। देसाईजी ने मुझे बताया कि वह सफ़र बहुत करते हैं और आम तौरपर गाड़ी में भी कातते हैं। मगर उन्होंने किसी दूसरे को गाड़ी में चर्खा कातते नहीं देखा। गांधीजी के उपदेश और अमल से हिन्दुस्तान के लाखों किसान अब सूत कातते हैं, ग्राम-उद्योग बढ़ाते हैं और करोड़ों लोगों के लिए कपड़ा तैयार करते हैं। लेकिन देसाईजी का ख़्याल है कि अभी इसका पूरा प्रचार नहीं हुआ, और अभी हिन्दुस्तान की अर्थ-व्यवस्था में हाथ से कते हुए सूत को उसकी ठीक जगह नहीं मिली।

ग्यारह बजे के क़रीब, जब मेरे पेट में चूहे दौड़ रहे थे, ख़ुरशेद बहन मुझे गांधीजी के पास ले गई। मेहमान-घर से यह जगह लगभग सौ गज़ के फ़ासले पर है। एक मंज़िली कुटिया, बांस की चटाई की दीवारें और छत पर सस्ते लाल खपरैल। मैंने अपने सोने के कमरे में पहनने वाले स्लीपर बाहर की सीमेंट-सीढ़ियों पर उतार दिए और नंगे पांव अंदर गया। इस छोटे कमरे से मैं कुटिया का ख़ास कमरा देख सकता था। गांधीजी उस समय मिट्टी के फ़र्श पर बिछाई हुई एक चटाई पर लेटे थे। उन के बिस्तर के पास

उनका एक चेला बैठा था, और एक रस्सी खींच रहा था। इस से छत पर लटका हुआ एक तख़्ता हिलता था। तख़्ते के नीचे एक काला कपड़ा लगा था। यह यहां बिजली के पंखे का काम देता है। गांव में बिजली नहीं है। गांधीजी उठ बैठे और मुझ से बोले—"अब तुम अपना जूता और टोप पहन लो। यह दो चीज़ें यहां निहायत ज़रूरी हैं। वरना लू लग जाने का ख़तरा है।" एक औरत उनके सिर पर रखने के लिए एक गीला तह किया हुआ छोटा सा कपड़ा ले आई। उन्होंने अपना एक हाथ ख़ुरशेद बहन के कन्धे पर रखा, और मुझसे बोले—"आओ।" दो घर लांघकर हम चटाई के बने हुए भोजन-घर में जा पहुंचे। गांधीजी की देखादेखी मैंने भी अपने जूते बाहर ही उतार दिए और टोप ख़ुरशेद बहन को दे दिया। ख़ुरशेद बहन ने उसे दीवार पर लगी एक खूंटी से लटका दिया। गांधीजी ने मुझे एक आसन पर बैठने का इशारा किया, और दूसरा आसन छोड़कर तीसरे आसन पर आप बैठ गए। इस दूसरे आसन पर दमा के रोगी नरेंद्र देव बैठे थे। यह साहब कांग्रेस के अन्दर काम करने वाली साम्यवादी पार्टी के एक लीडर हैं। मैं एक फ़ुट के क़रीब चौड़ी चटाई पर बैठा था। गांधीजी एक पतली गद्दी पर बैठे थे। उनकी बाईं तरफ़ उनकी दांत-रहित स्त्री कस्तूरबाई बैठी थीं। उनकी उम्र सत्तर साल की है। गांधीजी तेहत्तर साल के हैं।

यह भोजन-घर क्या है, दो लम्बी दीवारें हैं, जिनको पिछली दीवार ने आपस में मिला रखा है। चौथी तरफ़ बिलकुल खुली है। इसे दरवाज़ा कह लीजिए। इस दरवाज़े के पास एक मेज़ पर खाने से

भरे हुए बर्तन और थालियां पड़ी थीं। वहां कुछ बच्चे भी थे, सांवला रंग, चमकदार आंखें। मेरा मन उन की तरफ़ दौड़ा। उनमें से किसी की उम्र तीन साल थी, किसी की पांच साल और किसी की आठ साल। यह आश्रम-वासियों के बच्चे थे। कुछ देर बाद हर एक के सामने एक एक थाल था और कुछ आदमी नंगे पांव खाना परोस रहे थे। उन्होंने गांधीजी के सामने कुछ बर्तन और तसले रख दिए। गांधीजी ने बर्तनों से ढ़कना उठाया, और खाना बांटने लगे। इस से पहले मुझे पानी का गिलास मिल चुका था। गांधीजी ने मुझे एक कटोरी दी, जिस में पालक के पत्ते और गांठ-गोभी के टुकड़े थे। इस के बाद उन्हों ने एक डिब्बा खोला और उसमें से एक पतली सी रोटी निकालकर मुझे दी। इस बीच में एक औरत मेरी थाली में थोड़ा सा नमक डाल गई थी, और दूध का एक गिलास दे गई थी। कुछ देर बाद वह फिर आई और मुझे छिलकों समेत भुने हुए दो आलू और एक नरम भूरी रोटी दे गई। गांधीजी ने मेरी तरफ़ देखा, और मुस्कराकर बोले—"मैं ने तुम्हें खाना दिया है, मगर प्रार्थना से पहले खाने की इजाज़त नहीं दी।" मैं बोला—"मैंने देख लिया है कि अभी बच्चों ने भी खाने को हाथ नहीं लगाया। और मैं समझ गया हूं कि अभी मुझे भी सबर करना चाहिए।" इस वक्त वहां सब मिलाकर तीसके क़रीब आदमी थे। खाना सबके सामने आ रहा था, मगर शुरू कोई न करता था। इतनेमें एक घंटा बजा। इसके साथ ही एक सफ़ेद निकर वाले लम्बे, तन्दुरुस्त आदमी ने परोसना रोक कर अपनी आंखें बंद कर लीं। उस समय उसकी आंखों की जगह

सिर्फ़ एक सफ़ेद लकीर दिखाई देती थी। ऐसा मालूम होता था जैसे वह अंधा है। इसके बाद उसने ऊंचे सुरों में मंत्र पढ़ना शुरू कर दिया। इसमें गांधीजी और दूसरे लोग भी शामिल हो गए। प्रार्थना "शान्ति, शान्ति, शान्ति" के साथ ख़तम हुई। देव ने मुझे समझाया कि 'शान्ति' का अर्थ अंग्रेज़ी में "पीस" है।

भाजी खाने के लिए मुझे एक चमचा दिया गया था, मगर दूसरे लोगों के पास चमचे न थे। वह रोटी का टुकड़ा तोड़कर उसीसे चमचे का काम ले लेते थे। इतने में एक परोसने वाली औरत ने मेरी रोटी पर घी उंडेल दिया। नमक ज़्यादा था, इसलिए खाना बेस्वाद न था। उबले हुए गाय के दूध का स्वाद ठीक करने के लिए मैंने कुछ शक्कर मंगवाई। गांधीजी ने बकरी का दूध पीना छोड़ दिया है * और अब हिन्दुस्तान भर के लोगों को गाय का दूध पीने की हिदायत कर रहे हैं। उनका ख़याल है कि इस तरीक़े से लोगों का ध्यान बैलों की अच्छी नसलों की तरफ़ जाएगा।

गांधीजी बराबर खाते रहे। बीच बीचमें वे अपनी धर्मपत्नी, ख़ुरशेद बहन, देव और मुझे भोजन बांटने के लिए रुक भी जाते थे। उनके हाथ बड़े हैं और उनकी उंगलियां लम्बी और सुडौल हैं। उनके घुटने बहुत उभरे हुए हैं और उनकी हड्डियां चौड़ी और मज़बूत हैं। उनका चमड़ा साफ़ और चिकना है। बर्तन में हाथ डालते समय उन के हाथ नहीं

* यह लुई फ़िशर की भूल है। महात्माजी अब भी बकरी ही का दूध पीते हैं।
—अनुवादक

कांपते। उनकी स्त्री उन्हें बार बार एक पंखे से हवा कर रही थीं। उस समय ऐसा मालूम होता था, कि उनकी स्त्री त्याग और तपस्या की जीगती—जागती मूर्ति हैं।

इतने में गांधीजी ने मुझ से पूछा—"तुम रूस में चौदह साल रहे हो। तुम्हारा स्टालिन के बारे में क्या ख़याल है?"

मुझे गरमी लग रही थी और मेरे हाथ चिकने थे। इसलिए मैंने संक्षेप में जवाब दिया—"बहुत समझदार और बहुत ज़ालिम।"

गांधीजी ने पूछा—"ज़ालिम? हिटलर की तरह?"

मैंने जवाब दिया—"बिलकुल।"

कुछ देर चुप रहने के बाद गांधीजी फिर मुझ से मुख़ातिब हुए और बोले—"क्या तुम वायसराय से भी मिले हो?"

मैंने कहा—"हां,"। मगर गांधीजी ने यह मज़मून छोड़ दिया।

ज़मीन पर बैठने के कारण मेरे घुटने दुख रहे थे, क्योंकि मेरे शरीर का काफ़ी वज़न मेरे घुटनों पर पड़ता था। शरीर का वज़न किस तरह बराबर रखना चाहिए यह हिन्दुस्तानियों को आता है। मैं इस विद्यामें अभी तक अनाड़ी था।* हारकर मैंने एक पैर का तला ज़मीन पर टिकाया और घुटना ऊंचा कर लिया। इससे मुझे कुछ आराम मालूम हुआ। गांधीजी ने कहा—"मेरा ख्याल है, तुम्हारी गाड़ी तो अटक गई।"

---

* और अब भी अनाड़ी ही होंगे—अनुवादक।

" नहीं " मैंने जवाब दिया। " मुझे खाना पसंद है।"

थोड़ी देर बाद उन्होंने कहा—" पानी उबला हुआ है, जितना चाहो, पियो।" फिर बोले— " तुमने आम तो खाया ही नहीं। खाओ ना ! "

मैंने कहा—"मैं ने दूसरों को आम खाते देखा है, कभी खाया नहीं। मैं आज अपनी ज़िंदगी में पहली बार आम खाने की कोशिश करूंगा। "

ख़ुरशेद बहन बोलीं—" आम खाकर तुम्हें नहाना पड़ेगा।" मैंने आम को छीलना शुरू किया। गांधीजी और दूसरे लोग हंस पड़े। गांधीजी ने मुझे समझाया—" पहले इसे हाथसे दबा कर नरम कर लेते हैं, इसके बाद चूस लेते हैं।" मगर मैं ठीक था क्योंकि मैं देखना चाहता था कि आम अंदर से गला सड़ा तो नहीं हैं? गांधीजी ने कहा—" अगर तुम हमारी तरह चूस सको तो हम तुम्हें बहादुरी का तमग़ा देंगे।"

मैं खाना ख़त्म कर चुका था। ख़ुरशेद बहन ने सिर हिलाकर मुझे इशारा किया, कि तुम गांधीजी के उठने से पहले भी उठ सकते हो। मैंने उन्हें नमस्कार किया और अपना टोप और जूता पहनकर बाहर चला आया। ख़ुरशेद बहन ने मुझसे कहा—"अब गांधीजी से तुम्हारी मुलाक़ात तीन बजे होगी। "

हिन्दुस्तानी आम तौरपर हाथ नहीं मिलाते। जब वह किसी से मिलते हैं, या विदा होते हैं तो दोनों हथेलियां मिलाकर मुंहकी सतहतक लाते हैं, मुस्कराते हैं, और ज़रासा झुक जाते हैं। इस

वक्त वह बड़े भले और मेहरबान मालूम होते हैं। जब मैंने गांधीजी को नमस्कार किया तो उन्होंने मुझे इसी तरह हाथ जोड़ कर विदा किया।

मैं अपने कमरे में जाकर बारह से एक बजे तक सोया और जब जागा, तो पसीना पसीना हो रहा था। मैंने पानी-घर में जाकर दिनका तीसरा स्नान किया और स्नान क्या किया, कांसे के बर्तन से खड़े खड़े शरीर पर पानी डाल लिया।

अभी तीन बजने में कुछ मिनट बाक़ी थे, कि मैंने धूप से तपी हुई रेत और कंकरियों का सौ गज़ का फ़ासिला तय किया, और गांधीजी कि कुटिया में पहुंचा। इस समय गरमी के मारे मुझे ऐसा मालूम होता था, जैसे मेरे सिर के अन्दर सब कुछ सूख गया है।

जब मैं गांधीजी के कमरे में पहुंचा, उस समय वहां छः सफ़ेद खद्दर-धारी ज़मीन पर बैठे थे। एक काली साड़ी वाली औरत पंखे की रस्सी खींच रही थी। सारे कमरे में सजावट की सिर्फ़ एक ही चीज़ थी। और वह थी कांच में मढ़ी हुई ईसा मसीह की तसवीर। इसके नीचे लिखा था—“ यह हमारी शांति है। ” गांधीजी एक चटाईपर बैठे थे। यह चटाई उनका बिछौना भी था। उनके पीछे एक तख़्ता था, और उस तख़्ते के ऊपर एक पतलासा तकिया था। वे सुनहरी फ्रेम का चश्मा पहने थे और फ़ाउंटेन पेन से एक ख़त लिख रहे थे। इस समय वह आलती पालती मारकर बैठे थे। पास ही हाथसे बनाए हुए एक लकड़ी के चौखटे

में तीन और फ़ाउंटेन-पेन रक्खे थे। उनके बिछौने की बाईं तरफ़ कुछ किताबें सलीक़े से सजाई हुई थीं। मुझे देखकर बोले—"आओ, इस पंखा खींचने वाली के पास बैठ जाओ। यहां यह जगह सबसे ठंडी है।" जब मैं एक कोने में दीवार के साथ पीठ लगाकर बैठ गया तो गांधीजी ने कहा—"अगर तुम्हें आपत्ति न हो तो यह लोग यहीं बैठे रहें। यह बोलेंगे नहीं। लेकिन अगर तुम्हें ऐतराज़ हो, तो यह चले जाएं।" इस समय वहां देव थे, देसाई जी थे, खुरशेद बहन थीं, और कुछ आश्रमवासी थे। इतने लोगों में 'इंटरव्यू' लेना मुझे पसन्द न था। मगर मैंने कहा—"बैठे रहें" और मैं आप अच्छी तरह बैठ गया।

गांधीजी बोले—"अब मैं तैयार हूं।"

मैंने कहा—"मेरा ख़याल है, क्रिप्समिशन ने हिन्दुस्तान के इतिहास का एक नया पन्ना उलट दिया है, और देस कुछ कुछ समझने लगा है कि क्रिप्समिशन की नाकामयाबी का मतलब क्या है। हो सकता है कि इस का परिणाम अच्छा निकले। इसलिए मैं यह जानना चाहता हूं कि क्रिप्स की असफलता का कारण आप की राय में क्या है?"

गांधीजी ने जवाब दिया—"क्रिप्स ने यहां पहुंचकर मुझे तार दिया कि मैं उन से नई दिल्ली में मिलं। मेरी इच्छा न थी की दिल्ली जाऊं, लेकिन यह सोचकर कि शायद इस से कुछ लाभ हो सके, मैं दिल्ली चला गया। मैंने ब्रिटिश सरकार की तजवीज़ों के बारे में अफ़वाहें सुनी थीं, मगर तजवीज़ें देखी न थीं। क्रिप्स

ने मुझे वह तजवीज़ें दिखाईं। मैंने वह तजवीज़ें देखीं तो क्रिप्स से कहा—'अगर तुम्हें यही लाना था तो तुम्हें यहां आने की क्या ज़रूरत थी? अगर तुम्हारी सारी तजवीज़ यही है, तो मैं तुम्हें सलाह दूंगा कि जो पहला जहाज़ तुम्हें मिले उसमें बैठकर वापस चले जाओ।" क्रिप्सने कहा—'मैं ग़ौर करूंगा।'

मैं—"क्रिप्स की तजवीज़ों के बारेमें आपकी क्या राय है? क्या उनकी रू से आपको डोमिनियन स्टेटस नहीं मिलता था, और इसके साथ ही आपको यह अख्तियार नहीं मिलता था, कि अगर चाहें तो ब्रिटिश साम्राज्य से अलग भी हो जाएं?"

गांधीजी—"सी. एफ. ऐन्ड्रयूज़ हिन्दुस्तान में ईसाके सच्चे दूत समझे जाते हैं। वे कहा करते थे कि 'डोमिनियम स्टेटस' हिन्दुस्तान के लिए नहीं है। क्योंकि ब्रिटेन के साथ हमारा संबंध उन उपनिवेशों जैसा नहीं जहां गोरे लोग बसते हैं या उन लोगों की सन्तानें रहती हैं, जो कभी इंगलैंड से आकर वहां बस गई थीं। हमें किसी के दिए हुए स्टेटस की ज़रूरत नहीं। अगर हमें कोई दूसरी जाति स्टेटस देती है, तो इसका यह मतलब है, कि हम आज़ाद नहीं हैं। जहां तक ब्रिटिश साम्राज्य से अलग होने के अधिकार का सवाल है, इस में भी कई रुकावटें हैं। इन रुकावटों में से सब से बड़ी रुकावट रजवाड़ों की है। अंग्रेज़ कहते हैं, 'रजवाड़ों के साथ हमारी जो संधियां हैं, उनका निबाह करना हमारा धर्म है।' मगर यह संधियां वह हैं, जो अंग्रेज़ों ने अपने फ़ायदे के लिए रजवाड़ों के मुंह में ठूंसी थीं। यह तो आपको

मालूम ही है कि बीकानेर का महाराजा या कोई क, ख, ग महाराजा जो मैं उदाहरण के लिए ले रहा हूं—अंग्रेज़ों के आने से पहले भी राज करता था, और उस वक्त उसकी ताक़त आज से कहीं ज्यादा थी। मगर उस वक्त यह संधियां न थीं। दूसरी रुकावट पाकिस्तान की मंज़ूरी की है। हिन्दू मुसलमानों का भेदभाव ब्रिटिश सत्ता की वजह से बढ़ गया है। मगर क्रिप्स योजना इस भेद को और भी साफ़ कर देती है। इस भेद का आरंभ लार्ड मिन्टो ने किया था, जब वह हिन्दुस्तान के वायसराय थे (१९०९ ई०)। उन्होंने हिन्दु-मुसलमानों को अलग अलग वोट के अधिकार दिए। और उस वक्तसे लेकर आज तक अंग्रेज़ इस भेद भाव को बढ़ाने की कोशिश करते आ रहे हैं। लार्ड कर्ज़न बहुत समझदार हाकिम था। मैं जिस तरह चेम्सफ़र्ड, इरविन (हैलीफ़ैक्स) और लिलिथगो से मिला हूं, उस तरह कर्ज़न से नहीं मिला। मगर मैं यह जानता हूं, कि वह एक आदमी से एक बात कहता था, दूसरे से दूसरी बात कहता था, तीसरे से तीसरी बात कहता था। सर सेमुएलहोर से बातचीत करते समय मुझे मालूम हो जाता था कि मैं कैसे आदमी से बात कर रहा हूं। मुझे मालूम हो जाता था कि वह आदमी कितने पानी में है? लेकिन कर्ज़न ऐसा आदमी न था, कि कोई उसकी थ्याह पा सके। कर्ज़न का किया हुआ बंगाल-बटवारा लाज़िमी तौर पर एक सुधार था और एक उमदा क़दम था। लेकिन इसका परिणाम यह हुआ कि बंगाल के दो टुकड़े हुए, और धर्म के नामपर। क्रिप्स ने भी अपनी योजना में इसी सिद्धान्त को दाख़िल किया है। यह इसकी दूसरी कमी या कमज़ोरी है। इसलिए

जबतक अंग्रेज़ हिन्दुस्तान में है तबतक हिन्दुस्तान में एकता नहीं हो सकती।"

मैं—"मेरा ख़्याल है, क्रिप्स योजना में जो लड़ाई के बाद के राज-काज की रूपरेखा सुझाई गई है, वह आपको पसंद नहीं आई। लेकिन इस योजना के वह विधान जो युद्ध के समय या उसी समय पर लागू होते थे, उन विधानों में क्या आपको ज़रासा सार भी दिखाई नहीं दिया? भविष्य-योजना की त्रुटियां ध्यान में रखते हुए भी क्या आपको यह ख़याल नहीं आया कि मौजूदा विधानों में भी कुछ फ़ायदे की चीज़ें हो सकती हैं? लड़ाई में गवर्नमेंट चलाने से आपको राज-काज चलाने का अनुभव होता, और लड़ाई के बाद आपको आज़ादी मांगने का अधिकार प्राप्त हो जाता।"

गांधीजी—"जब मैंने इस योजना की तरफ़ ध्यान दिया तो कुछ इसी तरह के विचार मेरे दिमाग़ में थे। लेकिन जब मैंने क्रिप्स-योजना का मज़मून देखा, तो मुझे विश्वास हो गया कि इन शर्तोंपर सहयोग की कोई आशा नहीं। सबसे बड़ा सवाल देश रक्षा का था। लड़ाई के दिनों में देश-रक्षा गवर्नमेंट का पहला काम है। मैं नहीं चाहता कि लड़ाई के संचालन में दख़ल दूं, क्योंकि मैं इस काम के योग्य नहीं हूं। लेकिन रूज़वेल्ट ने भी तो युद्ध-कला की कोई विशेष शिक्षा प्राप्त नहीं की। और अगर प्राप्त की है तो वह भी अधूरी है। (कुछ हिचकिचा कर) या चर्चिल ही को ले लीजिए।"

मैं—"नहीं नहीं। आपको रूज़वेल्ट की मिसाल देते समय

हिचकिचाने की कोई ज़रूरत नहीं। मैं आपका मतलब समझ गया हूं।"

गांधीजी—"मेरा मतलब यह है कि लड़ाई के दिनों में भी फ़ौज ग़ैर-जंगी लोगों के मातहत होनी चाहिए, चाहे ग़ैर-जंगी लोग फ़ौजी बारीकियों को समझते हों, चाहे न समझते हों। बर्मा में स्वर्ण-मंदिर (गोल्डन पगोडा) जापानी बमबारों के लिए आसान निशाना है, इसलिए अगर अंग्रेज़ इसे नष्ट करना चाहें तो मैं कहूंगा—'तुम ऐसा हरगिज़ नहीं कर सकते क्योंकि इस स्वर्ण मंदिर का नाश करके तुम बर्मा की आत्मा के कुछ भाग का भी नाश कर दोगे।' अगर अंग्रेज़ आकर कहें—'हमें हवाई अड्डा बनाने के लिए इस जगह की ज़रूरत है, इसलिए आज ही इन किसानों को अपनी अपनी जगह छोड़नी पड़ेगी,' तो मैं कहूंगा—'यह बात तुमने कल क्यों नहीं कही, ताकि इन ग़रीबों को जाने का वक्त मिल जाता! और तुम इनको कोई दूसरी जगह क्यों नहीं दे देते, निकालते, जहां यह ग़रीब जाकर अपना सिर छुपा सकें?'"

मैंने कहा—"अगर आप चाहते हैं कि इन सब बातों पर हिन्दुस्तानियों का अधिकार हो, तो मुझे यक़ीन है कि जेनरल वेवल इसे लड़ाई के संचालन में बाधा समझेंगे।"

गांधीजी मुस्करा कर बोले—"अंग्रेज़ चाहते थे कि हम लड़ाई के दिनों में फ़ौजियों के भोजन-घर चलाने और स्टेशनरी छपवाने के काम करें, मगर इसकी कोई ख़ास महत्ता नहीं है। यह सच है, कि हम युद्ध-कला में उस्ताद नहीं हैं, मगर हम बहुत से

ऐसे काम कर सकते हैं जिनसे लड़ाई जीतना आसान हो जाए। पूर्वी एशिया में अंग्रेज़ों की जो हालत हुई है उसमें हमारी मदद काफ़ी काम कर सकती थी।"

मैंने कहा—"इन बातों से यह साफ़ ज़ाहिर है कि आपने देश-रक्षा के सवाल पर सबसे ज़्यादा ज़ोर दिया होगा।"

गांधीजी ने मेरा समर्थन किया।

मैं—"क्या नेहरू और कांग्रेस के दूसरे लीडरों की भी यही राय है?"

गांधीजी—"मेरा ख़याल है, नेहरू की भी यही राय है और मौलाना साहिब (कांग्रेस पार्टी के मुस्लिम सभापति मौलाना अबुल कलाम आज़ाद) की भी यह राय है।"

मैं—"दूसरे शब्दों में आपको क्रिप्स योजना में कोई अच्छाई दिखाई नहीं दी?"

गांधीजी—"मुझे खुशी है कि तुमने यह साफ़ और सीधा सवाल पूछा है और मेरा जवाब यह है, कि सचमुच मुझे उस में कोई अच्छाई दिखाई नहीं दी।"

मैं—"क्या आपने यह बात क्रिप्स से कही थी?"

गांधीजी—"हां। मैंने क्रिप्स से कहा था–रूसमें तुम्हारा काम एक चमत्कार था।..."

मैंने उनकी बात काटते हुए पूछा—"आपने ऐसा क्यों कहा? रूस को लड़ाई में लाने का काम सर स्टाफ़र्ड क्रिप्स ने नहीं किया। यह काम करने वाला एक दूसरा आदमी था—एडोल्फ़ हिटलर।"

गांधीजी हंसे। उनके मित्र भी हंसे। और फिर गांधीजी ने कहा—"मगर मेरा और हज़ारों हिन्दुस्तानियों का यही ख़याल था कि यह चमत्कार क्रिप्सका है।"

मैं—"और आपकी इस बात का क्रिप्स ने विरोध नहीं किया?"

गांधीजी हंसते हंसते बोले—"नहीं, उसने अपनी तारीफ़ सुनी और चुप रहा। हमारा ख़याल था, स्टालिन ने रूस पर हमला होने से पहले अंग्रेज़ों से सहायता मांगी थी।"

मैं—"नहीं, यह ठीक नहीं है। हमले के बाद रूस को मदद मिलनी शुरू हुई और अब उसे अमरीका और ब्रिटेन से बहुत मदद मिल रही है। मगर हमले से पहले स्टालिन हिटलर से इतना डरता था कि ब्रिटेन या क्रिप्स को दोस्त न बना सकता था।"

गांधीजी—"जो भी हो, मैंने क्रिप्स से कहा, यहां भी, चमत्कार दिखाओ, मगर यह बात उसकी ताक़त से बाहर थी।"

मैं—"मेरा ख़याल है, कि इंगलैंड के लोगों के ख़याल बदल रहे हैं। पिछली गर्मियों में मैं हवाई जहाज़ से वहां गया था और वहां नौ सप्ताह रहा था। वहां के लोगों का एक बड़ा हिस्सा यह निश्चय कर चुका है कि लड़ाई के पहले की सरकार के आदमी जो इस लड़ाई का कारण हैं, लड़ाई के बाद गवर्नमेंट में न रहेंगे। शायद ऐसे लोगों के विरोध को आवाज़ देने के लिए

क्रिप्स इस जमात का नेता बन जाए। इस लिए ऐसे आदमी का मंत्री-मंडल में आ जाना एक उम्मीद भरी बात है।"

गांधीजी—"उम्मीद भरी भी और ना-उम्मीद भरी भी, क्योंकि मुझे शक है कि क्रिप्स में एक बड़ा नेता बनने के गुण हैं या नहीं हैं। हम यह देखकर निराश हुए हैं, कि इस योजना को हमारे पास लाने वाला वह आदमी है, जो जवाहरलाल का दोस्त, और हिन्दुस्तानका खैरख्वाह है।"

एकाएक गांधीजी को कुछ ख़याल आया—शायद यह कि मेरी और उनकी मुलाक़ात का समय ख़त्म हो रहा है—क्योंकि उन्होंने ऐसी बात कही जिसका हमारी बातचीत से दूर का भी सम्बंध न था। बोले—"लार्ड सेन्की ने एक बार मुझसे कहा था, कि अपनी तंदरुस्ती का ख़याल रखना। मैंने जवाब दिया—अगर मैं अपनी तंदरुस्ती का ख़याल न रखता तो क्या मैं कभी इतनी उम्र तक पहुंच सकता? यह मेरा एक दोष है।"

मैंने मुस्कराकर कहा—"मेरा ख़याल था, आप में कोई दोष नहीं।"

गांधीजी हंसे—"मुझ में इतने दोष हैं, कि तुम जाने से पहले पहले मेरे सैंकड़ों दोष देख लोगे। और अगर तुम न देख सके, तो मैं तुम्हें ख़ुद अपने दोष दिखा दूंगा।"

उन्होंने कमरपर ज़ंजीर के साथ बंधी हुई निकल की घड़ी की तरफ़ देखा और बोले—"लो, मैं तुम्हें एक घंटे का समय दे चुका।"

मैंने उठकर उन्हें प्रणाम किया और बाहर निकल आया। इस बात-चीत के दौरान में एक बेदांतकी बूढ़ी मुसलमान औरत गांधीजी की छाती पर रक्खे हुए एक गीले कपड़े को बदलने के लिए अन्दर आई थी। गांधीजी ने ख़ुद भी कई बार अपने सिर-पर रक्खा हुआ रूमाल लेकर उसे पानी के बर्तन में डुबोया, निचोड़ा और तह करके सिर पर रख लिया। जब वह कपड़ा हटाते थे तो मुझे उनका चेहरा अच्छी तरह दिखाई देता था। उनके पतले ऊपरी होंट के ऊपर काले और सफ़ेद या यों कहिए कि थोड़े काले और ज़्यादा सफ़ेद बाल हैं। ऊपर का होंट इतना पतला है कि नाक का मोटा और नीचे की तरफ़ मुड़ा हुआ हिस्सा होंट को लगभग छू रहा है। उनका निचला होंट बहुत संवेदनाशील और अर्थमय है। उनकी आंखें कोमल हैं, सिर बड़ा और उभरा हुआ, नीचे का भाग छोटा है और बड़े बड़े कान चेहरे से अलग निकले हुए मालूम होते हैं।

मैं मेहमान-घर में आया। कुछ मिनट बाद समाजवादी नेता नरेंद्रदेव एक और आश्रमवासी के साथ हिन्दुस्तान, रूस और युद्ध के बारे में बातचीत करने आगए। यह दोनों ब्रिटेन के बहुत ख़िलाफ़ थे। देव ने कहा—"इसके लिए हमें अफ़सोस है। मगर हिन्दुस्तान ने इंगलैंड से बहुत दुःख पाए हैं और हमारे विचार हमारे देश के दुःखों की उपज हैं।"

मैं चाहता था कि गांधीजी ने मुझ से जो कुछ कहा है उसकी पूरी पूरी नक़ल अपने पास रखूं। इस लिए जब देव और

उनके यार-दोस्त चले गए, तो मैंने नीली धारी के सूट का कोट उतार दिया और टाइप करने बैठ गया। मगर पांच ही मिनट में थक गया और पसीने से तर हो गया। इस लिए मैं पानी के कमरे में जाकर एक बार फिर नहाया, और छज्जे पर बैठकर टाइप करने लगा। उस वक्त मैंने एक हिन्दुस्तानी औरत को देखा। वह बार बार मेरे मकान के सामने से गुज़रती थी। उसके पैर नंगे थे। उसके कंधों और सीने के इर्दगिर्द एक मोटे कपड़े की कसी हुई हरी अंगिया थी। उसकी कमर का कुछ हिस्सा नंगा था। कमर से नीचे पैरों तक उसने एक धोती पहन रक्खी थी, जिसका पल्लू उसकी बग़ल से होता हुआ गर्दन और सिर को ढक रहा था। साड़ी पक्के पीले रंग की थी, और उसका किनारा लाल था। इसलिए जब भी वह सामने से गुज़रती थी तो मेरी टाइपराइटर पर जमी हुई आंखों को ऐसा मालूम होता था जैसे आग का शोला सामने से गुज़रा है। वह सिर पर पानी का एक घड़ा उठाए ले जाती थी। उसके हाथों में एक चमकदार धातु के कंगन के सिवाए और कुछ न था। जब वह सामने के घर में पानी पहुंचाकर वापस लौटती, तो घड़ा उसके सिर पर चिथड़ों के एक गोले में टिका हुआ होता। घंटों तक वह कड़कती धूपमें यह काम करती रही। मैंने सोचा, सिर्फ़ एक छोटासा नल लगा देने से इसे इस मुश्किल काम से छुट्टी मिल सकती है।

टाइप करते करते जब मैं गरमी से घबरा गया, तो ख़ुरशेद बहन से इधर उधर की बातें करने लगा। शाम को खाने का समय पांच बजे था, जिसके लिए एक हल्का सा घंटा बजता था।

भोजन हमेशा की तरह प्रार्थना के साथ शुरू हुआ। एक आश्रम वासी ने जो गांधीजी के साथ बैठा हिन्दुस्तानी में बातचीत कर रहा था, एक अंग्रेज़ी शब्द इस्तेमाल किया। मैंने कहा—"मुझे एक बात याद आई है। हिन्दुस्तान पहुंचने के अगले दिन मैं नई दिल्ली में कांग्रेस के एक जलसे में गया। मुख्य वक्ता थीं श्रीमती आसफ़ अली, कांग्रेस कार्य समिति के एक मुसलमान मेम्बर डॉक्टर आसफ़ अली की हिन्दू धर्मपत्नी। वह भी हिन्दुस्तानी बोल रही थीं। उन्होंनें कुछ अंग्रेज़ी शब्दों का इस्तेमाल किया जिन्हें मैंने लिख लिया। वह शब्द यह थे:—'फ़ारेन पालिसी' (बिदेसी नीति), 'एक्स्प्लोयटेशन' (शोषण), 'सोशल पोज़ीशन' (सामाजिक दरजा), 'ऐफ़िशिएंसी' (योग्यता), 'ब्रिटिश इंपीरियलिज़्म' (ब्रिटिश साम्राज्यवाद), 'नान-कोआपरेशन (असहयोग), 'इंडिया आफ़िस' (लंदन में हिन्दुस्तान के मंत्री का दफ़्तर), और 'रेफ़्यूजीज़' (शरणागत)। गांधीजी हंसते रहे। पास से एक आदमी ने कहा—"एक और शब्द भी है जिसका हम लोग काफ़ी इस्तेमाल करते हैं। वह है 'स्टूडेन्ट स्पाइज़' (विद्यार्थी जासूस)। सरकार कुछ विद्यार्थियों से बाक़ी विद्यार्थियों पर जासूसी करने का काम लेती है।" गांधीजी ने कहा—"अंग्रेज़ी राज पर मेरा एक इलज़ाम यह भी है।"

गांधीजी ने मुझे पूछा—"रूस में क्या क्या अत्याचार हो रहे हैं?" मैं जो कुछ जानता था, मैंने कह सुनाया। इसपर गांधीजी बोल उठे—"तब तो दुनियां में सिर्फ़ दो देश ही प्रजातंत्र-वादी रह गए हैं—एक इंगलैंड, दूसरा अमरीका।"

मैंने हां में हां मिलाई और कहा—"लड़ाई होते हुए भी इंगलैंड इतना प्रजातंत्र है, यह देखकर आश्चर्य होता है। एक और देश स्वीडन भी प्रजातंत्रवादी है।"

"सच?" गांधीजी ने पूछा। ऐसा मालूम होता था, जैसे उन्हें मेरी बात पर विश्वास न हुआ हो।

मैंने कहा—"और स्विट्ज़रलैंड और ब्रिटिश उपनिवेश भी प्रजातंत्रवादी हैं।"

गांधीजी—"सिर्फ़ गोरे लोगों के लिए। क्योंकि मैं दक्षिण अफ्रीका में रह चुका हूं।" गांधीजी खाना खाने लगे।

थोड़ी देर बाद मैं फिर नहाने के लिए अपनी कुटिया में गया। कपड़े और चप्पल उतार कर एक पानी से भरे बर्तन को सिर पर उंडेल लेना, बस इसी का नाम यहां नहाना है। जो भी हो, इससे इतना ज़रूर हुआ कि मैं ताज़ा-दम हो गया, और सवा छः बजे फिर गांधीजी की कुटिया में पहुंच गया। अभी मैंने एक ही मिनट इंतज़ार किया होगा कि गांधीजी बाहर निकल आए। उनके हाथ में बांस की एक लम्बी लकड़ी थी। उनके डाक्टर दास और कई और नाजवान लड़के ओर लड़कियां भी हमारे साथ चले। गांधीजी के हाथ दो औरतों के कंधों पर थे। गांधीजी की कुटिया से कुछ दूर उनके दर्शनों के लिए बाहर से आए हुए कुछ नौजवानों की एक टोली बैठी थी। उनके चेहरों पर विनय, श्रद्धा और भक्ति के भाव थे। उन्होंने हाथ जोड़कर अपना सिर झुकाया, गोया प्रणाम किया। गांधीजी ने उनसे कुछ कहा। इस-

पर पहले वह लोग हंसे, फिर गांधीजी भी हंस पड़े । कुछ बड़ी उम्र के लोगों की एक दूसरी टोली भी थी, जिसमें एक बड़ी तोंद का आदमी था । यह लोग बड़ी उत्कंठा से इंतज़ार कर रहे थे कि शायद गांधीजी उनसे कुछ बातें करें भी । मगर उनकी यह उत्कंठा पूरी नहीं हुई । हम खेतों के आसपास जाती हुई धूल-सड़क पर हो लिए । "अब ?" कहकर गांधीजी ने मुझे बात-चीत शुरू करने का इशारा किया ।

मैंने पूछा—"पहली लड़ाई में आपने ब्रिटिश-सेना के लिए भरती कराने में मदद दी थी । और जब यह दूसरी लड़ाई शुरू हुई, तो आपने कहा था कि ब्रिटिश सरकार को तंग करने की आपकी ज़रा भी इच्छा नहीं । लेकिन अब आपका रुख़ बदला हुआ मालूम होता है । इसकी वजह क्या है ?"

उन्होंने जवाब दिया—"पिछली लड़ाई के समय मैं दक्षिण अफ्रीक़ा से नया नया लौटा था । अभी मेरे पांव जमे न थे । न मुझे यह मालूम था कि लोगोंपर मेरा कितना असर है । इसका मतलब यह नहीं कि मुझे अहिन्सा पर विश्वास नहीं था । मगर इसका विकास कई बातों पर निर्भर था । और मैं कितने पानी में हूं इसका पता भी मुझे न था । इन दो लड़ाइयों में मुझे बहुतसे अनुभव हुए हैं । फिर भी सितम्बर १९३९ में वायसराय से बातचीत करने के बाद मैंने यही कहा था, कि कांग्रेस लड़ाई में रुकावट नहीं डालेगी । मगर मैं कांग्रेस नहीं हूं । बल्कि सच तो यह है कि मैं कांग्रेस में भी नहीं हूं । न मैं

पार्टी का मेम्बर हूं, न कर्मचारी हूं। कांग्रेस मेरी निस्बत लड़ाई और ब्रिटेन के ज़्यादा ख़िलाफ़ है। और मुझे इसे कम करना पड़ता है। अब मैं इस फ़ैसले पर पहुंचा हूं, कि मैं अंग्रेज़ों को नीचा नहीं दिखाना चाहता, मगर अंग्रेज़ों को यहां से जाना ही चाहिए। पर इसका यह मतलब नहीं कि अंग्रेज़ जापानियों से भी ख़राब हैं।"

मैं—"बात तो बिल्कुल उल्टी है।"

गांधीजी—"बात बिल्कुल उल्टी है, मैं यह नहीं कहता। लेकिन अपना मालिक बदलने की भी हमारी इच्छा नहीं। इंगलैंड अगर इस देश से अपने आप सुव्यवस्थित तरीक़े से निकल जाए, तो उसे नैतिक दृष्टि से लाभ होगा।"

इसके बाद गांधीजी ने 'बंगालपर अत्याचार' के विषय पर बातें कीं। गरमी काफ़ी थी, और हम जल्दी जल्दी चल रहे थे, फिर भी वह बिना रुके बोलते जा रहे थे। उन्होंने कहा—"आज ही मुझे कुछ चिट्ठियां आई हैं, जिनमें लिखा है कि हवाई जहाज़ों का अड्डा बनाने के लिए एक जगह किसानों को गांव से बाहर निकाल दिया गया है। न उन्हें पहले ख़बर दी गई है, न हरजाना दिया गया है। यह बात लड़ाई के उद्योग का एक हिस्सा मालूम होती है। मगर ध्यान से देखा जाए तो ऐसी बातें युद्ध-प्रयत्न में बहुत बड़ी रुकावटें हैं। मुझे इस में ज़रा संदेह नहीं कि जब तक बर्तानिया हिन्दुस्तान से चला नहीं जाता, तब तक वह लड़ाई में नहीं जीत सकता।"

जब हम गांधीजी की कुटिया के पास वापस आए, उस समय अंधेरा हो चुका था। वह आंगन में एक लकड़ी की चारपाई पर लेट गए और मुझे दूसरी चारपाई पर बैठा लिया। मुसलमान औरत ने उन्हें छातीपर ओढ़ने के लिए एक सफ़ेद कपड़ा दिया और इसके बाद उनके पांव पोंछने लगी।

मैंने कहा—"इसमें शक नहीं, कि इंगलैंड ने हिन्दुस्तान में भूलें की हैं। बल्कि कभी कभी अत्याचार भी किए हैं। लेकिन जो बाहर की ताक़त देश को जीतकर अब आएगी, वह इससे भी बुरी होगी।" इसके जवाब में उन्होंने दर्द भरे लहजे में १९१८ के जल्यांवाला बाग़ और इसी तरह के दूसरे हिंसक कार्यों का पूरे तौर पर वर्णन किया, और इस बात पर ख़ास ज़ोर दिया कि कुछ हिन्दुस्तानी अंग्रेज़ों के इतने विरुद्ध हैं कि अगर जापान जीत जाए, तो भी उन्हें दुख न होगा।

वह चारपाई से उठने लगे। मैंने कहा—"आप लेटे रहिए, मेरे जाने का समय हो गया है।" मगर वह बोले—"नहीं। प्रार्थना में चलो।"

अब रात का अंधेरा हो गया था। मैं गांधीजी के पीछे पीछे उनकी कुटिया से पचास गज़ दूर एक खुली जगह पर आया। वहां सत्तर के क़रीब आश्रमवासी, जिनमें से ज़्यादा सफ़ेद कपड़े पहने थे, एक चबूतरे के तीन तरफ़ ज़मीन पर बैठे थे। चबूतरे के एक तरफ़ औरतें थीं, दो तरफ़ मर्द थे। गांधीजी ने कहा—"फ़िशर तुम यहां मेरे पास बैठ जाओ।" चबूतरे के चौथी तरफ़

बीचोबीच आश्रमवासियों की तरफ़ मुंह करके वह बैठ गए और उनके पास ही मैं बैठ गया। वही मुसलमान औरत उन्हें घास के पंखे से हवा करने लगी। इस समय कुछ लोगों के पास मिट्टी के तेल की बत्तियां थीं, जिनके एक तरफ़ काग़ज़ लगा था, ताकि सामने बैठे हुए लोगों की आंखों पर रोशनी न पड़े। ऐसी ही एक बत्ती गांधीजी के पास भी थी। सबसे पहले गांधीजी ने एक मंत्र पढ़ना शुरू किया, और प्रार्थना शुरू हो गई। दूसरे लोग भी मंत्र पढ़ने लगे। गांधीजी की आवाज़ सबसे ऊंची थी, और साफ़ साफ़ सुनाई देती थी। इसके बाद एक आदमी ने गाना शुरू किया और दूसरा आदमी करताल बजाने लगा। मुझे ऐसा मालूम हुआ, जैसे चीनी, अरबी और बनावटी पंचम स्वर इन सब आवाज़ों का एक मिश्रण मेरे कानों में पड़ रहा है। इसके बाद गांधीजी ने हिन्दू धर्म की एक बड़ी सी किताब का कुछ हिस्सा पढ़ कर सुनाया। शांति-पाठ के साथ प्रार्थना ख़त्म हुई।

★

५ जून १९४२

मैं रात भर चांद और तारों तले सोया, और सुबह चार बजे जागा। मैं लकड़ी के चार पैरों वाली और रस्सी से बुनी हुई खाट पर सोया था। रातको हवा ठंडी थी। सवा छः बजे

डॉ. दास ने आकर कहा—"गांधीजी थके हुए हैं, इसलिए आज सैर करने नही जाएंगे।" इतने में खुरशेद बहन मेरे नाश्ते के लिए चाय, बिस्कुट, मक्खन, शहद और आम ले आईं। मैं जल्दी जल्दी खाने लगा क्योंकि मक्खियां और चीटियां भी मेरे नाश्ते में शामिल होना चाहती थीं। नाश्ते के बाद मैं पहले दिन के नोट टाइप करने बैठा ही था, कि देव और आर्यनायकम् रूसके बारेमें बातचीत करने के लिए आ गए। आर्यनायकम् एक लम्बे क़द के लंकानिवासी हैं, और कांग्रेसके मशहूर शिक्षा-प्रचारक हैं। मैंने कहा—"मेरी रायमें आज़ाद होना ही काफ़ी नहीं, हिन्दुस्तानका असली सिर दर्द तो आज़ादी के बाद शुरू होगा।" खुरशेद बहनने फिर कलकी बात दुहराई—"मैं तो हिन्दुस्तान को आज़ाद देखना चाहती हूं, इसके बाद चाहे वह फ़ासिस्ट हो जाए। अगर सुभाषचंद्र बोस, जो १९३८ में कांग्रेस के सभापति थे, और जो लड़ाई शुरू होते ही भारत से भाग कर जर्मनी चले गए थे, और अब ब्रिटिश हुकूमत के ख़िलाफ़ रेडियो पर बोलते हैं, हिन्दुस्तानी सेना लेकर हिन्दुस्तान में आ जाएं तो सारा देश उनके साथ हो जाएगा।" खुरशेद बहन ने यह भी कहा, कि जापानने मलाया, सिंगापुर, और बर्मामें पकड़े हुए हिन्दुस्तानी सिपाहियों और अफ़सरों को आज़ाद कर दिया है और उनकी हिन्दुस्तानी पल्टनें बना रहा है। दुश्मनों का रेडियो रोज़ कहता है, यह पल्टनें हिन्दुस्तानमें आकर अंग्रेज़ों को भगा देंगी। बोस नेहरू से ज़्यादा लोकप्रिय हैं, और बाज़ हालतों में उनका असर गांधीजी से भी ज़्यादा है।

नरेन्द्रदेवने कहा—"कुछ बरसों से नेहरू और दूसरे उन्नत विचार वाले लोगोंके दबाव से, कांग्रेस आर्थिक और सामाजिक सवालों की तरफ़ ज़्यादा ध्यान दे रही है। और उन्होंने समाजसुधार के लिए एक कार्यक्रम भी बनाया है। मैं इसकी एक कापी ढूंढ़कर आपको दूंगा।"

भोजन का समय ठीक ११ बजे था, मगर मैं ज़रा देर से पहुंचा। गांधीजी पूरे ११ बजे पहुंच चुके थे। मेरे दाख़िल होते ही मित्र भावसे बोले—"आओ!" मैंने पूछा—"आपकी तबीयत का क्या हाल है?" बोले—"ठीक है। लेकिन मुझे सुबह इतनी थकावट थी कि मैं सैर करने न जा सका। मगर तुम्हें चाहिए था कि या अकेले सैर कर आते, या किसी को साथ ले जाते। कसरत ज़रूरी चीज़ है।"

मैंने जवाब दिया—"मैं तो इतनी गरमी म सिर्फ़ इसलिए सैर कर लेता हूं, कि आपसे बातचीत का मौक़ा मिल जाता है।"

गांधीजीने हंस कर अपने बर्तनमें से एक उबला हुआ प्याज निकाला, और मेरी तरफ़ बढ़ाया। मगर मैंने कच्चा प्याज़ लिया। इससे मेरे मुंहका ज़ायक़ा भी बदला, और भोजन का फीकापन भी कुछ कम हुआ। ख़ुरशेद बहन मुझे एक छोटा चमचा देने लगीं। यह देखकर गांधीजी ने एक बड़ा चमचा मेरी तरफ़ बढ़ा दिया और मज़ाक से कहा—"तुम बड़े हो, तुम्हें चमचा भी बड़ा ही चाहिए।"

खाना ख़त्म करने के बाद जब मैं आम खाने लगा तो उन्होंने

मुझे खद्दर का एक अंगोछा दे दिया। मैंने कहा—"जब मैं रोम में होता हूं तो वही करता हूं जो रोमन करते हैं। मैं अपवाद नहीं होना चाहता।"

गांधीजी ने कहा—"मगर तुम अपवाद तो हो। और फिर यह अंगोछा तो मेरे पास भी है।"

इस के बाद मैं दोपहर के तीन बजे गांधीजी की कुटिया में पहुंचा। उस समय वहां देसाई जी और एक दूसरे मंत्री गांधीजी को आए हुए पत्रों का जवाब दे रहे थे। और ख़ुरशेद बहन पंखे की रस्सी खींच रही थीं। अब मुझे कमरे म सजावट की एक दूसरी चीज़ भी नज़र आई। यह लिपी हुई दीवार पर एक धार्मिक जलूस की तस्वीर थी, जिसके रंग ज़्यादा शोख़ न थे। और गांधी जी के बैठने की जगह पीछे की दीवार पर एक ताड़—वृक्ष और एक ताड़—पत्र की तस्वीर बनी थी, जिसमें 'उ' की शक्ल का कोई अक्षर था। देसाई जी से मालूम हुआ कि यह 'ओ३म्' है और इसका अर्थ यूनान के 'लोगोस' से मिलता जुलता है।

गांधी जी आए, मुझे प्रणाम किया और अपने बिस्तर पर लेट गए। इसके बाद बोले—"आज मैं लेटे लेटे तुम्हारे मुक्के खाऊंगा।" इतने में मुसलमान औरत ने उन्हें पेट पर रखने को मिट्टी की एक गीली टिकिया दे दी। गांधी जी बोले—"यह मिट्टी मुझे अपने अंत की याद दिला देती है।"

मैंने जवाब न दिया। वह थोड़ी देर बाद बोले—"मालूम होता है, तुमनें यह बात नहीं समझी।"

मैंने कहा—"मैंने समझ ली है। मगर मेरे ख़याल में अभी आप इतने बूढ़े नहीं हुए, कि मिट्टी में वापस जाने की बातें करने लगें।"

गांधी जी—"क्यों नहीं। तुम्हें और मुझे और हम सब को एक न एक दिन मिट्टी की तरफ़ चलना ही पड़ेगा। हां यह हो सकता है, कि किसी किसी को एक सौ बीस साल की मुहलत मिल जाए।"

कुछ देर के बाद उन्होंने 'अब' कहा, गोया मुझे इशारा किया कि सवाल करो, मैं तैयार हूं।

मैं—"जब मैं भविष्य के प्रबंध की कोई बात सुनता हूं, तो यह सोचा करता हूं कि अगर इसपर पूरा पूरा अमल किया जाए तो क्या होगा? मेरा ख़याल है जब आपने भी अंग्रेज़ों को यहां से चले जाने को कहा है तो इसी तरह सोच विचार कर कहा होगा। तो इस बारे में आपके दिमाग़ में क्या नक़्शा है?"

गांधीजी—"सबसे पहले तो राजाओं का सवाल है, जिनके पास अपनी फ़ौजें भी हैं। शायद वे कुछ गड़बड़ करें। मुझे पूरा भरोसा नहीं है, कि अंग्रेज़ों के चले जाने पर यहां पूरी पूरी शांति रहेगी। हो सकता है कि अंग्रेज़ों के जाते ही यहां खलबली मच जाए। मैं चाहता हू अंग्रेज़ यहां से शांति के साथ जाएं और हिन्दुस्तान को परमात्मा के हवाले कर दें। शायद तुम्हें यह फ़रज़ी ज़बान पसंद न आए। ऐसी हालत में तुम यह कह सकते हो, कि यहां निराज शुरू हो जाएगा। यह सबसे

बुरी बात होगी। मगर हम इसे रोकने की कोशिश करेंगे। सम्भव है, यहां निराज का दौर दौरा न हो।"

मैं—"क्या हिन्दुस्तानी तुरन्त अपनी सरकार नहीं बना सकते?"

गांधीजी—(जल्दी से) "क्यों नहीं बना सकते? हमारे राज-कीय मैदान में तीन ताक़तें हैं : रजवाड़े, मुसलमान और कांग्रेस। यह अगर चाहें तो मिल-जुलकर आरज़ी (चंदरोज़ा) सरकार बना सकते हैं।"

मैं—"इस आरज़ी सरकार में ताक़त और ओहदों का बंटवारा कैसे होगा?"

गांधीजी—"यह कहना मुश्किल है। शायद कांग्रेस बड़ी जमात होने के कारण बड़े हिस्से की मांग करे। मगर इसका फ़ैसला सुलह-सफ़ाई और सलाह-मशविरे से हो सकता है।"

मैं—"मेरा ख़याल है, अंग्रेज़ हिन्दुस्तान को बिल्कुल ख़ाली करके कभी नहीं जाएंगे। इसका मतलब तो यह होगा कि वह हिन्दुस्तान को जापान की नज़र-भेंट कर दें। और यह ऐसी बात है, जिसे न अंग्रेज़ मानेंगे, न अमरीकन पसंद करेंगे। इसलिए अगर आप यह चाहते हैं कि अंग्रेज़ अपना बिस्तरा गोल करके यहां से चलते फिरते नज़र आएं, तो आप ऐसी बात चाहते हैं, जो अनहोनी है। कहिए आपका यह मतलब तो नहीं कि वह अपनी फ़ौजें भी यहां से ले जाएं?"

गांधीजी दो मिनट तक चुप रहे। कमरे में सन्नाटा छा गया। फिर बोले—"तुम ठीक कहते हो। मेरा यह मतलब नहीं। इंगलैंड, अमरीका और दूसरे देश अपनी फ़ौजें यहां रख सकते हैं और लड़ाई लड़ने के लिए हिन्दुस्तानको अड्डा बना सकते हैं। मैं नहीं चाहता कि जापान जीत जाए। न मैं यह चाहता हूं कि धुरी-राष्ट्र जीतें। मगर मुझे पूरा विश्वास है कि हिन्दुस्तानियोंके आज़ाद हुए बिना ब्रिटेन कभी नहीं जीत सकता। ब्रिटेन जब तक हिन्दुस्तानपर राज करेगा तबतक कमज़ोर रहेगा और नैतिक दृष्टिसे अपना बचाव नहीं कर सकेगा। और मैं नहीं चाहता, इंगलैंड ज़लील हो।"

मैं—"लेकिन अगर हिन्दुस्तान मित्र राष्ट्रों का अड्डा बनेगा, तो बहुत से और सवाल भी पैदा होंगे। फ़ौजें हवामें नहीं रहतीं। मिसाल के तौर पर मित्र राष्ट्रों को यहां रेल-रास्तों पर अच्छे इंतज़ाम की ज़रूरत होगी।"

गांधीजी—"हां, रेलोंका इन्तज़ाम उनके हाथ में दिया जा सकता है। उनके लिए बन्दरगाहोंका भी अच्छा इंतज़ाम चाहिए, क्योंकि वहां उनके लिए जंगका सामान आएगा। बम्बई और कलकत्तेमें फ़साद होंगे तो उन्हें नुक़सान पहुंचेगा। मगर यह सब बातें आपसी सहयोग और मिली-जुली कोशिशों से हो सकती हैं।"

मैंने पूछा—"क्या सहयोग की यह शर्तें समझौते की संधिमें लिखी जाएंगी?"

उन्होंने जवाब दिया—" हां ! हम इंगलैंड के साथ तहरीरी समझौता कर सकते हैं । "

मैं—" या ब्रिटेन, अमरीका और दूसरे देशोंके साथ । " गांधीजी ने सिर हिलाकर हां कह दिया ।

मैं—" यह बात आपने पहले क्यों नहीं कही ? मैं साफ़ साफ़ कहता हूं कि जब मैंने आपके सत्याग्रह आंदोलन की बात सुनी तब मैं इसके विरुद्ध था । मेरा ख़याल था कि इससे लड़ाई के कामोंमें रुकावट पड़ेगी । मेरे विचारमें हमें यह लड़ाई लड़नी चाहिए और जीतनी चाहिए । क्योंकि अगर धुरी राष्ट्र जीत गए तो दुनियाके लिए अंधेरा ही अंधेरा है । दुनियाके लिए भलाई और बेहतरीका जभी मौक़ा है, जब जीत हमारी हो । "

गांधीजी—" यहां मैं तुम से पूरा सहमत नहीं । ब्रिटेन अपने आपको प्रायः पाखंडी वस्त्रों से ढके रहता है । वह वचन देता है और बाद में मुकर जाता है । मगर फिर भी मैं यह बात मानता हूं कि प्रजातंत्र देशों की जीत में हमारे लिए बेहतर मौक़ा है । "

मैं—" यह इस बातपर निर्भर है, कि हम सुलह के मौक़ेपर क्या करते हैं ? "

गांधीजी—(मेरी भूल सुधारते हुए) " नहीं, यह इस बातपर निर्भर है, कि तुम लड़ाई के मौक़े पर क्या करते हो ? "

मैं—" मैं आपको यह बताना चाहता हूं कि हिन्दुस्तानकी आज़ादी के सवालके साथ अमरीकन नेताओं की सहानुभूति है ।

अमरीकन सरकार ने कोशिश की थी, कि किसी तरह चर्चिल अपनी वह स्पीच न दे, जिसमें उसने कहा था कि 'एटलांटिक चार्टर' हिन्दुस्तान पर लागू नहीं होता। वाशिंगटन के बड़े बड़े लोग एक 'पेसिफ़िक चार्टर' बनाने की कोशिश कर रहे हैं। मगर वह इस कोशिश में अभी ज़्यादा सफल नहीं हुए। क्योंकि ऐसे चार्टर का पहला सिद्धांत होगा साम्राज्यवाद का अंत और यह एलान उस समय तक नहीं हो सकता, जब तक हिन्दुस्तान ब्रिटेन के आधीन है।"

गांधीजी—"मुझे वादों में कोई दिलचस्पी नहीं। न मुझे लड़ाई के बाद की आज़ादी में कोई दिलचस्पी है। मैं अभी इसी समय आज़ादी मांगता हूं। इससे इंगलैंड को लड़ाई जीतने में मदद मिलेगी।"

मैं—"आपने अपनी यह योजना वायसराय को क्यों नहीं बताई? उन्हें मालूम हो जाना चाहिए कि आपको इसमें आपत्ति नहीं कि हिन्दुस्तान मित्र-राष्ट्रों के लिए लड़ाई का अड्डा बन जाए।"

गांधीजी—"मुझे किसी ने पूछा ही नहीं। मैं ने अपने भावी सत्याग्रह के बारे में जो कुछ लिखा है वह लोगों को तैयार करने के लिए है। अगर तुम इसके बारे में कुछ सीधे सवाल करना चाहो, तो लिख लाओ, मैं उनका जवाब 'हरिजन' में दे दूंगा। सिर्फ़ इतना ख़याल रहे कि सवाल छोटे हों।"

मैं—"अगर आपने मेरी रचनाएं देखी हैं, तो आपको मालूम होगा कि मैं हमेशा कोशिश करता हूं कि मेरी चीज़ें संक्षिप्त सीधी और बिल्कुल निचुड़ी हुई हों।"

गांधीजी—"तुम्हारे आने से पहले जवाहरलाल ने मुझे तुम्हारे बारे में बताया था। तुम ईनामदार हो और स्वार्थी नहीं हो। तुम एक बार में अनेक घोड़े नहीं दौड़ाते और तुम एक ठोस आदमी हो। और तुम्हें मिलकर मैं इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि जवाहरलाल ने ठीक कहा था। तुम सचमुच ठोस हो।"

यह कह कर गांधीजी हंस पड़े।

मैं—"हां, कम से कम मेरा शरीर तो ठोस है।"

गांधीजी—"मैंने तुमसे खुलकर बातचीत की है और मेरा ख़याल है तुम 'साहिब लोक' हो।"

वे हंसे। मैंने पूछा—"क्या फ़रमाया आपने? साहिब ब्लोक? क्या यह अंग्रेज़ी शब्द Bloke (बेवकूफ़) है?" सबके सब हंसने लगे।

गांधीजी बोले—"नहीं।"

एक मंत्री ने इसका अनुवाद किया—"दो सज्जन।"

महादेव देसाई मिट्टीकी छोटी सी टिकिया सिर पर रक्खे थे, जो एक रूसी टोपी सी मालूम होती थी। उन्होंने कहा—"इसका मतलब 'बहुत बढ़िया' है।"

हंसी कुछ कम हुई तो गांधीजी बोले—"जब (मदर इंडिया की लेखिका) मिस केथरीन मेयो यहां आई, तो मैंने उसके साथ अच्छा सुलूक किया। मगर वापस जाकर उसने गंदगी उछाली। तुम्हें मालूम है, मैंने उसके लिए क्या नाम तजवीज़ किया था?"

मैं—"नहीं।"

गांधीजी—" Drain Inspector (नालिमयोंका दारोग़ा)

मैं—" मैं ग़रीब घर में पैदा हुआ हूं। मैं जनता हूं भूखा रहने से क्या होता है। मेरी सहानुभूति सदा ग़रीबों के साथ रही है। अनेक दूसरे अमरीकनों की भी हिंदुस्तान के साथ सहानुभूति है। इसलिए आपने पिछले दिनों जो अमरीका के विरुद्ध कुछ कड़वे शब्द कहे थे, उन्हें मैं खेदजनक समझता हूं।"

गांधीजी ने कहा—" मगर यह ज़रूरी था। मैं उन्हें झंझोड़ना चाहता था। मेरा ख़याल है कि अनेक अमरीकनों के दिलमें मेरे लिए अच्छी जगह है। मैं उन्हें जताना चाहता था कि अगर वह इसी तरह Mammon (धनासुर) की पूजा में लगे रहे, तो वह आज से अच्छी दुनिया न बना सकेंगे। ख़तरा तो यह है कि प्रजातंत्र देश जापान और जर्मनी को हरा देंगे और खुद जापान और जर्मनीसे भी ख़राब बन जाएंगे।"

मैं—" हां, यह ख़तरा है। कई लोग कहते थे कि इंगलैंड लड़ाई में उतरते ही फ़ासिस्ट हो जायगा। मगर हुआ यह कि इंगलैंड में आज लड़ाई के पहले की निस्बत ज़्यादा लोक शासन है।"

गांधीजी—" हिन्दुस्तान में तो यह बात सच नहीं।"

मैं—" कम से कम इंग्लैण्ड में तो है।"

गांधीजी—" जब साम्राज्य में यह बात सच नहीं, तो इंग्लैण्ड में भी सच नहीं हो सकती। मैं तुम्हारी भावी नेकियों पर निर्भर नहीं रह सकता। हिन्दुस्तान की आज़ादी के लिए मैं अनेक बरसों से काम कर रहा हूं। अब मैं ज़्यादा इंतज़ार नहीं कर सकता।

लेकिन मेरा ख़याल है लोगों के पास हमारे लिए सहानुभूति है।"
वह कुछ देर रुके। ऐसा मालूम होता था, जैसे वह बेचैन से हों।
वह सोचते सोचते बोले—"इंगलैंड हिन्दुस्तान में एक सुरंग पर
खड़ा है और वह सुरंग किसी भी वक्त फट सकती है। इस देश में
ब्रिटेन के विरुद्ध गुस्सा और नफ़रत इतनी ज़्यादा है कि ब्रिटेन को
यहां लड़ाई के लिए बिल्कुल मदद नहीं मिल सकती। जो हिन्दुस्तानी
सेना में भरती हो रहे हैं, वह सिर्फ़ रोटी के लिये हो रहे हैं। उनके
दिलों में अंग्रज़ों की मदद करने की ज़रा भी भावना नहीं है।"

मैंने कहा—"हिन्दुस्तानी समस्या हल करने के बारे में आपने
जो कुछ आज कहा है उसका सार यह है कि आपने क्रिप्स योजना
को उलट दिया है। क्रिप्स ने 'कुछ' आपको पेश किया था,
'बाक़ी' इंग्लैंड के लिए रख लिया था। आप 'कुछ' इंग्लैंड
को पेश कर रहे हैं, 'बाक़ी' हिन्दुस्तान के लिए रख रहे हैं।"

गांधीजी—"बिल्कुल ठीक। मैंने क्रिप्स को उलट दिया है।"

मुझे उनकी घड़ी से मालूम हुआ कि मेरा वक्त ख़त्म होने
को है। इसपर मैंने कहा—"मेरी यह हिम्मत नहीं कि आपको
अपनी किताब 'मेन एंड पालिटिक्स' (Men and Politics)
जो देवके पास है, पढ़ने को कहूं। मगर मुझे इतनो आशा ज़रूर है
कि आप उसे 'पेज थ्रू' (Page through) करेंगे।"

एक मंत्री साहब पूछ बैठे—"यह 'पेजिन्ग थ्रू' क्या है?"

गांधीजीने जवाब दिया—"इसका मतलब है, पहले आख़िरी
पृष्ठ देखो, फिर पहला पृष्ठ देखो, फिर बीचका कोई पृष्ठ देखो।"

मैं—" और फिर किताब एक तरफ़ फेंक कर कहो, कि किताब बहुत अच्छी है। अच्छा, अब चलूं, एक घंटा बीत गया। "

गांधीजी—" हां, जाओ, और जाकर टबमें बैठ जाओ। "

मैंने सोचा क्या यह 'जाओ मेख पर लटक जाओ' का हिन्दी अनुवाद तो नहीं है। लेकिन मुझे गांधीजीकी यह सलाह पसंद आई और मैंने फ़ैसला किया कि इसमें सुधार करूंगा। चुनांचे मैंने घर पहुंच कर कपड़े उतारे और पानी के टबमें एक लकड़ी का डिब्बा रख दिया। एक तौलिया तह करके डिब्बे पर रक्खा और इसके बाद एक दूसरा बड़ा डिब्बा टबके बाहर रख लिया। इसपर अपना टाइपराइटर टिका लिया। इसके बाद मैं टबके अन्दर वाले डिब्बे पर बैठ गया और गांधीजीके साथ एक घंटे की बातचीत के नोट टाइप करने लगा। जब जब मुझे पसीना आता, तबतब मैं कांसेका लोटा पानीसे भरकर अपन शरीर पर उंडेल लेता था। इस तरह मैं बराबर एक घंटे तक बिना थकावट के काम करता रहा।

पांच बजे भोजन था। मैं गांधीजीसे पहले ही पहुंच गया। उन्होंने आते ही कहा—" ठीक है। " यह बात उन्होंने इसलिए कही कि मैं सुबह के खाने पर देरसे आया था। मैंने कहा—" मुझे मालूम नहीं यहां पहले आना शिष्टता है या पीछे आना "। वह बोले—" यहां बनावटी शिष्टता की मनाही है। जब जी चाहे आओ। "

उन्होंने फिर मुझे एक उबला हुआ प्याज़ देना चाहा। मैंने फिर इनकार कर दिया। इसपर वह बोले—" तुम यहां भूखे रह रह कर

सूख जाओगे ।" मैंने कहा—"मैं दो खानों के बीच चाय और छाछ भी पी लेता हूं।" फिर बोला—"आपने मुझे टबमें बैठकर पढ़ने को कहा था। मैंने इसमें कुछ सुधार किया है। मैंने टबमें बैठकर टाइप किया है।" इसके बाद मैंने अपना पूरा तरीक़ा बयान किया। वह ज़ोर से हंसे। आज वह थके हुए थे, इसलिए उन्होंने शामके समय सैर को न जा सकने की माफ़ी मांगी।

जब उन्होंने देखा कि मैं खाना खा चुका हूं, तो बोले—"फ़िशर, तुम जब चाहो जा सकते हो। शिष्टाचार का विचार न करना। यहां बनावटी शिष्टाचार की ज़रूरत नहीं।"

मैं उठ खड़ा हुआ और जब मैं अपने बूट और टोप लेकर भोजन-घर से बाहर निकला, तो वह बोले—"क्या तुम्हें मालम है, जवाहरलाल इतवार को यहां आ रहा है?"

मैं—"नहीं। आज कौन सा दिन है? मैं तो दिनों की गिनती ही भूल गया हूं।"

वह हंसते हुए बोले—"आज शुक्रवार है।"

मैं—"क्या आप मेरे साथ खड़े होकर तस्वीर खिचवाएंगे?"

गांधीजी—"अगर ग़लती से कोई फ़ोटोग्राफ़र आसपास हो तो तस्वीर में अपने आपको तुम्हारे साथ देखने में मुझे कोई आपत्ति नहीं।"

मैं—"यह कहकर आपने मेरी बहुत तारीफ़ की है।"

गांधीजी—"क्या तुम तारीफ़ के भूके हो?"

मैं—"कौन तारीफ़ का भूका नहीं?"

गांधीजी—"बात तो ठीक है, लेकिन कभी कभी हमें इस भूक के लिए बहुत ज़्यादा क़ीमत देनी पड़ती है।"

मैं घर गया, टबमें घुसा और वह चार सवाल टाइप किए जिनका जवाब गांधीजी ने 'हरिजन' में देने का वचन दिया था।

मुझे ऐसा मालूम हुआ कि मेरी और गांधीजी की आज की मुलाक़ातें ऐतिहासिक महत्त्व रखती है। उन्होंने हिन्दुस्तान के सबसे बड़े सवाल के बारे में अपनी राय बदल ली थीं। पहले वह कहते थे, "अंग्रेज़ों को यहां से चले जाना होगा।" अब उन्होंने कहा था, "हिन्दुस्तान में रहकर यहां से लड़ाई लड़ सकते हैं।" दूसरे शब्दों में वह युद्ध-प्रयत्न सहने के लिए तैयार थे, और ख़ास ख़ास शर्तों पर मदद देने को भी तैयार थे। मेरे साथ उन्होंने जो बातचीत की उससे मालूम होता था, कि वह हिन्दुस्तान की स्वतंत्रता के ज़रूरी विषय पर समझौता करने को भी राज़ी हैं।

मेहमान-घर से कुछ दूर खुले मैदान में मेरा बिस्तर लगा था। मैं उसपर लेट गया। खुरशेद बहन ने मुझे चेतावनी देते हुए कहा—"मैं इस चबूतरे पर मिट्टी के तेल की लाल्टेन रक्खे देती हूं। इसे लिए देखे बिना रात को चारपाई से न उतरना। वर्ना कोई बिच्छू काट खाएगा।"

मैंने दूर से प्रार्थना की धीमी धीमी आवाज़ सुनी, और सुनते सुनते नौ बजे ऊंघ गया।

रात सर्द थी।

६ जून १९४२

मैंने सुबह पांच बजे उठकर हजामत बनाई और लंदन में ख़रीदी हुई नीली धारी की पतलून पहनी। इसके साथ आर्यनायकम् से मांगा हुआ खादी का कुरता पहना, जो मेरे घुटनों तक आता था। इसके बाद चाय और रोटी और आम का नाश्ता किया, और तब गांधीजी की कुटिया की तरफ़ चला। इस समय वह कुटिया से बाहर अपने बिस्तरे पर बैठे थे, और एक गिलास से आम का रस पी रहे थे। उनकी धर्मपत्नी पास बैठीं उन्हें पंखा कर रही थीं। गांधीजी सिर्फ़ धोती पहने थे।

उन्होंने 'ओह' कह कर मेरा अभिवादन किया और मेरी पोशाक के बारे में कुछ कहा। मैंने पूछा—"इस पिकाडिली (लंदन का एक हिस्सा) और खादी के मेल के बारे में आपकी क्या राय है?"

उन्होंने कहा—"मुझे तो अच्छा लगता है। तुमने यह नाप देकर बनवाया होगा।"

मैं—"नहीं, मैंने आर्यनायकम् से मांग कर लिया है।"

गांधीजी—"तुम्हें मालूम है, वह अमरीका की कोलम्बिया यूनिवर्सिटी का विद्यार्थी है?"

मैं—"हां, मुझे मालूम है।"

कुछ देर बाद मैंने पूछा—"आपने मेरे सवाल देखे?"

उन्होंने जवाब दिया—"हां मैंने वह सवाल देखे हैं। मैं आज ही उनका जवाब दूंगा।"

कुछ देर बाद हम सुबह की सैरको रवाना हुए। राह में मैंने उनसे पूछा—" आपके साप्ताहिक मौन व्रत (चुप रोज़े) की तह में क्या सिद्धान्त है ? "

गांधीजी—" सिद्धांत से तुम्हारा क्या मतलब है ? "

मैं—" मेरा मतलब है, मूल कारण, उद्देश्य, मक़सद । "

वह मुस्करा कर बोले—" इसका आरंभ उस ज़माने में हुआ जब मैं थकान से चूर चूर हो रहा था । उस समय मैं बहुत सख्त मेहनत कर रहा था । कभी गाड़ियों में सफ़र करता था, कभी सभाओं में बोलता था । और फिर रेलगाड़ियों में भी हज़ारों लोगों से मिलता जुलता था । वह मुझसे सवाल पूछते थे, अपनी बात कहते थे, और मेरे साथ प्रार्थना में शामिल होना चाहते थे । मैं हफ्ते में एक दिन आराम करना चाहता था । बस, मैंने मौन व्रत का फ़ैसला कर लिया । बाद में मैंने इसे सब तरह की अच्छाइयों से ढक दिया और आध्यात्मिक पहरावा पहना दिया । लेकिन ख़ास कारण यही था कि मैं सातवें दिन आराम करना चाहता था । "

हम चले जा रहे थे । इस समय उनका हाथ एक नौजवान लड़की के कंधों पर था जो आश्रम के रसोई–घर में काम करती थी ।

वह बोले—" चुप रहने से आराम मिलता है । मगर खुद चुप्पी में आराम नहीं है । हां, जब तुम बोल सकते हो और नहीं बोलते, तो तुम्हें शांति भी मिलती है, सोचने के लिए समय भी मिलता है । "

मैं गांधीजी के साथ चल रहा था मगर रसोई घर की लड़की ने हमारे बीच में एक बड़ा सा काला छाता ला रक्खा ताकि गांधीजी को धूप न लगे। उनकी छाती और सिर पर कोई कपड़ा न था। डा० दास ने एक और छाते से गांधीजी की दूसरी तरफ़ भी साया कर दिया। कभी कभी वह आगे बढ़कर रास्ते में पड़े हुए बांस और लकड़ियां उठाकर एक तरफ़ हटा देते थे।

मैंने गांधीजी से राजगोपालाचारीजी की योजना के बारे में उनकी राय पूछी। पिछले अप्रैल में वह कांग्रेस की तरफ़ से सरस्टाफ़र्ड क्रिप्स के साथ बातचीत करने गए थे। हिन्दुस्तानी उन्हें राजाजी कहते हैं। वह हिन्दुस्तान के बुद्धिमान लोगों में से एक हैं, गांधी जी के पुराने दोस्त और साथी हैं, और उनके छोटे लड़के देवदास गांधी के ससुर हैं। जबसे क्रिप्स के प्रस्ताव को कांग्रेस ने नामंजूर किया है, तब से वह अपने लेक्चरों में बारबार यही कहते हैं कि कांग्रेस और मुस्लिम लीग की सुलह हो जानी चाहिए, और कांग्रेस को पाकिस्तान की मांग मान लेनी चाहिए। जब मैंने गांधीजी से राजाजी के कार्यक्रम के बारे में पूछा तो उन्होंने कहा—"मुझे मालूम नहीं कि उनकी तजवीज़ क्या है। मैं इसे बदक़िस्मती समझता हूं कि हम एक दूसरे के ख़िलाफ़ बोलें और एक दूसरे से बहस करें। इसलिए मैंने हुक्म दे रक्खा है कि जहां तक हम दोनों का सम्बंध है, इस मज़मून पर कोई बातचीत न हो। लेकिन यह सच है कि मैं राजाजी की तजवीज़ों के बारे में कुछ भी नहीं जानता।"

मैं—"क्या थोड़े में उनकी तजवीज़ यह नहीं कि हिन्दू

और मुसलमान मिल जुल कर काम करें, और मिल जुल कर काम करते करते शायद उन्हें शांतिपूर्ण सहयोग का रास्ता सूझ जाए।"

गांधीजी—"लेकिन यह असम्भव है। जबतक तीसरी ताक़त, ब्रिटेन, यहां मौजूद है, तबतक क़ौमी झगड़े हमें सताते ही रहेंगे। जब लार्ड मिन्टो वायसराय थे, तो उन्होंने कहा था कि हिन्दुस्तान पर अपना अधिकार जमाए रखने के लिए यह ज़रूरी है कि अंग्रेज़ हिन्दू मुसलमानों को अलग अलग रक्खें।"

मैंने कहा, "मिन्टो का वह वाक्य मैंने पढ़ा है।" गांधीजी ज़ोर देते हुए बोले—"तब से लेकर आजतक अंग्रेज़ी राज का यही गुर चला आता है।"

मैं—"मैंने सुना है कि १९३७, १९३८ और १९३९ में जब कांग्रेस प्रांतीय मंत्रिमंडलों में थी, तब उसने मुसलमानों के साथ बुरा वर्ताव किया था।"

गांधीजी—"मगर इन प्रांतों के गवर्नरों ने तो कहा है, कि यह इलज़ाम झूठा है।"

मैंने फिर अपनी बात दोहराई—"क्या यह सच नहीं कि संयुक्त-प्रांतमें कांग्रेसियों को अपनी जीत पर पूरा पूरा भरोसा नहीं था, इसलिए उन्होंने मुसलमानों के साथ चुनावके बारे में समझौता कर लिया। मगर जब चुनाव में कांग्रेस की पूरी पूरी जीत हो गई, तो कांग्रेस ने मुसलमानों के साथ मिलकर मंत्रिमंडल बनाने से इंकार कर दिया।"

गांधीजी ने जवाब दिया——"यह सच है कि यू. पी. की कांग्रेस-सरकार में मुस्लिम लीग का प्रतिनिधि कोई नहीं था, मगर उसके चार मंत्री मुसलमान थे। हमने हमेशा मुसलमानों के साथ मिलकर काम करने की कोशिश की है। कुछ लोग कहते हैं कि मौलाना कबुल कलम आज़ाद, हमारे हाथों में कठपुतले हैं। पर वह कांग्रेस के सभापति हैं। मगर क्रिप्स योजना ने हिन्दू मुसलमानों के पलहे से ज़्यादा अलग कर दिया है। गोया हिन्दू मुसलमानों के बीच की खाई जो बड़ी हो गई है, यह सब अंग्रेज़ों की मेहरबानी है।"

मैं——"अफ़सोस की बात है कि कांग्रेस और मुस्लिम लीग के नेता क्रिप्स से बातचीत करने के लिए नई दिल्ली गए, मगर वहां पहुंच कर भी उन्होंने आपस में बातचीत न की।"

गांधीजी——"यह अफ़सोस की बात नहीं, यह शरम की बात है। मगर क़सूर मुस्लिम लीग का था। जब लड़ाई शुरू हुई, तो इसके थोड़ी देर बाद वायसराय ने हमें नई दिल्ली बुला भेजा। राजेन्द्र प्रसाद (कांग्रेस कार्य-समिति के एक सदस्य) और मैं कांग्रेस की तरफ़ से गए, मिस्टर जिन्ना मुस्लिम लीग की तरफ़ से गए। मैंने जिन्ना साहब से कहा कि हमें पहले एक दूसरे से मशविरा कर लेना चाहिए, ताकि हम दोनों मिलकर ब्रिटिश सरकार का सामना कर सकें। फ़ैसला हुआ कि हम नई दिल्ली में मिलेंगे। मगर जब मैंने कहा कि हम दोनों को मिलकर आज़ादी मांगनी चाहिए, तो जिन्ना बोले——'मुझे आज़ादी नहीं चाहिए।' हमारी राय एक न हुई। मैंने सोचा कि अगर हम वायसराय के पास

इकट्ठे जाएं, तो कमसे कम एकता का दिखावा तो होगा। मैंने कहा—'या मैं आपकी मोटर में चलूं, या आप मेरी मोटर में चलें।' वह मान गए कि मैं उनकी मोटर में चलूं। लेकिन वायसराय से बातचीत करते समय हम दोनों का सुर एक न था, हम दोनों की बातें एक न थीं।"

इस समय तक हम गांधीजी की कुटिया के पास लौट आए थे। वह भी रुक गए, मैं भी रुक गया। मगर उन्होंने अपनी बात उसी तरह जारी रक्खी—"आम ज़िन्दगी में हमें दो जातियां कहना असम्भव है। हम दो नहीं हैं। अपने पूर्वजों के इतिहास की छानबीन करने से हर एक मुसलमानको मालूम होगा कि वह हिन्दुओं की औलाद है। हर मुसलमान वह हिन्दू है जिसने इस्लाम क़बूल कर लिया है। इससे जाति नहीं बदलती। अगर हम असलमें दो जातियां हों और कोई ज़बरदस्त ईसाई ताक़त आकर हम सबको ईसाई बना ले, तो हम एक जाति नहीं बन सकते। इसी तरह अगर हिन्दुस्तानमें धर्म दो हैं, तो इसका यह मतलब नहीं कि हिन्दुस्तान में जातियां भी दो हैं। यूरोपके लोग ईसाई हैं। जर्मनी और इंग्लैंड भाषा और सभ्यताके लिहाज़से एक दूसरे के बहुत क़रीब हैं। मगर वह फिर भी एक दूसरे का गला काट रहे हैं। हमारे हिन्दुस्तान की सभ्यता एक है। उत्तर में हिन्दू मुसलमान दोनों हिन्दी-उर्दू समझते हैं। मद्रासके हिन्दू और मुसलमान दोनों तामिल बोलते हैं। और बंगालके हिन्दू-मुसलमान न हिन्दी बोलते हैं, न उर्दू बोलते हैं। वहां दोनों की ज़बान बंगाली है। जातीय झगड़े-फ़सादों का कारण या गाय है या धार्मिक ज़लूस।

मेरा मतलब यह है कि हमारे झगड़ों का कारण जातीयता नहीं वमपहरस्ती और अन्धविश्वास है।

मैं—"मैंने वायसराय के विदेश-मंत्री केरो से जो कई साल तक पंजाब सरकार के अफ़सर रहे हैं, और सप्लाई डिपार्टमेंट के एक अंग्रेज़ अफ़सर जेनकिन्स से सुना है कि यहां के गांव में जातीय झगड़ों का नाम निशान नहीं है। दूसरे लोगों का भी यही बयान है कि गांव में दोनों क़ौमें बड़े प्यार-मुहब्बत और अमन-अमान से रहती हैं। अगर यह सच है तो यह बहुत बड़ी बात है, क्योंकि हिन्दुस्तान के ९० फ़ी सदी लोग गांव में रहते हैं।"

गांधीजी—"यह सच है और यह इस बात का सबूत है कि हमारे लोग कटे और बटे हुए नहीं। हमें राजनीति फाड़ रही है।"

मैं—"नई दिल्ली के जिस होटल में मैं ठहरा था, वहां एक मुसलमान ख़ानसामा है, जो मुस्लिम लीग और पाकिस्तान दोनों का हिमायती है। उसने मुझे बताया है, कि जातीय दंगे उसी जगह होते हैं, जहां मुसलमान कम हैं, उस जगह कभी नहीं होते, जहां हिन्दू कम हैं।"

गांधीजी—"फ़िशर, अभी तुम्हें यहां आए ज़्यादा समय नहीं हुआ, और इतने थोड़े समय में आदमी सब कुछ नहीं देख सकता। लेकिन अगर तुम जांच पड़ताल के बाद इस नतीजे पर पहुंचो कि हम ग़लती पर हैं, तो हमें ऊंची आवाज़ से बता देना।"

हम इस वक्त तक चलते चलते बांस की एक लम्बी झोंपड़ी के पास पहुंच चुके थे। वह बोले—"यहां बीमार लोग रहते हैं।"

यह कह कर वह एक बीमार औरत की चारपाई के पास रुके, और उसके साथ पांच मिनट तक बातें करते रहे और इस बातचीत के दौरान में आप हंसते रहे उसे हंसाते रहे। इसके बाद मुझसे बोले—"यह यहां की सबसे अच्छी मरीज़ है।"

डाक्टर दास हमारे साथ थे। मैंने गांधीजी को छेड़ने के लिए कहा—"क्या यह अच्छा न होगा कि इसे डाक्टर पर छोड़ दिया जाए?"

गांधीजी ने जवाब दिया—"नहीं, इसमें नीम-हकीमी ज़्यादा है।" फिर हम एक ऐसे कमरे में गए, जहां सिवाए एक पालने के और कोई चीज़ न थी। गांधीजी को आते देखकर मां ने बच्चे को पालने से उठा लिया। उन्होंने बच्चे के गाल थपथपाते हुए कहा—"यह मेरा मरीज़ नहीं, मेरा मनोरंजन है।" बच्चा खुश हुआ और गांधीजी ने उसके गालों को और थपथपाया, और चुटकियां भरीं। फिर बोले—"इस बच्चे का बाप सरहद की अंग्रेज़ी फ़ौज़ में सारजेंट था। उसे हुक्म हुआ कि हिन्दुस्तानियों पर गोली चलाओ। उसने साफ़ इंकार कर दिया। मुक़द्दमा चला—सोलह साल क़ैद की सज़ा हुई। मगर अभी ६ ही साल गुज़रे थे कि उसकी रिहाई के लिए बहुत अर्ज़ियां आईं। दो साल हुए सरकार ने उसे छोड़ दिया है। अब वह हमारे साथ रहता है।"

मैं गांधीजी को उनकी कुटिया तक पहुंचा कर चला आया।

वापसी पर अपने कमरे में न जाकर मैं अपने सामने वाली कुटिया में चला गया। यहां गांधीजी के एक मंत्री रहते हैं।

गांधीजी के साथ मेरी मुलाक़ातों में वह उनके बिल्कुल पास बैठते रहे हैं। क़द छोटा, रंग काला, नक़्श तीखे। पीछले चौबीस साल से वह गांधीजी के साथ काम करते रहे हैं। मैंने इनसे पूछा—"कल गांधीजी ने कहा था कि अंग्रेज़ हिन्दुस्तान में रह सकते हैं। इस बारे में आपका क्या ख़याल है?"

उन्होंने जवाब दिया—"कलकी बातचीत नई भी थी, दिलचस्प भी थी। मगर उससे मुझे दुख हुआ है। मेरा ख़याल है कि लड़ाई से कुछ लाभ न होगा और हमें किसी लड़ाई में हिस्सा न लेना चाहिए!" यह बात उन्होंने कई बार दोहराई। गोया उन्होंने अपने साधुस्वभाव गुरु पर बेख़ौफ़ी से समालोचना की। इस समालोचना का मतलब यह था, कि गांधीजी के साथी उनसे डरकर दबे नहीं रहते। बाद में मालूम हुआ कि उनका नाम किशोरीलाल घनश्यामलाल मश्रुवाला है।

इसके बाद मैं टब में बैठकर टाइप करता रहा।

खाने के समय गांधीजी ने कहा—"फ़िशर, अपनी कटोरी दो, ताकि मैं उसमें कुछ भाजी डाल दूं।

मैं—"मैंने पिछले दो दिनों में चार दफ़ा साग और भाजी का दलिया खाया है। अब और खाने की इच्छा नहीं।"

गांधीजी—"क्या तुम्हें भाजियां अच्छी नहीं लगतीं?"

मैं—"मुझे इन भाजियों का स्वाद अच्छा नहीं लगता।"

गांधीजी—"तो बहुत सा नमक और नीम्बू मिला लो।"

मैं—"गोया आप स्वाद की हत्या करना चाहते हैं!"

गांधीजी—" नहीं, मैं स्वाद की मात्रा बढ़ाना चाहता हूं। "

मैं—" आप इतने अहिन्सक हैं, कि स्वाद की भी हत्या करना पसंद नहीं करते। "

गांधीजी—" अगर लोग सिर्फ़ इसी चीज़ की हत्या करते, तो मुझे कोई आपत्ति न होती। "

मुझे पसीना आ रहा था। मैंने रूमाल निकालकर गर्दन और मुंह पोंछा और गांधीजी की तरफ़ मुड़कर बोला—" दूसरी दफ़ा जब मैं हिन्दुस्तान आऊं तो...... मैंने देखा गांधीजी खाना खा रहे हैं और मेरी तरफ़ ध्यान नहीं दे रहे। मैं चुप हो गया।

मेरी तरफ़ अपना सिर घुमाए बग़ैर गांधीजी ने पूछा—" हां, दूसरी दफ़ा जब तुम हिन्दुस्तान आओ तो......? "

मैं—" उस वक़्त या सेवाग्राम में Airconditioning (हवा को ठंडा गरम करने का सामान) हो जाना चाहिए, या आपको रहने के लिए वायसराय का महल मिल जाना चाहिए। "

गांधीजी—" बहुत अच्छा। " कहने का ढंग ऐसा था, जैसे वह सचमुच मेरी बात को मान ग़ए हैं।

खानेके बाद मैं सोया और इसके बाद मैंने गांधीजी के साथ आज सुबह की बातचीत लिख ली। फिर मई १९३० में पार्लियामेंट के सामने रक्खी जाने वाली साइमन रिपोर्ट का कुछ हिस्सा पढ़ा। पहली जिल्द के ५९ पृष्ठ पर यह फ़िकरा आता है:—सिंध के (गिनती में कम) हिन्दुओं का ख़याल है कि ब्रिटिश कमिश्नर के अख़्तियार बहुत ज़्यादा हैं। दूसरी तरफ़

मुसलमानों की यह मांग है कि सिंधको बम्बई से अलग कर दिया जाए। यह मांग इतनी लोगों के घरों में या सिंध के किसानों में पैदा नहीं हुई, जितनी मुस्लिम विचार के लीडरों में पैदा हुई है। उनका ख़याल है कि एक और प्रांत (जिसमें मुसलमान ज़्यादा हैं) दूसरे मुस्लिम बलूचिस्तान, सरहद और पंजाब के प्रांतों से मिलकर भारत के मुसलमानों का हिन्दू-राज के डर से बचाव करेगा।"

आज दोपहर की मुलाक़ात के शुरू ही में मैंने गांधीजी को यह फ़िकरा सुनाया, और कहा—"यह आपकी इस बात का सबूत है कि आम मुसलमान लोग अलग होने के इतने इच्छुक नहीं हैं, जितने उनके नेता हैं।"

गांधीजी—"बिल्कुल ठीक।"

मैं—"मगर मुसलमान लीडरों के डर की कोई बुनियाद है या नहीं? शायद वह आम मुसलमानों से ज़्यादा समझते हों, कि हिन्दू उनपर राज करना चाहते हैं। क्या आप कह सकते हैं कि हिन्दुओं ने अपने हाथों में ताक़त लेने की कभी कोशिश नहीं की?"

गांधीजी—"कुछ जगहों के कुछ लोगों के ऐसे खेदजनक ख़याल हो सकते हैं। मगर जहां तक कांग्रेस और आम हिन्दुओं का सवाल है, उनकी यह इच्छा नहीं है, कि वह सारी सत्ता अपने ही हाथ में ले लें। प्रांतों को ज़्यादा से ज़्यादा आज़ादी होनी चाहिए। मैं ख़ुद इस बात के सख़्त ख़िलाफ़ हूं कि कोई सरकार हिंसा करे, दूसरों पर शासन करने की कोशिश करे, दूसरे देशों या अपने

लोगों पर ज़ुल्म करे। इसलिए मैं दूसरों पर शासन करने की इच्छा कैसे कर सकता हूं? लोगों में अपना प्रभाव बढ़ाने के लिए कुछ नेता हमपर यह इलज़ाम लगा रहे हैं।"

मैं—"मैं कांग्रेस पार्टी के बारे में कुछ सवाल पूछना चाहता था। कुछ बड़े ओहदेदार अंग्रेज़ों ने मुझसे कहा था—'कांग्रेसी बागडोर बड़े बड़े व्यापारियों के हाथमें है। बम्बई के मिलमालिक गांधीजी के साथ हैं और गांधीजी को जितने रुपए की ज़रूरत होती है, सब वही देते हैं।' क्या आप बता सकते हैं, कि इन बातों में सच्चाई कितनी है?"

गांधीजी ने जवाब दिया—"दुर्भाग्य से यह बातें सच्ची हैं। कांग्रेस के पास अपना काम जारी रखने के लिए काफ़ी रुपया नहीं है। हमने सोचा था कि कांग्रेस का हरएक सदस्य चार आने चंदा दिया करेगा, और इस चन्दे से हमारा काम चल जाएगा। लेकिन हमारी यह तजवीज़ कामयाब नहीं हुई।"

मैं—"कांग्रेस के ख़र्च का कितना हिस्सा अमीर हिन्दुस्तानियों की जेब से आता है?"

गांधीजी—"लगभग सारे का सारा। दूर जाने की ज़रूरत नहीं, इस आश्रम को ही ले लो। हम रहने को तो इससे बहुत कम ख़र्च में रह सकते हैं। लेकिन हम ऐसा नहीं करते। और यह सब रुपया हमारे अमीर दोस्तों की जेब से आता है।"

मैं—"अगर कांग्रेस अपना ख़र्च चलाने के लिए सारा पैसा अमीरों से लेती है तो क्या इसका असर उसकी नीति पर नहीं

पड़ता? जिनसे आप पैसा लेते हैं उनके प्रति आपका कुछ कर्त्तव्य भी हो जाता है?"

गांधीजी—"हां, यह एक तरह का कर्ज़ है, जिसे बही खातों में नहीं लिखा गया। मगर अच्छी तरह से देखा जाए, तो हम पर अमीरों के ख़यालों का ज़्यादा असर नहीं पड़ता। कभी कभी वह हमारी पूर्ण-स्वतंत्रता की मांग से डर भी जाते हैं।"

मैं—"कुछ दिन हुए मैंने 'हिन्दुस्तान टाइम्स' में पढ़ा था, कि चूंकि मज़दूरों का ख़र्च बढ़ गया है इस लिए बिड़ला ने अपनी मिलों के मज़दूरों की मज़दूरी बढ़ा दी है। और अख़बार ने कहा था कि और किसी मिल-मालिक ने इतनी मज़दूरी नहीं बढ़ाई। और यह 'हिन्दुस्तान टाइम्स' कांग्रेस का अख़बार है।"

गांधीजी—"नहीं यह बिड़ला का अपना अख़बार है।" फिर उन्होंने हंसकर कहा—"मुझे यह बात मालूम है, क्योंकि इसका सम्पादक मेरा सबसे छोटा लड़का है। यह जो कुछ इस अख़बार में छपा है सब ठीक है, लेकिन इसका कांग्रेस से कोई सम्बंध नहीं फिर भी तुम्हारा कहना ठीक है कि कांग्रेस का अमीरों पर निर्भर रहना दुर्भाग्य की बात है। मगर इस बात का हमारी नीति पर कोई असर नहीं पड़ता।"

मैंने पूछा—"क्या इस बातका यह नतीजा नहीं है कि कांग्रेस में राष्ट्रीयता पर हदसे ज़्यादा ज़ोर दिया जाता है, और आर्थिक और सामाजिक समस्याएं पीछे रह जाती हैं।"

गांधीजी—"नहीं। कांग्रेस ने समय समय पर ख़ासकर पंडित

नेहरू के असर से सामाजिक और आर्थिक सुधार की योजनाएं अपनाई हैं। मैं यह योजनाएं तुम्हारे लिए इकट्ठी करवा दूंगा।"

मगर मैंने फिर भी न माना और कहा—"क्या यह सच नहीं कि यह सब योजनाएं बाद के लिए हैं, उस वक्त के लिए जब हिन्दुस्तान आज़ाद हो चुकेगा।"

गांधीजी—"नहीं। जब प्रांतीय सरकारें कांग्रेस के अधिकार में थी (१९३७ से १९३९ तक) उस समय कांग्रेस मंत्रि-मंडलों ने बहुत से सुधार किए थे, जिन्हें अंग्रेज़ों ने अब फिर रद्द कर दिया है। यह सुधार गांवोंके लिए थे, स्कूलों के लिए थे, और बहुत सी दूसरी चीज़ों के लिए थे।"

मैं—"मुझे लोगों ने कहा है और मैंने साइमन रिपोर्ट में भी पढ़ा है कि हिन्दुस्तान की सबसे बड़ी लानत गांव का साहूकार है, जो किसानों के पैदा होने से लेकर मरने तक उनका पीछा नहीं छोड़ता। यूरोप के देशों में सूदख़ोर साहूकारों का ख़ातमा करने के लिए सरकार और लोक-प्रेमियों ने 'लैंड बैंक' Land Bank खोले हैं। आपके अमीर दोस्त भी यहां 'लैंड बैंक' क्यों नहीं खोल देते? यह भी एक तरह का व्यापार ही होगा—सिवाए इस के कि ४० से ७० फ़ी सदी व्याज न मिलेगा। मगर उनका पैसा भी सुरक्षित रहेगा, उनको नफ़ा भी होगा, और देश सेवा भी हो जाएगी।"

गांधीजी—"जब तक सरकारी क़ानून न बने, तब तक कुछ नहीं हो सकता।"

मैं—“ मगर क्यों ? ”

गांधीजी—“ क्योंकि किसान लोग व्याजपर लिया हुआ रुपया वापस ही न करेंगे । ”

मैं—“ लेकिन वह यह तो समझ ही जाएंगे, कि साहूकार के पास अपनी ज़िन्दगी रहन रखने से अच्छा है कि वह तीन प्रतिशत ब्याज पर लिया हुआ रुपया वापस कर दें । ताकि बैंक जारी रहे, और वह उससे फिर भी उधार ले सकें । ”

गांधीजी—“ साहूकारा पुराना धंधा है । इसकी जड़ें गांव में काफ़ी गहरी धंसी हुई है । जो बात तुम कहते हो, वह तब तक नहीं हो सकती, जब तक हिन्दुस्तान आज़ाद नहीं हो जाता ।”

मैं—“ आज़ाद हिन्दुस्तान में आप किसान सुधार के लिए क्या करेंगे ?”

गांधीजी—“ किसान ज़मीनपर अपना अधिकार जमा लेंगे । और हमारे कहने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी । यह काम वह खुद-बखुद कर लेंगे । ”

मैं—“ क्या ज़मींदारों को हर्जाना मिलेगा ?”

गांधीजी—“ नहीं, हमारे पास इतना पैसा कहां होगा कि हम ज़मींदारों को हर्जाना दे सकें । (मुस्कराकर) देख लो, करोड़ पतियों के कृतज्ञ हो कर भी हम ऐसी बातें कहने में संकोच नहीं करते । हां, जैसा मैं कह रहा था, गांवकी अपनी सरकार होगी और वहां रहने वालों का अपना स्वतंत्र जीवन होगा । ”

मैं—“ अच्छा, राष्ट्रीय सरकार होगी या नहीं ?”

गांधीजी—"नहीं"

मैं—"लेकिन रेलगाड़ियां, तारघर वगै़रा चलाने के लिए तो आपको कुछ राष्ट्रीय प्रबंध करना ही पड़ेगा।"

गांधीजी—"अगर हिन्दुस्तान में रेलगाड़ियां न होंगी, तो इसका मुझे ज़रा भी दुख न होगा।"

मैं—"गाड़ियां न होंगी तो किसानों को बहुत तकलीफ़ें होंगी। वह शहर से चीज़ें कैसे मंगवाएंगे? अपना माल देशके दूसरे हिस्सों में कैसे पहुंचाएंगे? किसानों को बिजली और पानी की भी ज़रूरत पड़ेगी। हाइड्रो-इलेक्ट्रिक पावर-स्टेशन बनाना किसी अकेले गांव का काम नहीं। कोई अकेला गांव सक्खर बांध जैसा बांध नहीं खड़ा कर सकता।"

गांधीजी—"मगर यह बांध तो बहुत निराशाजनक साबित हुआ है। सारा प्रांत कर्ज़ तले दबकर बैठ गया है।"

मैं—"ठीक है, लेकिन इससे बहुत सी नई ज़मीन खेती के लायक़ हो गई है और यह लोगों के लिए वरदान साबित होगा।"

गांधीजी ने सिर हिलाते हुए कहा—"मैं जानता हूं कि मेरे इस तरह के ख़याल होते हुए भी हिन्दुस्तान में मध्यवर्ती सरकार बनेगी। लेकिन पश्चिमी प्रजातंत्र में, जहां पार्लियामेंट के प्रतिनिधियों का चुनाव आम लोगों के वोटों से होता है, मुझे बिल्कुल विश्वास नहीं।"

मैं इस मज़मून को और आगे बढ़ाना चाहता था। बोला—"आपके ख़याल में हिन्दुस्तान को क्या करना चाहिए?"

गांधीजी—"हिन्दुस्तान में सात लाख गांव हैं। मैं चाहता हूं कि हरएक गांव की व्यवस्था उसके निवासियों के हाथ में हो और हरएक गांव को वोट देने का अधिकार हो। इस तरह चालीस करोड़ की बजाए सिर्फ़ सात लाख वोट होंगे। दूसरे शब्दों में हरएक गांव का एक वोट होगा। गांव मिलकर ज़िले के हाकिम चुनेंगे और ज़िलों के हाकिम मिलकर प्रांत-सरकार का चुनाव करेंगे। इसके बाद प्रांतीय सरकारों का यह काम होगा कि मध्यवर्ती सरकार का काम चलाने के लिए एक राष्ट्रपति का चुनाव कर लें।"

मैं—"यह तो सोवियट व्यवस्था से मिलती जुलती बात हो गई।"

गांधीजी—"यह मुझे मालूम न था। लेकिन इसमें हर्ज ही क्या है।"

मैं—"गांधीजी, अब मैं कांग्रेस के बारे में आप से एक और सवाल पूछना चाहता हूं। कांग्रेस पर इलज़ाम लगाया गया है कि यह मनमानी संस्था है। अभी अभी India and Democracy (हिन्दुस्तान और लोकशासन) नामकी एक किताब प्रकाशित हुई है जिसके लेखक हैं दो अंग्रेज़ शुस्टर और विन्ट। उन्होंने लिखा है कि १९३९ में कांग्रेस प्रांतीय मंत्रियों ने जो इस्तीफ़े दिए थे, वह अपनी मरज़ी से नहीं दिए थे। उनको आज्ञा मिली, उन्हों ने पालन कर दिया।'

गांधीजी ज़ोर देते हुए बोले—"यह सब वाहयात है। क्या तुम समझते हो कि विलायत में सब बातों का फ़ैसला हाउस आव

कामंस में होता है? या सब निर्णय पार्टी की गुप्त सभाओं और लंदन की क्लबों में होता है? इसलिए कांग्रेसी वज़ीर जो कांग्रेस के सदस्य भी हैं कांग्रेस के नियमों का पालन करने पर मजबूर हैं। सर सेमुएल होर ने मुझे बताया था, कि बर्तानिया में लोकराज किस तरह चलता है।"

मैं—"मालूम होता है, बर्तानिया के राजकारों में आप सर सेमुएल होर को बहुत पसंद करते हैं।"

सब हंसने लगे।

गांधीजी—"और कुछ नहीं तो उसकी हालत में मुझे यह ज़रूर मालूम हो जाता है कि वह कितने पानी में है। पार्लियामेंट का लोकराज भी रिश्वत वगैरह से ऊपर नहीं हैं। और चूंकि तुम टेमनी हाल और शिकागो के मेयरका क़िस्सा जानते हो, इस लिए यह बातें तुम्हारे लिए नई नहीं हैं। मेरा ख़याल नहीं कि हिन्दुस्तानकी सरकार दूसरे देशों की तरह काम करेगी। हमारा अपना अलग रास्ता होगा।"

मैं—"अब मैं आपसे धुरी राज्यों के प्रदेश में भाग जानेवाले सुभाषचंद्र बोस के बारेमें कुछ बातें करना चाहता हूं। हवाई जहाज़ की दुर्घटना में सुभाष बोस की मौतकी ख़बर पाकर (जो अब ग़लत साबित हो चुकी है) आपने बोस की मां को अफ़सोस का जो तार भेजा था इससे मुझे चोट पहुंची थी।"

गांधीजी—"इसलिए कि वह ख़बर बादमें ग़लत साबित हुई?"

मैं—" नहीं, बल्कि इसलिए कि आपको ऐसे आदमी की मौत का अफ़सोस हुआ, जो फ़ासिस्ट जर्मनीमें जाकर उसके साथ मिल गया है। "

गांधीजी—" मैंने अफ़सोसका तार इसलिए भेजा था, क्योंकि मैं बोसको देशभक्तों का सरताज मानता हूं। हो सकता है कि उसने गलती की हो, और मेरा ख़याल है कि उसने गलती की है। मैंने कई बार उसका विरोध भी किया है। दो दफ़ा मैंने उसे राष्ट्रपति नहीं बनने दिया। और मेरे विचार उसके साथ नहीं मिलते फिर भी वह राष्ट्रपति चुना गया। लेकिन फ़र्ज़ करो वह रूस या अमरीका जाकर हिन्दुस्तान के लिए मदद मांगता तो, क्या यह अच्छा होता? "

मैं—" ज़रूर। आप मदद के लिए किसके पास जाते हैं, इससे काफ़ी फ़र्क़ पड़ जाता है। "

गांधीजी—" मगर मैं हिन्दुस्तान की आज़ादी के लिए किसी की भी मदद नहीं चाहता। मैं चाहता हूं हिन्दुस्तान अपनी मदद आप करे। "

मैं—" इतिहास हमें बताता है कि राष्ट्रों ने और लोगों ने व्यक्तिगत रूप से कई बार विदेशों की मदद की है। अमरीका को ब्रिटेन से स्वतंत्र करने के लिए लफ़ेट फ्रांस से अमरीका गया था। स्पेन के प्रजातंत्र की रक्षा के लिए हज़ारों अमरीकन और विदेशी लोग स्पेन गए और वहीं क़ुरबान हो गए। "

गांधीजी—" हां, व्यक्ति ऐसा कर सकते हैं। लेकिन अमरीका बर्तानिया का दोस्त है, और बर्तानिया हमें ग़ुलाम बनाए हुए है।

और मुझे यक़ीन नहीं है कि यह देश फ़ासिस्ट देशों को हराने के बाद दुनिया को लड़ाई से पहले की दुनिया से अच्छा बना सकेंगे। हो सकता है, वह ख़ुद ही बहुत हदतक फ़ासिस्ट हो जाएं।"

मैं—"इस बारे में हम कभी एक राय न होंगे। मैं समझता हूं, यह बात निराशाजनक और दोष भरी है कि हिंदुस्तानी लोग आज़ादी पर बहुत ज़्यादा ज़ोर देते हैं और सामाजिक प्रश्नों की तरफ़ से आंखें बन्द कर लेते हैं। बोस नौजवान है और नाटकीय कार्य पसंद करता है। अगर जर्मनी में वह फ़ासिज़्म की तरफ़ झुक गया, और यहां आकर उसने हिन्दुस्तान को आज़ाद लेकिन फ़ासिस्ट बना दिया तो मेरे ख़याल में आपकी हालत आज से ज़्यादा ख़राब हो जाएगी।"

गांधीजी—"अंग्रेज़ी राज्यमें भी फ़ासिज़्म के ज़ोरदार पहलू मौजूद हैं और हिन्दुस्तानमें तो हम इन पहलूओं को हर रोज़ देखते और अनुभव करते हैं। अगर बर्तानिया चाहता है कि लड़ाई जीतने और नई दुनिया बसाने का सबूत उसके हाथ में हो, तो उसे चाहिए कि पहले हिन्दुस्तान को आज़ादी देकर अपने आपको शुद्ध कर ले।" इसके बाद उन्होंने धीमी आवाज़ में कहा—"तुम्हारा प्रेज़िडेन्ट चार आज़ादियों की बात करता है। इन चार आज़ादियों में आज़ाद होने की आज़ादी भी है या नहीं? हमें कहा जाता है कि जर्मनी जापान और इटली में लोक राज के लिए लड़ो। लेकिन जब तक ख़ुद हमें लोकराज न मिले जाए, तब तक हम दूसरों के लोकराज के लिए क्योंकर लड़ सकते हैं।"

इतने में इंटरनैशनल न्यूज़ सर्विस का प्रतिनिधि चैप्लिन और 'Life' और 'Time' अख़बारों का प्रतिनिधि बेल्डन गांधीजी से इंटरव्यू लेने के लिए कुटिया में दाख़िल हुए। यह साहब कई साल से चीन में थे और अभी अभी जेनरल स्टेलवेल के साथ बर्मा से आये थे। गांधीजी ने मुझसे कहा—"अगर तुम इंटरव्यू सुनना चाहो तो बैठ सकते हो।" फिर उनकी तरफ़ मुख़ातिब होकर बोले —"क्या तुम पालती मारकर बैठ सकते हो?" जब वह बैठ गए तो गांधीजी बोले—"इससे पहले एक अमरीकन मेरी चीरफाड़ कर रहा था, अब मैं तुम्हारे हाथों में हूं।" जब वह गांधीजी से आध घंटा तक बातचीत कर चुके तो मैं उन्हें अपनी कुटी में ले गया, उन्हें ठंडा पानी पिलाया, मजबूर करके नहलाया और रुख़सत कर दिया।

दोपहरको गांधीजी के मुख्य मंत्री महादेव देसाई आए और मैंने गांधीजी से जो सवाल पूछे थे, उनके जवाब लाए। यह जवाब दो बड़े सफ़ेद काग़ज़ों पर टाइप किए हुए थे और संशोधन गांधीजी के अपने हाथ का था।

यह सवाल मैंने गांधीजी को पत्र लिख कर पूछे थे। पत्र यह था:—

प्यारे गांधीजी,

आपसे पिछले दिनों की बातचीत के सिलसिले में मैं निम्न-लिखित सवाल पूछने की इजाज़त चाहता हूं। आशा है आप इनका पूरा पूरा जवाब देंगे:—

१—आप ब्रिटिश सरकार से कहते हैं, हिन्दुस्तान से तुरंत चले जाओ। क्या इसके बाद हिन्दुस्तानी अपनी राष्ट्रीय सरकार बनाएंगे? अगर जवाब 'हां' है, तो इस सरकार में कौन कौन सी पार्टियां शामिल होंगी?

२—क्या वह राष्ट्रीय सरकार मित्र राष्ट्रों को जापान और धुरीराज्यके दूसरे देशों के विरुद्ध लड़ाई जारी रखने के लिए हिन्दुस्तान की भूमि का इस्तेमाल करने की इजाज़त देगी?

३—फ़ासिस्ट देशों के विरुद्ध लड़ाई जारी रखने के लिए आप की यह राष्ट्रीय सरकार मित्र राष्ट्रों को और क्या क्या मदद देगी?

४—क्या आपके ख़याल में यह ठीक होगा कि हिन्दुस्तान और मित्र राष्ट्रों के बीच यह संधि मित्रता और एक दूसरे को मदद देने की संधि के रूप में की जाए?

सम्मान पूर्वक निवेदक,

लुई फ़िशर

गांधीजी के जवाबों का शीर्षक था—"महत्व के प्रश्न।" जवाब यह थे:—

एक मित्र मेरी नई योजना के बारेमें मुझसे बातचीत कर रहा था। बातचीत बहुत अव्यवस्थित थी। इस लिए मैंनें उससे कहा—तुम सवाल लिख लाओ, मैं उनका जवाब 'हरिजन' मे दे दूंगा। उसने मेरी बात मान ली और मुझसे यह सवाल किए:—

१. सवाल——आप ब्रिटिश सरकार से कहते हैं, हिन्दुस्तान से तुरंत चले जाओ। क्या इसके बाद आप अपनी राष्ट्रीय सरकार बनाएंगे? अगर जवाब 'हां' है, तो इस सरकार में कौन कौन सी पार्टियां शामिल होंगी?

जवाब——मेरी तजवीज़ एक तरफ़ा है। और वह यह है कि ब्रिटिश सरकार यहां से चली जाए। इसके बाद हम हिन्दुस्तानी क्या करते हैं, क्या नहीं करते? इससे उसको कुछ सरोकार नहीं। इस सरकार के चले जाने पर कुछ खलबली मच जाए, तो मैं इसके लिए भी तैयार हूं। लेकिन अगर ब्रिटिश सरकार सुचारु रूप से जाए, तो शायद हमारे आज के नेता आपसी सलाह से अस्थाई सरकार बना लें। मगर कई ऐसे लोग भी हैं, जिन्हें देश का कोई ख़याल नहीं, सिर्फ़ अपना ही ख़याल है। हो सकता है, ऐसे लोग किसी जगह और किसी तरह इकट्ठे होकर सत्ता को अपने हाथों में लेने की कोशिश करें। लेकिन अगर ब्रिटिश सत्ता पूरी तरह सुचारु रूप से और ईमान्दारी के साथ यहां से चली जाए, तो मुझे आशा है हमारे अक़्लमंद नेता अपने भेदभाव भूल जाएंगे, अपनी ज़िम्मेदारी समझ लेंगे, और जो मसाला ब्रिटिश सरकार छोड़ जाएगी, उसकी मदद से अस्थाई सरकार बना सकेंगे। सरकार के मंत्रिमंडल में कौन से पक्ष के लोग आ सकते हैं, कौनसे पक्ष के नहीं आ सकते? इन बातों का फ़ैसला बड़े संयम से होगा। इस हालत में कांग्रेस, लीग और देसी रजवाड़ों के प्रतिनिधि काम करेंगे और इनमें राज-काज चलाने के लिए कुछ

काम चलाऊ समझौता हो जाएगा। मगर यह सब मेरा अनुमान है, इससे ज़्यादा और कुछ नहीं।

२. सवाल—क्या यह राष्ट्रीय सरकार मित्र राष्ट्रों को जापान और धुरी राज्यके दूसरे देशों के विरुद्ध लड़ाई जारी रखने के लिए हिन्दुस्तान की भूमि इस्तेमाल करने की इजाज़त देगी?

जवाब—मान लिया कि राष्ट्रीय सरकार बन गई और वह मेरी धारणा के मुताबिक बनी, तो इस सरकार का पहला काम यह होगा कि वह हमलोंसे अपना बचाव करनेके लिए संयुक्त राष्ट्रोंके साथ संधि करे। संधि के मुताबिक़ हिन्दुस्तान का फ़ासिस्ट सत्ताओं के साथ कोई सरोकार न होगा और हिन्दुस्तान का नैतिक कर्त्तव्य होगा कि वह संयुक्त-राष्ट्रों की मदद करे।

३. सवाल—फ़ासिस्ट देशों के विरुद्ध लड़ाई जारी रखने के लिए आपकी यह राष्ट्रीय सरकार मित्र-राष्ट्रों को और क्या क्या मदद देगी?

जवाब—अगर इस राष्ट्रीय सरकार में मेरा हाथ होगा, तो संयुक्त राष्ट्रों को और कुछ मदद नहीं मिल सकेगी, सिवाए इसके कि हम उनकी फ़ौजों को ख़ास शर्तों के मातहत अपनी धरती पर रहने की मंज़ूरी दे दे। लेकिन अगर कोई हिन्दुस्तानी चाहेगा, तो वह अपने तौर पर फ़ौज में भरती होकर या रुपया देकर आपकी मदद कर सकेगा। इस पर हमें कोई आपत्ति न होगी। यह समझ लेना चाहिए कि अंग्रेज़ी सत्ता के जाते ही हम हिन्दुस्तानी सेना तोड़ देंगे। और अगर राष्ट्रीय सरकार के मंत्रिमंडलमें मेरी कुछ

सुनवाई हुई तो हिंदुस्तान दुनिया में अमन-चैन क़ायम करने के लिए कोई कोर-कसर न उठा रक्खेगा। लेकिन हो सकता है, राष्ट्रीय सरकार की स्थापना के बाद मेरी आवाज़ कोई न सुने और हिन्दुस्तान भी लड़ाई के लिए पागल हो उठे।

४. सवाल—क्या आपके ख़यालमें यह ठीक होगा कि हिन्दुस्तान और मित्र-राष्ट्रों के बीच यह संधि मित्रता और एक दूसरे को मदद देने की संधि के रूप में लिखी जाए ?

जवाब—मेरा ख़याल है, यह सवाल पूछने का अभी वक्त नहीं आया। हम संधि करते हैं या मदद देने का इक़रारनामा लिखते हैं, मुझे इसमें कोई फ़र्क़ मालूम नहीं होता।

संक्षेप में कहना हो, तो मेरे लिए सिर्फ़ एक ही बात निश्चित है। वह यह कि अगर मित्र-राष्ट्र जीतना चाहते हैं, तो उन्हें इस महान देश की (जो एक देश और एक क़ौम है) अस्वाभाविक ग़ुलामी का नाश करना होगा। आज मित्र राष्ट्र नैतिकता के मैदान में कहीं खड़े नहीं हो सकते। फ़ासिस्ट और नात्सी राज्य और मित्र-राष्ट्रों में मुझे कोई फ़र्क दिखाई नहीं देता। अपना अपना मतलब निकालने के लिए सब ग़रीबोंका ख़ून चूसते हैं, सब लोगों पर अत्याचार करते हैं। अमरीक़ा और बर्तानिया बहुत बड़े देश हैं। लेकिन मूक मनुष्यताके दरबारमें, चाहे वह मनुष्यता अफ्रीक़ा की हो चाहे एशियाकी हो, इनका बड़प्पन धूल के बराबर भी नहीं। इस भूल का सुधार अमरीका और बर्तानिया ही कर सकते हैं। जब तक उनके अपने हाथ गंदे हैं तब तक इन्सानी आज़ादी आदि के बारेमें बात करने का भी उन्हें

कोई हक़ नहीं। इस गंद से हाथ साफ़ करना ही उनकी सफलता को पक्का कर देगा। क्योंकि उस वक्त एशिया और अफ्रीक़ा के करोड़ों बेज़बान निवासियों की मूक प्रार्थनाएं उनके साथ होंगी। जब तक वह यह नहीं कर लेते, तब तक यह कहना ग़लत होगा कि वह नए संसार के लिए लड़ रहे हैं। असलियत यही है, बाक़ी सब कोरी कल्पना है। मैं इतना कुछ कह गया, यह सिर्फ़ इसलिए कि मेरी नेकनीयती ज़ाहिर हो जाए, और लोग जान जाएं कि मेरी योजना का असली मतलब क्या है?

मोहनदास करमचन्द गांधी

(यह सवाल—जवाब १४ जून १९४२ के 'हरिजन' में छपे थे।)

खाने के वक्त गांधीजी ने मुझ से पूछा—"क्या तुम अप्टन सिन्क्लेअर (Upton Sinclair) को जानते हो? आजकल वह क्या कर रहे हैं? कभी कभी सिन्क्लेअर की किताबें मेरे पास आती रहती हैं, मगर मुझे पढ़ने का मौक़ा नहीं मिलता। हमारा आपस में पत्र व्यवहार भी है। मेरा ख़याल है, सिन्क्लेअर का अमरीका के सामाजिक विचारपर काफ़ी असर है।"

मैं खा रहा था और गांधीजी मुझे देख रहे थे। बोले—"तुम अब भी मेरी भाजियां नहीं खाते?"

मैंने जवाब दिया—"जहां तक आदमी का सवाल है, नेताका सवाल है, राजकार का सवाल है, मैं आपकी बातों को मानूंगा। लेकिन आपकी पाकशास्त्री बातें मुझे मंजूर नहीं। मैं जबसे सेवा-

ग्राम आया हूं मुझे हर रोज़ पालक का साग और गांठगोभी की भाजी मिली है। अब मैं इनसे तंग आ गया हूं।"

गांधी जी ने मेरे दो लड़कों का हाल पूछा। मैं समझ गया, कि वह मेरी पुस्तक 'मेन ऐंड पालिटिक्स' देख रहे हैं। इतने में कुछ बिल्लियां अंदर आगईं और खानेकी मेज़ के नीचे जाकर खेलने लगीं। मैं बोला—"मैं १९३५ में जब लायड जार्ज से मिलने के लिए चर्ट गया तो उन्होंने आपका ज़िक्र किया था।"

गांधी जी उत्कंठा से बोले—"अच्छा! क्या कहते थे?"

मैं—"कहते थे कि जब आप चर्ट आए तो उनके कोच पर पालती मार कर बैठ गए। उसी वक्त कहीं से एक काली बिल्ली खिड़की की राह से अंदर आ गई और आपकी गोद में बैठ गई। उन्होंने इस काली बिल्ली को पहले कभी न देखा था।"

गांधीजी—"हां, यह ठीक है।"

मैं—"लायड जार्ज ने यह भी कहा कि जब आप चले गए तो यह बिल्ली भी चली गई और फिर कभी नज़र न आई।"

गांधीजी—"इस बात का मुझे पता नहीं।"

मैं—"लायड जार्ज ने मुझे यह भी बताया कि जब मिस स्लेड (मीरा बहन) उनसे मिलने आईं उस समय वह बिल्ली फिर आई थी।"

गांधीजी—"इस बात का भी मुझे पता नहीं।"

गांधीजीने लायड जार्ज की बहुत तारीफ़ की। मैंने कहा—"लायड जार्ज ने मुझे सिगरेट पेश किया। मैंने कहा, मैं सिगरेट नहीं पीता। उन्होंने मुझे शराब पेश की। मैंने कहा, मैं शराब भी

नहीं पीता। इस पर लायड जार्ज बोले—'कोई ऐब नहीं?' मैंने कहा—'जो दिखाई दे सके ऐसा कोई ऐब नहीं।' लायड जार्ज ज़ोरासे बोले—'मुझेमें तो दिखाई देनेवाले और न दिखाई देने-वाले दोनों ऐब हैं। यही वजह है कि मैं ७५ बरसकी उम्र में भी ऐसा तंदुरुस्त हूं।' गांधीजी देर तक हंसते रहे। मैंने कहा—"मैंने लायड जार्ज के साथ खाना खाया और उनके साथ बरामदे से होता हुआ बैठक में जा रहा था। बरामदे में जेनरल हेग की एक बड़ी तस्वीर लगी थी। हेग पिछली लड़ाई में ब्रिटेन का सेनापति था और फ्रांसमें लड़ा था। लायड जार्ज ने हेग के बूटों की तरफ़ इशारा करते हुए कहा—'हेग समझदार आदमी था, लेकिन नीचे इस जगह।' गांधीजी फिर हंसे और बोले—"चार्चिल के बारेमें लायड जार्ज का क्या ख़याल है?"

मैंने जवाब दिया—"जब मैं १९४१ की गर्मियों में लायड जार्ज से फिर मिलने गया तो मैंने यही सवाल उनसे पूछा था। मैंने पूछा—'चर्चिल में हिम्मत क्यों नहीं?' लायड जार्ज ने एक शब्द में जवाब दिया—'गेलीपोली।' लायड जार्ज ने कहा कि उस ज़बर्दस्त दुस्साहस का नतीज़ा यह हुआ कि चार्चिल को फिर साहस करने की हिम्मत नहीं हुई।"

गांधीजी—"एक बार हम रात के एक बजे तक बातचीत करते रहे। फ़ैसला हुआ, शाम के छः बजे हम फिर मिलेंगे। छः बजे जब हम मिले तो लायड जार्ज ने घरमें काम करनेवाले सब लोंगो को मेरा अभिवादन करने के लिए इकट्ठा कर रखा था। इस बात की मुझपर गहरी छाप पड़ी।"

पहले दिन का अख़बार पढ़कर मैं आठ बजे सो गया । यहां के लोगों को अख़बार का ज़्यादा शौक़ नहीं । न सेवाग्राम में कोई रेडियो है । नेहरू जैसे लोगों को छोड़कर ज़्यादा तर हिन्दुस्तानी अपने देशके अंदर ही मस्त रहते हैं । उनके लिए लड़ाई और बाहर की दुनिया दोनों दूरकी चीज़ें हैं । बर्तानिया के शासन का एक नुक़सान यह भी है । बर्तानिया उनकी आंखों के इतना नज़दीक है कि उसे छोड़कर हिन्दुस्तानी और कुछ नहीं देख सकते । न बाहर की दुनिया, न दुनिया की लड़ाई । मैं देर तक सोया । रात ठंडी और ताज़गी देने वाली थी । आकाश में चौथाई चांद और आकाश गंगा की चमक दिखाई दे रही थी ।

७ जून १९४२

महात्माजी के भतीजे कनु गांधी ने कल हमारी तस्वीरें ली थीं । मगर फ़िल्म पुरानी निकली, तस्वीरें ख़राब हो गईं । इसलिए मैंने फिर दाढ़ी बनाई और गांधीजी के पास पहुंचा । आज भी वह आम का रस पी रहे थे और उनकी स्त्री उन्हें पंखा कर रही थीं । मुझे देखते ही बोले—"रात कैसी गुज़री ?" मैंने जवाब दिया—"मुझे तो ख़ूब नींद आई । आपका क्या हाल रहा ?" उन्होंने कहा—"मैं ज़्यादातर साढ़े नौ बजे से साढ़े चार तक सोता हूं ।"

मैं—"बिना किसी रुकावट के?"

गांधीजी—"नहीं दो तीन बार ज़रा आंख खुलती है। मगर जल्दी ही फिर नींद आ जाती है। और मैं दोपहर को भी आध घंटा सो लेता हूं।"

मैं—"चर्चिल भी दोपहर को सोता है।"

गांधीजी—"मैंने सुना है यह आदत यूरोप में भी फैल रही है। ख़ासकर बुढ़ापे में तो इसकी बहुत ज़रूरत है।"

मैं—"कहते हैं रूज़वेल्ट बिस्तरपर लेटते ही सो जाता है।"

गांधीजी बोले—"श्रीमती रूज़वेल्ट कैसी हैं, कुछ उनका हाल सुनाओ।"

मैंने हाल सुनाया। वह बोले "तब तो अमरीकन राजनीति पर उनका काफ़ी असर है।"

रूज़वेल्ट की नई योजना के अनुसार सामाजिक क़ानून-निर्माण मज़दूर सभाओं के संगठन और सामाजिक विचारों में जो उन्नति हुई है मैंने इन सबपर रोशनी डालने की कोशिश की और कहा—"अमरीकन सरकार विदेशी सरकारों को भी पैसा दे रही है, और देसी युद्ध–उद्योगों की भी पूरी मदद कर रही है। पिछली लड़ाई में तो अमरीकन जनता ही घरेलू उद्योगों में पैसा लगाती थी और वही विदेशी सरकारों को उधार देती थी।"

थोड़ी देर बाद गांधी जी बोले—"वहां हबशियों का क्या हाल है?

मैं—“ वहां हबशियों के साथ जो बुरा वर्ताव होता है, मैं उसकी जवाबदही नहीं करता। लेकिन मेरा ख़याल है कि हमारा बर्ताव इतना क्रूर नहीं, जितना हिन्दुस्तानियों का अछूतों के साथ है।”

गांधी जी—“ तुम जानते हो, मैं छूतछात के ख़िलाफ़ कई साल से लड़ रहा हूं। यहां मेरे आश्रम में कई अछूत हैं, और यहां का ज़्यादत्तर काम उन्हीं के सुपुर्द है। इसलिए जो भी हिन्दू सेवाग्राम में आता है, उसे अछूतों के हाथ की रोटी खानी पड़ती है, और उनके साथ रहना पड़ता है।”

मैं—“ तो क्या यह भेदभाव कुछ कम हुआ है ?”

गांधीजी—“ हां हुआ है, लेकिन अभी इतना नहीं।”

ख़ुरशेद बहन ने आकर उनसे हिन्दुस्तानी में कुछ कहा, जिसे सुनकर वह हंस पड़े। मेरे पूछने पर ख़ुरशेद बहन ने बताया कि उन्होंने गांधीजी से कहा था—‘ मैं आपके चरण छूती हूं।’ मैंने कहा—“ यह तो बिल्कुल ऐसा ही है, जैसे वियाना के लोग कहते हैं, ‘ मैं तुम्हारे हाथ चूमता हूं।’ और चूमते नहीं।” गांधीजी हंसे और उठ बैठे। इतने में दो नौजवान आकर ऐसी जगह खड़े होगए कि चलते वक़्त गांधीजी उनके कंधोंपर अपने हाथ रख सकें। इस मान के लिए हमेशा मुक़ाबिला होता है। एक दिन शाम के वक़्त हम सैर से लौट रहे थे। इतने में गांव की तरफ़ से एक लड़की आई और ऐसी सफ़ाई से गांधीजी के क़रीब खड़ी हो गई कि वहां खड़ी हुई दूसरी लड़की को अपनी जगह छोड़नी पड़ी।

सैर शुरू होते ही मैंने फिर अछूतों का सवाल छेड़ दिया। मैंने कहा—"हिन्दुस्तान के फ़ेडरल कोर्ट के ब्राह्मण जज वरदाचार्यार जैसे विचारशील और प्रगतिपसंद आदमियों ने मेरे साथ बातचीत करते समय छूतछात को ठीक साबित करने की कोशिश की। मालूम होता है हिन्दुओं का पुनर्जन्म में विश्वास ही इस छूतछात का कारण है। क्या आप भी पुनर्जन्म को मानते हैं?"

गांधीजी ने तुरंत जवाब दिया—"हां, मैं यह नहीं मान सकता कि शरीर के साथ साथ आत्मा का भी अंत हो जाता है। आदमी का एक घर टूट जाए तो वह दूसरा बना लेता है; जब शरीर छिन जाए, तो आत्मा दूसरा शरीर ले लेता है। मैं यह भी नहीं मानता कि जब देह ज़मीन म गाड़ दी जाती है तो आत्मा कहीं लटकता रह जाता है और क़यामत के दिन का इंतज़ार करता रहता है जब ईश्वर के सामने उसे अपने पाप-कर्मों की जवाब दही करनी पड़ेगी। मेरा मत है कि आत्मा उसी दम अपना नया घर ढूंढ़ लेता हैं।"

मैं—"ज़ाहिर है कि यह सदा ज़िंदा रहने के लिए आदमी के पुरुषार्थ का ही दूसरा रूप है। कमज़ोर आदमी के मृत्युभय से ही इसकी उपज हुई है। टाल्सटाय बुढ़ापे तक अधर्मी था, और उसे मौत से डर लगता था।"

गांधीजी—"मुझे मौत से डर नहीं लगता। मुझे मौत से संतोष मिलेगा। लेकिन मौत ही अंत है, यह सोचना मेरे लिए असम्भव है। मगर मेरे पास कोई सबूत नहीं। कुछ लोगों ने इस बात को साबित करने की कोशिश की है कि मरे हुए आदमी का

आत्मा अपने लिए दूसरा घर ढूंढ़ लेता है। लेकिन मेरे विचार में यह बात साबित नहीं हो सकती। फिर भी मैं इसे मानता हूं।"

मैं जानता था कि इस विषयपर बहस करने का कोई फ़ायदा नहीं। लेकिन मेरी इच्छा थी कि अपना मत एक बार और प्रकट करूं। पस मैंने कहा—"मेरा ख़याल है, हम सब लोग अमर होना चाहते हैं। कुछ लोगों का यह भी विश्वास है कि वह अपने बच्चों में या अपने किए हुए कामों में ज़िन्दा रहेंगे। कुछ लोग समझते हैं कि वह आदमी या जानवर की शक्ल में ज़िन्दा रहेंगे। कुछ लोग ऐसे हैं, जो अपने अच्छे कामों की वजह से ज़्यादा देर ज़िन्दा रहते हैं। मगर मेरा ख़याल है वह लोग जो कर्म के ज़ोर से अमर होने में विश्वास करते हैं, मौत से डरते हैं और इस डर से बचने के लिए अपने आपको धोका देते हैं।" इसपर गांधीजी ने फिर अपने मत को सुंदर अंग्रेज़ी में दोहराया। उनकी अंग्रेज़ी हमेशा साफ़ और मुहावरेदार होती है, और उनका उच्चारण ब्रिटिश यूनिवर्सिटी के विद्यार्थियों जैसा है।

मैंने कहा—"मुझे विद्यार्थियों से मालूम हुआ है कि हिन्दुस्तान की नई नसलमें ब्राह्मण और अछूत, हिन्दू और मुसलमानका ज़रा भी भेदभाव नहीं, और उनको धर्म में ज़्यादा दिलचस्पी भी नहीं है।

गांधीजी—"तुम्हारी पहली बात सच है। मगर हिन्दू नामका कोई धर्म नहीं है। विद्यार्थी धर्मकर्म नहीं करते। मगर हिन्दूधर्म जीवन और जीवन का रास्ता है। धर्म-कर्म करने वालों की निस्बत धर्म-कर्म न करने वाले बहुत से लोग इस जीवन-पथ के ज़्यादा

नज़दीक हैं।" वह फिर बोले—"छूतछात को देखकर मुझे दुख होता है। लेकिन मेरा ख़याल है आज़ाद हिन्दुस्तान इस सवाल को जल्दी हल कर लेगा।" यहां से वह फिर अपने प्रिय विषय पर आ गए—"मैंने अंग्रेज़ों को यहां से चले जाने को कहा है-यह मेरी चुनौती है। अगर वह चले गए तो शुद्ध हो जाएंगे और नई दुनिया बसाने का काम अच्छी तरह कर सकेंगे। अगर वह न गए, तो साबित हो जाएगा कि उनकी बातें छल-कपट के परदे से ढकी हुई हैं।

इस समय तक हम गांधीजी की कुटी के पास लौट आए थे। मैंने उनसे विदा ली।

समाजवादी नेता नरेन्द्रदेव गांधीजी की कुटिया के पास ही एक छोटे से कमरे में रहते हैं। वह और लंकानिवासी आर्यनायकम् मेरे कमरे में चले आए, और फ़ासिज़्म और इम्पीरियलिज़्म (साम्राज्यवाद) पर देर तक बहस करते रहे। वह कहते थेः—हम हिन्दुस्तान में ब्रिटिश फ़ासिज़्म हर रोज़ देखते हैं। मगर जर्मन फ़ासिज़्म को न हम ने देखा है, न उसे महसूस किया है। हां, कुछ पढ़े-लिखे लोग जानते हैं कि नात्सी भयानक हैं, लेकिन यहां की जनता इसके बारे में कुछ नहीं जानती। 'प्रिन्स आफ वेल्स' और 'रिपल्स' के डूबने का लोगोंपर बहुत प्रभाव पड़ा है, क्योंकि अंग्रेज़ी जल-सेना ही हिन्दुस्तान में अंग्रेज़ी-राज की असली ताक़त है। पूर्वी एशिया में ब्रिटेन की हारों का लोगों पर बहुत असर हुआ है। आर्यनायकम् ने कहा—"जापानी आत्मघातक उड़ाके अपने जहाज़ लेकर सीधे बर्तानवी जंगी जहाज़ों में जा गिरते

हैं। अंग्रेज़ ऐसा कभी नहीं कर सकते।" मैंने कहा—"बर्तानिया के पास भी आत्मघातक उड़ाके हैं।" आर्यनायकम् बोले—"हमने उनका ज़िक्र कभी नहीं सुना।" मैंने कहा—"आपको याद है 'नाइसेनो' (Gneisenau) और 'शार्नहार्स्ट' (Scharnhorst) नामक दो जहाज़ ब्रिटिश चैनल में घुस आये थे। उनके ऊपर हमला करने वाले ब्रिटिश आत्मघातक उड़ाके ही थे। जापानियों की तरह उन्होंने भी अपनी जान की परवा न की थी। दुनिया की हर सेना में वीर योद्धा हैं, यह आपको मानना ही पड़ेगा। प्रजातंत्र राष्ट्रों के सिपाही वीरतामें दूसरों से पीछे नहीं हैं।"

मैंने बातचीत के अन्त में कहा—"हिन्दुस्तानी फ़ासिस्ट विरोधियों को दो मोर्चों पर लड़ना पड़ेगा। एक तो धुरी राष्ट्रों के विरुद्ध और दूसरे ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध।" मगर मेरे यह मित्र कहते थे कि दो की तो दूर रही हम तो एक मोर्चे पर भी नहीं लड़ सकते। देव बोले—"हम जापानियों के खिलाफ़ नहीं लड़ सकते, क्योंकि हमारे पास हथियार नहीं हैं। अंग्रेज़ों ने जानबूझकर हमें निहत्था बना रक्खा है। हमारे लिए अंग्रेज़ों की तरफ़ से लड़ना भी मुश्किल है, क्योंकि वह हमें दबाकर रखते हैं, हमें हथियार रखने की इजाज़त नहीं देते, और हमें आज़ाद नहीं करते।"

डाक्टर दास की भतीजी की छः बरस की बच्ची है। वह हमेशा मेहमान घर के इर्द-गिर्द खेलती रहती है और अंग्रेज़ी के कुछ शब्द बोल लेती है। मैंने पूछा—"तुम अपने दोस्तों से किस

ज़बान में बोलती हो ?" जवाब दिया—"बंगाली में।" वह हिन्दी और गुजराती भी बोलती है। इस आश्रम के ज़्यादातर बच्चे दो दो तीन तीन ज़बानें बोल लेते हैं।

नरेन्द्रदेव और आर्यनायकम् के चले जाने के थोड़ी देर बाद राजा नामका एक सज्जन मुझे मिलने आया। यह राजा हिन्दू है और उसकी स्त्री फ्रेंच है। राजा काफ़ी दिनों तक फ्रांस में रहा है और अंग्रेज़ी की निस्बत फ्रेंच सफ़ाई से बोलता है। हालीवुड के अभिनेताओं का सा सुन्दर चेहरा, धूप से जली हुई कनपटियां, काली आंखें, महराबदार भवें। वह कहता था, फ्रांस बिल्कुल गया–गुज़रा है। इस बारे में वह कुछ देर बातचीत करता रहा। फिर बोला—"मैं यहां अपने आत्मा को तरोताज़ा करने के लिए आया हूं।" वह मुसलमानों में पला है, मुसलमानों में पढ़ा है। वह कहता था—"हिन्दुओं की अपेक्षा मुसलमान ज़्यादा ताक़तवर ज़्यादा परिवर्तनशील और ज़्यादा क्रांतिकारी हैं। इंडियन कम्यूनिस्ट पार्टी के आधे सदस्य मुसलमान हैं। हिन्दुस्तान के अच्छे कवि मुसलमान हैं। हिन्दू विनयशील हैं, मगर कल्पना-शक्तिमें कमज़ोर हैं।" मैंने कहा—"हिन्दू और मुसलमान एक ही जाति के लोग हैं, फिर उनमें इतना फ़र्क़ क्यों? क्या इसका कारण भोजन है?" वह बोला—"नहीं, इसका कारण जीवन के बारे में दोनों का अलग अलग दृष्टिकोण हैं। इसका कारण अलग अलग भोजन नहीं है। उत्तरी हिन्दुस्तान में बहुत से हिन्दू भी मांस खाते हैं। मुसलमान गाय का मांस खाते हैं, सूअर का मांस नहीं खाते। हिन्दू चिन्तनशील हैं, स्मरण शक्ति में तेज़ हैं

और उच्च कोटि के व्यापारी हैं। लेकिन अगर आप खाना चाहते हैं नाचना चाहते हैं, तैरना चाहते हैं और आनंद लूटना चाहते हैं, तो किसी मुसलमान का साथ ढूंढिए।"

खाने के समय गांधीजी बहुत ख़ुश थे। दो और तीन बरस के दो चंचल लड़के भोजन-घर के दरवाज़े पर बैठे धीरज के साथ भोजन की इंतज़ार कर रहे थे। गांधीजी ने उनकी तरफ़ देखकर आंखें बनाईं। जिस जिसके पास से गुज़रे उसके साथ मज़ाक़ किया और उसको हंसाया। जब हमने भोजन शुरू कर दिया तो गांधीजी ने मुझसे पूछा—"क्या तुम बैटल क्रीक मिशीगन के डाक्टर केलॉग (Kellogg) को जानते हो?" मैंने कहा—"मैं केलॉग फ़ूड कम्पनीको जानता हूं, डाक्टर केलॉग को नहीं।" गांधीजी ने कहा—"मुझे याद है, खाने पीने के सवालों पर मैंने डाक्टर केलॉग के साथ काफ़ी लिखापढ़ी की थी। आम तौर पर देखा गया है कि आदमी अपने देस में मशहूर नहीं होता, परदेसमें मशहूर हो जाता है। जर्मनी के लिपज़िग शहर में कोहनी (Kuhne) नामका एक आहारशास्त्री रहता था। उसकी किताबों का हिन्दुस्तान की कई भाषाओं में अनुवाद हो चुका है, और उनके कई कई संस्करण छप चुके हैं। मगर जब मैंने अपने एक दोस्तको कोहनी से मिलने के लिए लिपज़िग भेजा, तो मालूम हुआ कि वहां उसे कोई भी नहीं जानता। बड़ी दिक़्क़त के बाद उसके बेटे का पता मिला। कोहनी मर चुका था।"

इसके बाद गांधीजी ने मुझसे पूछा—"तुम्हें आश्रम में पेट भर खाना तो मिल जाता है, ना?"

मैंने जवाब दिया—"मैं कभी भूका नहीं रहता। हां, एक बात है कि यहां के भोजन में ज़्यादा चीज़ें नहीं हैं और आप जानते हैं, भोजन में स्वाद बड़ी ज़रूरी चीज़ है। जितनी बार मैंने यहां खाना खाया है हर बार मुझे एक सी ही चीज़ें मिली हैं। मैं आप पर खुल्लम-खुल्ला इलज़ाम लगाता हूं कि आप पाकशास्त्रमें बिल्कुल प्रवीण नहीं।"

इसी समय जवाहरलाल नेहरू मुस्कराते हुए चेहरे के साथ, सफ़ेद खद्दर के कपड़े पहने भोजन घर में दाख़िल हुए। ज़ाहिर था कि उन्हें वहां के सब लोग चाहते हैं। वह मेरे साथ के आसन पर बैठ गए और हिन्दुस्तानी तरीक़े पर हाथ से खाना खाने लगे। मुझे वह दिन याद आ गया जब हम दोनों ने पेरिस के एक शानदार होटल में खाना खाया था।

खानेके पहले नेहरू ने गांधीजी के साथ कुछ देर बातें कीं। इसके बाद गांधीजी मेरी तरफ़ मुड़कर बोले—"कल सोमवार मुझे जवाहरलाल के साथ बातचीत करना है। इसलिए मैंने कल की बजाए आज ही मौन-व्रत रखने का फ़ैसला किया है। पहले मेरा ख़याल था दोपहर से अपना मौन शुरू कर दूं। लेकिन इस हालत में तुम मेरे साथ अपनी दोपहरकी बातचीत न कर सकते। इसलिए मैंने अपना मौन दो बजकर चालीस मिनट पर शुरू करने का इरादा किया है ताकि डेढ़ बजे से अढ़ाई बजे तक तुम मेरे साथ बातचीत कर सको।"

खाने के बाद मैंने और नेहरू ने (जो मेहमान घर में मेरे पास ही ठहरे थे) दो चारपाइयोंपर बैठकर दुनिया भर की बातें कर डालीं।

इसी बातचीत में नेहरू ने कहा—"हिन्दुस्तान में बुरी से बुरी बातें भी हैं, अच्छी से अच्छी बातें भी हैं। आप जो चाहें, चुन लें।"

मैंने कहा—"दोनों आप ही को मुबारक हों।"

साढ़े बारह बजे नेहरू एक घंटे के लिए गांधीजी से मिलने चले गए। मैं जब डेढ़ बजे गांधीजी की कुटिया में पहुंचा तो नेहरू अभी तक वहीं थे, और कुछ बेचैन से थे। मैं उनके पास ही बैठ गया। गांधीजी मेरी तरफ़ मुड़े और रोज़की तरह बोले—"अब?"

मैंने बातचीत शुरू करते हुए कहा—"अंग्रेज़ी क़ानून और राजकाज का तरीक़ा ऐसा है कि वहां सारी सत्ता राजा और पार्लियामेंट के हाथमें होती है। अमरीका का तरीक़ा इससे उलटा है। वहां प्रांतोंका संघ है जिसमें हरएक प्रांत की अपनी अपनी सत्ता है। हिन्दुस्तानके भेदभाव को देखते हुए क्या आपका ख़याल नहीं कि राजाओं और मुसलमानों को राज़ी रखने के लिए आपको भी अमरीका जैसे संघ (Federation) की ज़रूरत है?"

गांधीजी—"मैं अभी नहीं कह सकता, कि हमारे लिए कौन सी पद्धति ठीक रहेगी। पहली बात तो यह है कि अंग्रेज़ यहां से चले जाएं। इसके बाद क्या होगा, यह सब अभी अनुमान ही है। थोड़ी संख्या के धार्मिक दलों का सवाल तो अंग्रेज़ों के यहां से जाते ही हल हो जाएगा। अगर अंग्रेज़ों के जाने पर यहां खलबली मच गई तो मैं नहीं कह सकता उस खलबली में से क्या निकलेगा? लेकिन अगर कोई मुझसे पूछे तो मैं केन्द्रीय सरकार की निसबत प्रांत-संघ (फ़ेडरेशन) को पसंद करूंगा। यहां किसी न किसी

तरह का संघ ही बनेगा, लेकिन मुझे इस बातकी ज़रा भी चिन्ता नहीं कि यहां केन्द्रीय सरकार बनेगी या संघ-सरकार ? शायद तुम इसपर हंसते होगे। शायद तुम्हारा ख़याल होगा, कि हम सत्याग्रह में सफल न हो सकेंगे, क्योंकि हम सैंकड़ों साल से ग़ुलाम और निहत्थे चले आ रहे हैं।"

मैं—"नहीं, मेरा यह ख़याल नहीं है। मेरा ख़याल है कि दुनिया तेज़ी से आगे बढ़ रही है और वह दिन दूर नहीं, जब हिन्दुस्तान भी चीन की तरह आज़ाद हो जाएगा। आपकी बरसों की कशमकश का और फल हो ही नहीं सकता।"

गांधीजी—(ज़ोर देते हुए) "मगर हम वैसी आज़ादी नहीं चाहते जैसी चीन में है। चीन इस समय चांग-काई-शेक के होते हुए भी बेबस है। चीन के लोग वीर हैं, लड़ाई में अपना जान-माल क़ुरबान करने को तैयार हैं। लेकिन वह फिर भी पूरे आज़ाद नहीं हैं। मैं चीन को जब आज़ाद समझूंगा, जब चीन बर्तानिया और अमरीका से कह सके—'हम अपनी लड़ाई आप लड़ेंगे। हमें तुम्हारी मदद की ज़रूरत नहीं।'"

मैं—"चांग के साथ आपकी मुलाक़ात कैसी रही ?"

गांधीजी—"बहुत अच्छी।"

मैं—(मुस्कराकर) "मगर आप उनकी बातें न समझे होंगे, वह आपकी बातें न समझे होंगे।"

गांधीजी—"मैं उन्हें समझ नहीं सका, शायद इस लिए कि हमारी ज़बान एक नहीं। हमने श्रीमती चांग के ज़रिए एक दूसरे

से बातचीत की थी। लेकिन मेरा ख़याल है इस का सबब सिर्फ़ ज़बान नहीं, कुछ और भी था।"

मैं—"यह सच है कि चीन अभीतक पूरा आज़ाद नहीं है। लेकिन आज़ादी एक दिनमें नहीं आती। अगर हम जीत गए तो चीन आज़ाद हो जाएगा। शायद हम एशिया की शताब्दी के नज़दीक पहुंच जाएं। शायद अगले सालों में चीन और हिन्दुस्तान ही इतिहास को लिखें। मगर मुझे इस बात का ज़रा भी निशान दिखाई नहीं देता कि अंग्रेज़ इस बात को समझते हैं और वह आपके कहने पर यहां से चले जाएंगे। अगर वह सिंगापुर और मलायामें हथियारों की मदद से अपनी रक्षा नहीं कर सके, तो वह हिन्दुस्तानमें सिर्फ़ बुद्धि के ज़ोर से अपनी रक्षा कैसे कर सकते हैं?"

गांधीजी—"मैं चीनपर नुकताचीनी नहीं कर रहा। मेरा मतलब सिर्फ़ यह है कि मैं चीन की नक़ल नहीं करना चाहता। मैं नहीं चाहता कि हिन्दुस्तान भी चीन की तरह बेबस हो जाए। इसीलिए मैं कहता हूं कि हमें यहां अंग्रेज़ और अमरीकन सिपाहियों की ज़रूरत नहीं है। मगर इसके साथ ही मैं यह भी नहीं चाहता कि यहां जरमन और जापानी सिपाही घुस आएं। जापानी हर रोज़ रेड़ियो पर कहते हैं कि वह हिन्दुस्तान को अपना ग़ुलाम नहीं बनाना चाहते, वह सिर्फ़ हमें आज़ाद होने में मदद देना चाहते हैं। मगर मैं उनकी स्हानुभूति और सहायता का स्वागत नहीं करता, क्योंकि मैं जानता हूं, वह दूसरों का उद्धार करने के लिए लड़ाई में नहीं कूदे। मैं हिन्दुस्तान को किसी का भी ग़ुलाम नहीं

देखना चाहता। मैं बेचैन हूं। मैं ज़्यादा इंतज़ार नहीं कर सकता। हमारी हालत चीन और ईरान से भी बुरी है। हो सकता है कि मैं कांग्रेस को अपने ढर्रे पर न ला सकूं। हो सकता है कि कांग्रेस सरकारों में काम करनेवाले लोग त्याग और तपस्या के लिए तैयार न हों। (यह कहकर गांधीजी ने नेहरू की तरफ़ देखा) मगर तब भी मैं अपना काम करता जाऊंगा, और जनता से सीधी प्रार्थना करूंगा। लेकिन जो भी हो, हम झुकेंगे नहीं। शायद हम एक ऐसी व्यवस्था की नींव डाल दें जो सारी दुनियाको हैरान कर दे। मैं कहता हूं, तुम अपने वहम छोड़कर मेरी इस असहयोग-योजना की जांच-पड़ताल करो, और अगर इसमें तुम्हें कोई कमी नज़र आए, तो मुझ से कहो। (यह शब्द गो मुझे कहे गए थे, लेकिन मालूम होता था कि उनका इशारा नेहरू की तरफ़ था। शायद आज की बातचीत में वह एकराय नहीं हुए थे।) इस तरह तुम हमारी मदद कर सकोगे या दूसरे शब्दों में तुम अपनी लेखनी का सही इस्तेमाल कर सकोगे। हिन्दुस्तान पर जो कुछ लिखा जा रहा है, सब बेकार है। इस साहित्यमें कोई नई चीज़ नहीं। सब कुछ एक ही सांचे में ढला हुआ है। मैं कहता हूं कि तुम इस चक्कर से बाहर निकलो। मैं चाहता हूं कि तुम मेरे शब्दों के कुहरे में से मेरा असली मतलब निकाल लो। मैं जानता हूं यह काम मुश्किल है क्योंकि तुम अमरीकन और ब्रिटिश सभ्यता की पूरी तड़क-भड़क और संस्कृति के साथ यहां आए हो। मैं समझ सकता हूं कि शायद तुम वह कोई बात न मानो जो तुम्हारे चक्कर में ठीक न बैठती हो या उस चक्कर के लिए लाभकारी न हो।

लेकिन अगर तुम्हारा दिमाग़ पुरानी लकीर का फ़कीर ही बना रहना चाहता है तो विश्वास करो तुमने सेवाग्राम में अपने दिन बरबाद किए हैं।"

मैं कुछ देर चुप रहा और सोचता रहा कि इसमें से मेरे लिए क्या है, नेहरू के लिए क्या है? इसके बाद बोला—"हां, आप ठीक कहते हैं। लेकिन क्या आप मुझे अपनी नई व्यवस्था की एक झांकी नहीं दिखा सकते? मुझे अपनी व्यवस्था पर इतना भरोसा नहीं कि मैं आपकी व्यवस्था को नामंज़ूर कर दूं। मेरा ख़याल है, हिन्दुस्तान हमें बहुत कुछ दे सकता है। लेकिन आपके ख़यालमें क्या होगा?"

गांधीजी—"आजकल ताक़त के केंद्र नई दिल्ली, कलकत्ता या बम्बई हैं। मैं उस ताक़त को हिन्दुस्तान के सात लाख गांवों में बांट दूंगा। इस तरह यहां कोई ताक़त नहीं होगी। दूसरे शब्दों में मैं यह चाहता हूं कि इंगलैंड के इम्पीरियल बैंक में से सात लाख डालर निकालकर उन्हें सात लाख गांवों में बांट दूं। इस तरह एक एक डालर एक एक गांवके पास चला जायगा, और वह डालर नाश नहीं होगा।

"अगर सात लाख डालर हिन्दुस्तान के इम्पीरियल बैंक में जमा हों तो जापानी जहाज़ का एक बम उन्हें नष्ट कर सकता है। लेकिन अगर यह डालर सात लाख हिस्सेदारों में बंटे हुए हैं तो कोई भी उन्हें उनकी पूंजी से वंचित नहीं कर सकता। तब इन सात लाख इकाइयों में इकट्ठा होने की चाह होगी। और यह अपनी

मन—मरज़ीका मिलाप होगा, नात्सी तरीक़ों से पैदा किया हुआ मिलाप नहीं होगा। आज़ाद मरज़ी के मिलाप से ही सच्ची आज़ादी पैदा होगी, और इस तरह जो नई व्यवस्था जन्म लेगी वह रूस की व्यवस्था से भी बढ़िया होगी। कुछ लोग कहते हैं 'रूसमें बेरहमी है मगर वह बेरहमी दीन—दलितों की भलाई के लिए उपयोग की जाती है, इस लिए भली है।' लेकिन मेरे लिए इसमें कोई भलाई नहीं। किसी न किसी दिन इस बेरहमी में से वह निराज पैदा होगा जो किसी ने नहीं देखा। मगर हमारे यहां ऐसा निराज नहीं होगा। मैं मानता हूं कि हिन्दुस्तानका भावी समाज कैसा होगा यह मैं नहीं जानता। लेकिन अंग्रेज़ोंके आनेसे पहले यहां ऐसी ही व्यवस्था थी, जैसी मैंने तुमसे बयान की है। उस व्यवस्था में कुछ कमज़ोरियां आ गई थीं इसीलिए वह मुग़लों और अंग्रेज़ों के सामने नहीं ठहर सकी। मगर इसके कुछ हिस्से अभी तक बचे हुए हैं। और अगर अब भी अंग्रेज़ हिन्दुस्तानियों के हाथों में सत्ता देकर इन जड़ों पर पानी के कुछ क़तरे डाल दें तो यह जड़ें हरी हो सकती हैं। पौदा—कैसा होगा मैं यह नहीं जानती। लेकिन मैं यह जानता हूं कि वह आजकल के पौदेसे कई दर्जा अच्छा होगा। दुर्भाग्य से अहिन्सा की भावना अब यहां नहीं रही। मगर मैं यह नहीं मान सकता कि दुनियाको बदलनेका २५ साल का परिश्रम अकारथ गया है। नई व्यवस्था घड़ने में कांग्रेसका काफ़ी हाथ होगा, और मुस्लिम लीग भी इसमें हिस्सा लेगी।"

मैं—"मैं चाहता हूं आप सात लाख डालरों के दृष्टांतको ज़रा और आगे बढ़ाएं। जब इंगलैंड के इम्पीरियल बैंक से हर एक गांव को एक एक डालर मिल जाएगा तो वह गांव इस डालर का क्या करेंगे?"

गांधीजी—"बात यह है कि आजकल हिस्सेदारोंको कुछ नहीं मिलता, जो कुछ आता है दलाल ले जाते हैं। अगर डालरोंके मालिक किसान होंगे तो वे जैसा चाहेंगे वैसा करेंगे।"

मैं—"किसान अपने डालर ज़मीनमें गाड़ देंगे।"

गांधीजी—"किसान अपने डालर ज़मीन में नहीं गाड़ेंगे क्योंकि उन्हें ज़िंदा रहना है। वह अपने डालर अपने बैंकमें ज़मा कर देंगे और अपनी मरज़ी से अपनी भलाई के लिए खर्च करेंगे। वह हवा चक्कियां लगा सकते हैं, बिजली पैदा कर सकते हैं, जो चाहें बना सकते हैं। इन सबकी देखरेख मध्यवर्ती सरकार करेगी, लेकिन उसका काम होगा लोगों की मरज़ीका काम चलाना। प्रजा की इच्छा ही उस सरकार की नींव होगी।"

मैं—"तब तो मेरा ख़याल है सरकार ही उद्योगों की बढ़ती करेगी और देशको औद्योगिक उन्नति के रास्ते पर चलाएगी।"

गांधीजी—"मगर इस बातका ख़याल रक्खो कि उस सरकार के पास अंग्रेज़ी फ़ौज नहीं होगी। अगर वह फ़ौज के बग़ैर टिकी रही, तो यही हमारी नई व्यवस्था होगी। और यह उद्देश्य ऐसा नहीं जिसके लिए कोशिश न की जाए। इस उद्देश्य की सिद्धि इस दुनिया में हो सकती है, और इस पर अमल किया जा सकता है।"

मैं—"दस साल पहले शायद मैं आपसे सहमत न होता, मगर आज मैं आपसे सहमत हूं। लेकिन रूस और दूसरी जगहों में मैंने जो कुछ देखा है, उससे मुझे विश्वास हो गया है कि दुनिया का सबसे बड़ा ख़तरा सर्व शक्तिमान राष्ट्र है, जो प्राइवेट आज़ादी को अनहोना बना देता है। यही वजह है कि पूंजीवादी अर्थ व्यवस्था में यह ज़रूरी है कि सरकार व्यक्तिगत मामलों में ज़्यादासे ज़्यादा दख़ल दे। इस तरह सरकार की ताक़त बढ़ जाती है। आने वाली नसलको ऐसे तरीक़े सोचने पड़ेंगे जिनसे ऐसी सरकार की सत्ता की रोकथाम की जा सके। मगर एक सवाल यह है कि क्या हम सर्व शक्तिमान राज्य में प्राइवेट आज़ादी क़ायम रख सकते हैं? दूसरा सवाल यह है कि क्या राष्ट्र एक अंतरराष्ट्रीय सभा में मिलकर काम करेंगे? या वे अंतरराष्ट्रीय भावना पर लात मारकर और लड़ाइयां सहेड़ लेंगे?"

गांधीजी—"मेरा सवाल तो यह होगा कि बड़े राष्ट्रों को बड़े राष्ट्र बनने से कैसे रोका जाए? इसीलिए मैं नहीं चाहता कि मित्र राष्ट्र फ़ासिस्ट राष्ट्रों की तरह काम करें। मैं कहता हूं, एलान करो कि हिन्दुस्तान ठीक कहता है। अंग्रज़ोंको चाहिए कि वह छलांग लगाएं और हिन्दुस्तान को आज़ाद कर दें और अगर ज़रूरत हो तो जब तक लड़ाई चलती है तब तक हिन्दुस्तान की शर्तों पर हिन्दुस्तान में रहें और फिर देखें उन्हें लोगोंकी पूरी पूरी मदद मिलती है या नहीं।"

मैं—"आप आज़ादी के हक़दार हैं, इस बात पर मुझे पूरा विश्वास है। मेरा ख़याल है इससे आपका भी भला होगा, हम सबका

भी भला होगा। अंग्रेज़ोंने अपने साम्राज्य की रक्षा करने और साम्राज्य की सहानुभूति जीतने की योग्यता साबित नहीं की।"

गांधीजी—"यह बात तुम्हें अमरीका से कहनी चाहिए।"

मैं—"मैं कहूंगा, लेकिन इन शब्दोंमें नहीं। ब्रिटेन जितने हथियार ख़रीद रहा है, उन सबके पैसे हम दे रहे हैं। हम हरसाल साठ हज़ार हवाई जहाज़ बना रहे हैं, अगले साल १९४३ में एक लाख चालीस हज़ार बनाएंगे। जहां तक (हिन्दुस्तान में) अमरीका का सवाल है, यहां यह तूफ़ान वक्त से ज़रा पहले आ पहुंचा है। (वह दोनों हंस पड़े) अगर आज हम एक लाख चालीस हज़ार हवाई जहाज़ बनाते और हमारे बीस लाख आदमी मोर्चा पर होते तो शायद लंदन में हिन्दुस्तानके बारेमें हमारे विचारों पर ज़्यादा ध्यान दिया जाता। अंग्रेज़ नहीं जानते एशिया में आज क्या हो रहा है? शायद वह यह बात अमरीका की मदद से कल जान जाएं।"

गांधीजी—"इसीलिए मैं फिर उसी सवाल पर आता हूं और कहता हूं कि जबतक हम उनसे दलीलें करते रहेंगे कि हमारी दरख़्वास्त बिल्कुल न्याय भरी है, तब तक वह हमारी बात नहीं सुनेंगे। उन्हें यह बात तभी समझ में आएगी जब हम कुछ करना शुरू कर देंगे। अंग्रेज़ी इतिहास यही कहता है। उनपर अमलका असर होता है और अब हमें अमल ही करना चाहिए। अब मैं लोगों में प्रचार करूंगा कि हिन्दुस्तान में राष्ट्रीय सरकार होनी चाहिए और उन्हें यह भी बताऊंगा कि मेरी यह योजना

ख़्याली नहीं। अहिन्सा इस योजनाकी नींव है लेकिन मुझे यह साबित करने के लिए कि मेरी योजना न्यायपर क़ायम है अहिन्सा की ज़रूरत नहीं। अगर मैं हिन्सा पर विश्वास रखता तब भी इसी नतीजे पर पहुंचता। तब शायद मैं कहता—'यहां से चले जाओ और हिन्दुस्तान को फ़ौजी अड्डा मत बनाओ।' लेकिन आज मैं कहता हूं—'अगर तुम्हें डर है कि कोई दूसरा देस हिन्दुस्तान को फ़ौजी अड्डा न बना ले तो तुम यहां अपना फ़ौजी अड्डा बनाओ, इज़्ज़तकी शर्तों पर यहां रहो और हमें नुक़सान न पहुंचाओ।' बल्कि मैं इससे भी आगे जाता हूं और कहता हूं—'अगर हिन्दुस्तान की आज़ाद सरकार लड़ाई में हिस्सा लेना चाहती है तो अंग्रेज़ यहांसे मदद भी ले सकते हैं'"

मैं—"अगर अंग्रेज़ मजबूरन आपकी बात मंज़ूर कर लें तो आप अपने सात लाख ग्रामों के प्रजातंत्र का शुरू किस तरह करेंगे?"

गांधीजी—"आज मेरे पास कोई बनी बनाई तजवीज़ नहीं है; न मैं आज तैयार कर सकता हूं। अभी तक यह सिर्फ़ ख़्याली चीज़ है। योजना तैयार करना तो एक प्रतिनिधि-सभा के हाथ में होगा, न कि एक आदमी के हाथ में, जिसे कई लोग सुपने देखने वाला कहते हैं।"

मैं—"मैं ऐसा बेवक़ूफ़ नहीं, कि हाथ के कते हुए सूतके फ़ायदे न समझ सकूं।"

गांधीजी—"मगर तुम साग भाजियों के फ़ायदे तो नहीं समझ सके।"

मैं—“ मैं हर रोज़ सुबह शाम एक ही तरह की भाजियां नहीं खा सकता।” वह हंसे। हम सब हंसे। मैं उठकर चला आया।

दोपहर को मेहमानघर के कमरे में तीन घंटे तक मैं और नेहरू बातचीत करते रहे। नेहरू खाट पर बैठे थे, मैं कुरसी पर बैठा था। मानवीय–सुख, सभ्यता, समाज में कैसे सुधार हों कि आदमी ईमानदारी से जीवन बिता सके, अमरीका, रूस, हिन्दुस्तान कोई भी मज़मून ऐसा न था जिस पर हमने बहस न की हो। अब वह पहले की तरह रूस के हक़ में नहीं हैं, लेकिन चीनके हक़ में अब भी हैं और आज चीनके बारे में ही गांधीजी से बातें करते रहे थे। गांधीजी नेहरू को असहयोग के हक़में कर लेंगे। जब नेहरू यहां आए तो उनके मनमें कुछ शक थे। पहले उनका ख़याल था कि शायद प्रेज़िडेन्ट रूज़वेल्ट हिन्दुस्तानके सवाल में दख़ल देकर ब्रिटेन को सुलह करने के लिए कहेंगे। लेकिन अंग्रेज़ हिन्दुस्तानमें लड़ाई के समय कौभी सरकार बनाने से इंकार करते हैं। इसलिए नेहरू सिवाय इसके और कुछ नहीं कर सकते कि गांधीजी की तजवीज़ को मंज़ूर कर लें।

मैंने नेहरू से कहा कि वह अमरीका जाकर प्रेज़िडेन्ट रूज़वेल्ट से मिलें। मैंने कहा—“ जब कोई देस आज़ादी चाहता है तो अमरीकन लोग उसका साथ देते हैं। और इसके इलावा हिन्दुस्तानमें अमरीका के आर्थिक-स्वार्थ अंग्रेज़ों के आर्थिक स्वार्थों से जुदा हैं।”

हमने हिन्दू धर्म के बारे में भी बातें कीं। नेहरूने कहा—

" हिन्दू धर्म में बुनियादी बातें नहीं हैं, इसलिए आज़ाद-ख़याली के कारण किसी को हिन्दू धर्म से ख़ारिज नहीं किया जा सकता। तुम नास्तिक होकर भी हिन्दू रह सकते हो। जैसा की गांधीजी ने सुबह कहा था-अगर तुम छूत-छात और जात-पात में विश्वास नहीं रखते, तब भी तुम हिन्दू रह सकते हो। इसी तरह तुम धार्मिक हिन्दू होकर भी अपने कमरे में ईसा मसीह की तस्वीर लगा सकते हो, और उनके आदेशों का पालन कर सकते हो।"

८ जून १९४२

नेहरू मेरी चारपाई से एक गज़ दूर सोए थे। उन्होंने कहा— " रात मुझे शोर के कारण नींद नहीं आई।" मैंने कहा " मुझे तो कोई शोर सुनाई नहीं दिया।" वह बोले—" मैं रात को आश्रमके कुछ दोस्तों से बातचीत करने के बाद सवा नौ बजे लौटा। ख़याल था, तुम्हारे साथ बातचीत करूंगा। लेकिन तुम गहरी नींद सो रहे थे।"

सुबह छः बजे गांधीजी रोज़ की तरह आठ-दस सफ़ेद-पोशों के साथ सैर के लिए निकले। आज उनका मौन-दिन था। उन्होंने मुझे कमरे के बाहर खड़ा देखा और अपने हाथ उठाकर मेरा अभिवादन किया। मैंने सुबह टाईप करने और नेहरू से बातचीत करने में बिता दी।

दोपहर को आर्यनायकम् आए। वह कोलम्बिया यूनिवर्सिटी म ड्यूई (Dewey) और थार्नडाइक (Thorndike) के साथ पढ़े हैं और उन्होंने केम्ब्रीज, एडिनबरा और आक्सफ़र्ड की डिग्रियां ली हैं। वह मेरे लिए हत्थ-कती सफ़ेद खादी का सूट और चप्पल लाए थे, क्योंकि उन्होंने देखा था कि सेवाग्राम की रेत ने मेरे स्लीपरों में छेद कर दिए हैं। अमरीका में अपनी पढ़ाई के सिलसिले में उन्होंने मुझे एक बात सुनाई, जो न्यूयार्क जाते हुए उनके साथ अगनबोट 'बेनगारिया' में हुई थी। उनका रंग काला है, इस लिए जहाज़ में भोजनघर के नौकरों ने उन्हें खाना परोसने से इंकार कर दिया। इस बात से उनके दिल को गहरी चोट लगी। बुनीयादी तालीम इनका ख़ास मज़मून है। किसानोंके बच्चों को कातना, बुनना, खेती करना सिखाते हैं। उन्होंने कहा कि १९३७ से १९३९ तक कांग्रेस के मंत्रिमंडलों ने इस तजवीज़ को अपनाया था, लेकिन अंग्रेज़ इसके ख़िलाफ़ थे। उन्होंने मुझे सरकारी ब्रिटिश रिपोर्टों के टुकड़े दिखाए जिनमें कहा गया है कि हिन्दुस्तान में अंग्रेज़ी शिक्षाप्रणाली असफल रही है। उन्होंने कहा कि हिन्दुस्तान की शिक्षा-प्रणाली का एक ही मतलब है, और वह है अंग्रेज़ोंके लिए क्लर्क और सरकारी अफ़सर तैयार करना। इसलिए सरकार को निचले दरजे के लोगों को शिक्षा देने का ख़याल नहीं। वह चाहती है, कि मध्य वर्ग के कुछ लोगों को पढ़ा कर अपने काम का बना ले। फल यह है कि मध्य वर्ग राष्ट्रवादी है।

नेहरू, जो अब तक आर्यनायकम् की बातें सुन रहे थे, बोले—"अंग्रेज़ अमन चैन के समय हिन्दुस्तानमें जितना ख़र्च हथियारों पर करते हैं अगर उसका एक हिस्सा भी शिक्षा पर ख़र्च करते तो हिन्दुस्तानी किसान इतने अनपढ़ न रहते।" आर्यनायकम् ने कहा कि अंग्रेज़ हमेशा बहाना बनाते हैं कि ज़्यादा स्कूल खोलने के लिए उनके पास पैसा नहीं। उन्होंने मुझे सरकारी गिनावे के आंकड़े दिखाए :—१९२१ में हिन्दुस्तानके सात प्रति-सैंकड़ा आदमी पढ़े लिखे थे, १९३१ में यह संख्या आठ हो गई। आर्यनायकम् ने ताने के तौरपर कहा—"ज़रा सोचो, दस सालमें एक प्रति सैंकड़ा की बढ़ती।" अनपढ़ों के विषयमें १९४१ के आंकड़े विश्वास योग्य नहीं हैं।

तीन बजे जब मैं गांधीजी के पास पहुंचा तो उनका मौनव्रत ख़तम हो चुका था। मैंने छूटते ही कहा—"हिन्दुस्तानके सबसे बड़े और मुश्किल सवाल का तो हमने ज़िकर ही नहीं किया।"

गांधीजी—"किस सवाल का?"

मैं—"हिन्दुस्तानकी आबादी हर साल पचास लाख बढ़ जाती है। १९३१ में तेतीस करोड़ १९४१ में अड़तीस करोड़ अस्सी लाख। पांच करोड़ और आदमियों के लिए खाना चाहिए, कपड़ा चाहिए, रहने के लिए मकान चाहिए। दस सालमें और पांच करोड़ बढ़ जाएंगे। उनका आप क्या करेंगे?"

गांधीजी—"एक तरीक़ा यह है कि हम औलाद रोकने के तरीक़े इस्तेमाल करें। लेकिन मैं इसके सख़्त ख़िलाफ़ हूं।"

मैं—"मैं नहीं हूं। लेकिन हिन्दुस्तान जैसे पछड़े हुए मुल्क में यह तरीका ज़्यादा सफल नहीं होगा।"

गांधीजी—(मुस्कराकर) "तब शायद हमें महामारियों की ज़रूरत पड़ेगी।"

मैं—"या आपसी लड़ाई की। लेकिन सोवियट रूस में अकाल भी पड़ा, महामारियां भी आईं, आपसी युद्ध भी हुआ। फिर भी वहां की आबादी बढ़ती गई और १९२५ में बोल्शेविकों को इसे रोकने के लिए कुछ आर्थिक (माली) उपाय करने पड़े।"

गांधीजी—"तुम मुझसे कहलाना चाहते हो कि हमें ज़्यादासे ज़्यादा मिल कारख़ाने खोलने पड़ेंगे। लेकिन मैं यह नहीं मानता। हमारा पहला काम अंग्रेज़ी ताक़त से छुटकारा पाना है। तब हम हिन्दुस्तानको जिन चीज़ों की ज़रूरत होगी वह बना सकेंगे और हमें रोकने टोकने वाला कोई न होगा। अंग्रेज़ हमें कुछ कारख़ाने बनाने देते हैं, कुछ कारख़ाने नहीं बनाने देते। और मेरे लिए सबसे बड़ा सवाल है अंग्रेज़ी सत्ता को ख़त्म करना।"

यह साफ़ था कि वह इसी मज़मून पर बातें करना चाहते थे। भविष्यकी बातों में उनकी दिलचस्पी बहुत कम थी। मैंने पूछा—"अपने आनेवाले असहयोग आंदोलन के बारेमें आपका क्या ख़याल है! यानी वह क्या शक्ल अख़्तियार करेगा?"

गांधीजी ने जवाब दिया—"गावोंमें किसान लगान देना बंद कर देंगे और सरकार के मना करने पर भी नमक बनाएंगे। देखने

में यह बात छोटी मालूम होती है; नमक के महसूल से ब्रिटिश सरकार को बहुत कम आमदनी होती है । लेकिन जब किसान महसूल देना नामंज़ूर करेंगे तो उनमें हिम्मत पैदा होगी कि वह स्वतंत्र कार्य भी कर सकते हैं । और इसके बाद दूसरा क़दम होगा ज़मीन पर अधिकार जमाना ।"

मैं—"हिन्सा के साथ ?"

गांधीजी—"हिंसा के साथ भी हो सकता है । लेकिन शायद ज़मींदार भी उनके साथ मिल जाएं।"

मैं—"आप आशावादी हैं ।"

गांधीजी—"शायद ज़मींदार भाग खड़े हों, और इस तरह किसानों का साथ दें ।"

नेहरू, जो मेरे साथ ही बैठे थे, बोले—"वह ज़मीन की ज़ब्तीके लिए अपनी टांगों से वोट देंगे । तुम्हारी किताब Men and Polities में लिखा है कि रूसी सिपाहियों ने १९१७ में शांति के लिए अपनी टांगों से वोट दिये यानी वे खाइयों में से भाग गए । इसी तरह यहां के ज़मींदार भी गांवसे भागकर अपनी ज़मीन की ज़ब्ती के लिए वोट दे सकते हैं ।"

मैं—"और डटकर मुक़ाबला भी कर सकते हैं ।"

गांधीजी—"पंद्रह दिन तक खलबली मच सकती है, लेकिन मेरा ख्याल है हम जल्दी ही इसे संभाल लेंगे ।"

मैं—"तो आपका ख़याल है, ज़मीन की क़ीमत दिए बिना

ही उसे ज़ब्त कर लिया जाएगा ?"

गांधीजी—"बेशक ! क़ीमत देने के लिए हमारे पास पैसा ही कहां है ?"

मैं—"यह तो हुआ गांव के बारे में। मगर सारा हिंदुस्तान तो गांव नहीं।"

गांधीजी—"नहीं। शहरों के मज़दूर कारख़ानों से बाहर निकल आएंगे। रेलगाड़ियां बंद हो जाएंगी।"

मैंने दिल में कहा—पूरी हड़ताल, ज़बान से कहा—"मुझे मालूम है कि पिछले दिनों बहुत से किसान आपके साथ थे। मगर शहरों के मज़दूर आपके साथ नहीं।"

गांधीजी—"ठीक है, शहर के ज़्यादा लोग मेरे साथ नहीं। लेकिन इस बार शहर के मज़दूर भी मेरे साथ होंगे क्योंकि जहां तक मैं देसकी हालत समझता हूं हरएक हिन्दुस्तानी आज़ादी के लिए बेताब है; चाहे वह हिन्दू हो, मुसलमान हो, अछूत हो, सिख हो, मज़दूर हो, किसान हो, मिलमालिक हो, सरकारी अफ़सर हो, या चाहे राजा हो। राजे भी जानते हैं कि आजकल नई हवा चल रही है। दुनिया हमेशा इसी तरह नहीं रहेगी जिस तरह आजकल है। अंग्रेज़ों की ताक़तें अपने ऊपर क़ायम रखने के लिए हम लड़ाई में मदद नहीं दे सकते। जब हिन्दुस्तान ख़ुद प्रजातंत्र नहीं तो जापान, जर्मनी और इटली में प्रजातंत्र क़ायम करने के लिए हम कैसे लड़ सकते हैं ? मैं चीन को बचाना चाहता हूं। मैं चाहता हूं चीन को ज़रा नुक़सान न पहुंचे। मगर मदद

हम तभी देंगे, जब हम आज़ाद होंगे। जो आप आज़ाद नहीं है, वह दूसरों की आज़ादी के लिए क्या लड़ेगा ?"

मैं—"क्या आपका ख़याल है कि मुसलमान भी आपके असहयोग आंदोलन में हिस्सा लेंगे ?"

गांधीजी—"शुरू शुरूमें शायद न लें। मगर जूं ही वह देखेंगे कि हमारा आंदोलन सफल हो रहा है वह हमारे साथ हो जाएंगे।"

मैं—"क्या यह नहीं हो सकता कि आंदोलन को रोकने के लिए मुसलमानों का इस्तेमाल किया जाए ?"

गांधीजी—"हो सकता है कि उनके नेता या सरकार यह कोशिश करें। मगर हिन्दुस्तान के करोड़ों मुसलमान आज़ादी के ख़िलाफ़ नहीं हैं इसलिए वह अज़ादी की लड़ाई में हमारा विरोध नहीं करेंगे। जहां तक हिन्दुस्तानकी आज़ादी का सवाल है, मुसलमान कांग्रेस के साथ हैं। इसी बुनियाद पर हिन्दू-मुस्लिम एकता का महल खड़ा किया जा सकता है।"

मैंने गांधीजी को आबादी के सवाल की तरफ़ लाने का एक बार फिर जतन किया, लेकिन उन्होंने फिर भी यही कहा—"अगर यहां बड़े पैमाने पर कल कारख़ाने बनाने पड़े तो सरकार को ही आगे बढ़ना होगा।"

शामको मैं महादेव देसाई की कुटिया में गया। वह सूत कात रहे थे। वह गांधीजी के अंग्रेज़ी साप्ताहिक 'हरिजन' के सम्पादक हैं और उन्होंने गांधीजी की आत्मकथा लिखने में भी मदद की

है। पच्चीस बरस की उमर में वह वकालत छोड़कर गांधीजीके पास आए थे, और अब तक उनके पास हैं। उन्होंने मुझ से कहा—"परदेसियों से गांधीजी ने १९३९ से लेकर आजतक जो बातें की है, उनमें से आपके साथ की गई बातें सबसे ज़्यादा ज़रूरी हैं। गांधीजी जो कुछ कहते हैं, मैं उसकी पूरी पूरी नक़ल रखता हूं। मेरे पास आपकी बातों के नोट भी हैं।" वहां फ़र्श पर बैठे हुए मैं समझ रहा था, कि चरखे की चाल कितनी आरामदेह और शान्तिजनक हो सकती है।

मैंने कहा—"इतने दिनों से मैं गांधीजी की बातें सुन रहा हूं। हरएक मुलाक़ात के बाद मैं उनकी बातें लिख लेता हूं। तब उन्हें एक बार फिर पढ़ता हूं, और गांधीजी के प्रभाव की तहतक पहुँचनें की कोशिश करता हूं। अभी तक मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूं कि गांधीजी के प्रभाव का सबब उनकी व्यग्रता (Passion) है।

देसाई जी बोले—"आपका ख़याल ठीक है।"

मैं—"इस भावना का मूल क्या है?"

देसाई जी—"यह भावना तब पैदा होती है, जब आत्मा देह के पापों से ऊपर उठ जाता है।"

मैं—"कामके ऊपर?"

देसाईजी—"काम, क्रोध और लोभ के ऊपर। गांधीजी अपनी भूल मान सकते हैं, अपने आपको सज़ा दे सकते हैं, दूसरों के दोष अपने ऊपर ले सकते हैं। एक सत्याग्रह आंदोलन

में हिंसा शुरू हो गई, तो उन्होंने आंदोलन बंद कर दिया था। गांधीजी का अपने ऊपर पूरा क़ाबू है। इसीलिए उनमें भावना और काम करने की ताक़त बहुत है।"

मुझे मालूम हुआ, कि हिन्दुस्तानी लोग पच्छम वालों से कहीं ज़्यादा ईमानदार हैं। वह अपने बारेमें ज़्यादा ईमानदारी से बात करते हैं। वह अपने मन को ज़्यादा अच्छी तरह पढ़ते हैं और अपने ऊपर ज़्यादा अच्छी तरह आलोचना कर सकते हैं।

९ जून १९४२

मैंने कल हैदराबाद जानेका फ़ैसला कर लिया है। हैदराबाद निज़ाम की राजधानी है और निज़ाम दुनिया का सबसे अमीर आदमी है, जो अंग्रेज़ों की मदद से एक करोड़ साठ लाख आदमियों पर राज करता है। मैं सेवाग्राम में कुछ दिन और ठहरता और ख़ुद गांधीजी ने भी मुझे कुछ देर और ठहरने को कहा है। लेकिन मैं यहां दो तीन दिन के लिए आया था। सो अब मुझे चलना ही चाहिए। मैंने दाढ़ी बनाकर नाश्ता किया और साढ़े पांच बजे उस जगह पहुंच गया जहां गांधीजी बैठे आमका रस पी रहे थे। मुझे देखकर बोले—"एक दफ़ा जब मैं बंगाल में था, और मुझे बहुत ज़्यादा काम करना पड़ता था तो मैं बराबर कई दिन तक सिर्फ़ आमका रस ही पीता रहा था।"

मैंने कहा—"अगर किसी अंग्रेज़ या अमरीकन को ज़्यादा मेहनत करनी पड़े तो वह सिर्फ़ गोमांस पर ज़िन्दा रहे।"

गांधीजी—"यही तो फ़र्क है। अंग्रेज़ों के पास भाजियों की ज़्यादा क़िस्में नहीं–हर समय आलू और पत्ता गोभी।"

हम बातें कर रहे थे, और महात्माजी का भतीजा कनू गांधी हमारी तस्वीरें ले रहा था।

जब हम सैर को चले तो मैंने कहा—"अपने काम और दुनिया के सवालों में आप बहुत वास्तविक हैं। मैं चाहता हूं, आप अपने बारे में भी वास्तविक हों। यह व्यक्तिगत (ज़ाती) सवाल नहीं राजनैतिक सवाल है। आपका लोगों पर इतना असर क्यों है?"

गांधीजी—"तुमने जिस भाव से यह सवाल पूछा है, मैं वह भाव समझ गया हूं। मेरा ख़याल है कि मेरे असर का कारण सचाईकी उपासना है। सचाई मेरा ध्येय है।"

मैं—"मैं सचाई की ताक़त मानता हूं, लेकिन सिर्फ़ इतना जवाब काफ़ी नहीं। हिटलर जैसे लीडरों ने झूठ बोल बोलकर ताक़त हासिल की है। मेरा मतलब यह नहीं कि आप सच बोल-कर लोगों पर असर नहीं डाल सकते। लेकिन इस देस में या दूसरी जगहों में सिर्फ़ सच ही की फ़तह नहीं होती रही। आपके पास ताक़त का कोई सामान नहीं, न आपके पास राजसत्ता है, न पुलिस है, न संगठित संस्था है। क्योंकि मेरी राय में कांग्रेस संयमयुक्त संगठित संस्था नहीं है। फिर क्या सबब है कि आप

करोड़ों लोगों पर अपना असर डालने में सफल हुए हैं यहां तक कि वे अपना समय, अपना आराम, अपनी ज़िन्दगी तक क़ुर्बान करने को तैयार हो जाते हैं।"

गांधीजी—"सच सिर्फ़ मुंहसे कहने की चीज़ नहीं। सच जीवन में समाने की चीज़ है।" वह चुप हो गए। पर मुझे ऐसा मालूम हुआ जैसे वह कह रहे हैं—ज़रा मेरे सादे जीवन पर विचार करो। फिर बोले—"यह ठीक है कि मेरे पास साज़-सामान नहीं है, न मैं ज़्यादा लिखा-पढ़ा हूं न ज़्यादा पढ़ता हूं।"

मैंने कहा—"मेरा ख़याल है, कि जब आप आज़ादी की बात करते हैं, तो आम हिंदुस्तानियों के मनके तार बज उठते हैं, जैसे गवैया सुनने वालों के मनमें हलचल मचा देता है। आप वह सुर निकालते हैं जिसे सुनने के लिए हिन्दुस्तानी अधीर हैं। मैंने देखा है कि जिस बात को लोगों ने बार बार सुना है और पसंद किया है उसे ही सुनकर वह वाह वाह करते हैं। लैक्चर सुनने वाले अपनी पसन्द के विचार सुनते हैं तो तालियां बजाते हैं। क्या आप वही बातें नहीं कहते और वही बातें नहीं करते जो लोग पसंद करते हैं?"

गांधीजी—"हो सकता है। मगर मैं १८९६ तक राज़भक्त था, बाद में बाग़ी हो गया।"

मैं—"क्या आप १९१४ से १९१८ तक भी राजभक्त नहीं थे?"

गांधीजी—"था, लेकिन पूरे तौरपर नहीं। १९१८ में

मैं कहने लग गया था, कि हिन्दुस्तान पर अंग्रेज़ी सत्ता बाहरी सत्ता है और इसका ख़ात्मा हो जाना चाहिए।" वह चुप हो गए और कुछ देर तक चुपचाप चलते रहे। फिर बोले—"अब मैं तुम्हें यह बताता हूँ कि मैंने अंग्रेज़ों को यहां से चले जाने को कहने का फ़ैसला कैसे किया। १९१६ की बात है। मैं लखनऊ में था। एक किसान मुझ से मिलने आया; आम किसानों की तरह ग़रीब और दुबला पतला। उसने कहा—'मेरा नाम राजकुमार शुक्ल है। मैं चम्पारन का रहनेवाला हूं। वहां के किसानों की हालत बुरी है। आप मेरे साथ वहां चलें।' चम्पारन लखनऊ से सैंकड़ों मील दूर है। लेकिन उसने मेरा पीछा न छोड़ा और मेरी मिन्नतें करता रहा। आख़िर मैंने मान लिया कि मैं चलूंगा। उसने तारीख़ मांगी, लेकिन मैं तारीख़ न दे सका। कई हफ़्ते राजकुमार शुक्ल मेरे पीछे पीछे फिरता रहा। जहां मैं जाता, वहां वह भी जाता। जहां मैं ठहरता, वहां वह भी ठहरता। १९१७ के शुरू में मैं कलकत्ते में था। राजकुमार शुक्ल ने मुझे कहा, अब चम्पारन चलो। चम्पारन में नीलकी खेती होती है। मैंने वहां के किसानों से मिलनेका फ़ैसला किया। मगर यह सोचकर कि मुझे दूसरी तरफ़ की बात भी सुननी चाहिए, मैंने वहां के अंग्रेज़ कमिश्नर से भी मिलनेका इरादा किया। लेकिन जब मैं कमिश्नर से मिलने गया तो उसने मुझे धमकी दी और कहा—'इस ज़िले से फ़ौरन निकल जाओ।' मैंने उसका हुक्म न माना, और हाथी पर चढ़कर एक गांव देखने चल पड़ा। कुछ ही दूर गया हूंगा कि मेरे पीछे पीछे पुलिसका एक आदमी आ पहुंचा। उसने मुझे नोटिस दिया, कि चम्पारन से

निकल जाओ। पुलिस का आदमी मुझे वहीं वापस ले आया जहां से मैं चला था। यहां मैंने सत्याग्रह किया, और ज़िले से बाहर जाने से इनकार कर दिया। मकान के चारों तरफ़ भीड़ जमा हो गई। मैंने भीड़ को बस में रखने में पुलिस की मदद की, और पुलिस के आदमी मेरे दोस्त बन गए। चम्पारन में वह दिन मेरी ज़िन्दगी का सब से बड़ा दिन था, जब मुझपर मुक़दमा चलाया गया। सरकारी वकीलने मजिस्ट्रेट से कहा कि मुक़दमा रोक दिया जाए, लेकिन मैंने कहा मुक़दमा अभी चलना चाहिए। मैं खुल्लम खुल्ला कहना चाहता था कि मैंने चम्पारन से निकल जाने के हुक्म की नाफ़रमानी की है। मैंने मजिस्ट्रेट से कहा—'मैं यहां की हालत देखने आया हूं। और चूंकि मैं अपने आत्मा की आवाज़ के मुताबिक काम कर रहा हूं, और आत्मा की आवाज़ अंग्रेज़ी क़ानून से ऊंची है, इसलिए मैंने अंग्रेज़ी क़ानून की बेपरवाही की है।' अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ मेरा यह पहला सत्याग्रह था। मैं यह उसूल क़ायम करना चाहता था कि मैं शांति पूर्वक काम के लिए अपने देसमें हर जगह जा सकता हूं और गर्वनमेंट को कोई अधिकार नहीं कि वह मुझे वहां से निकल जाने का हुक्म दे। मैंने अपना कुसूर मान लिया। सरकार ने बार बार कहा कह दो, 'मैं दोषी नहीं।' आखिर में मेजिस्ट्रेट ने मुक़दमा वापस ले लिया। असहयोग की जीत हुई, और आज़ादी का नुसख़ा हिन्दुस्तान के हाथ आ गया।"

मैं—"गोया यह आपकी सफलता का दूसरा राज़ है।"

गांधीजी—"बात मामूली थी। मैंने सिर्फ़ यह कहा कि मुझे अपने देसमें अंग्रेज़ हुक्म नहीं दे सकते कि, यहां जाओ, वहां न जाओ।"

मैं—"बात मामूली थी, मगर पहल का सेहरा आपके सिर था। यह कोलम्बस और अंडे की सी बात हो गई।"

गांधीजी—"वह क्या?"

मैंने वह कहानी सुनाई। गांधीजी हंस कर बोले—"बिल्कुल ठीक! यह कहना कि मुझे अपने देस में हर जगह जाने का हक़ है, मामूली बात थी। मगर यह मामूली बात मुझसे पहले किसी ने न कही थी।"

इस समय तक हम गांधीजी की कुटिया के पास लौट चुके थे। मैं जब तीन बजे अपनी रोज़ाना मुलाक़ात के लिए आया, तो गांधीजी नेहरू के साथ बातें कर रहे थे। उन्होंने मुझ से दस मिनट की मुहलत मांगी। वह शौच गए, और वापस आकर चटाई पर लेट गए। उनके एक मंत्री ने उन्हें एक ख़त दिया। गांधीजी उसे पढ़ते जाते थे और मुस्कराते जाते थे। जब उन्होंने पन्ना उलटा, तो मुझे मालूम हुआ कि उसपर संगीत लिखा है। खुरशेद बहन कमरे में ही थीं। गांधीजी उनकी तरफ़ मुड़कर बोले—"लो, मुझे गाकर सुनाओ।" खुरशेद बहन ने गुनगुनाते हुए कुछ पद पढ़े। तब मैंने वह ख़त मांगा और अपने साथ अमरीका ले आया। इस ख़त पर तारीख़ की जगह लिखा था:—"युनाइटेड स्टेट्स आव

अमेरिका, हालीवुड, केलीफ़ोर्निया, १९३५ नार्थ होबार्ट बुलेवार, मार्च १०, १९४१ " पता लिखा था:—" महात्मा गांधी, इंडियन नेशनल कांग्रेस, इंडिया।" नीचे मारीस मेनीक (Marius Mannik) के दस्तख़्त थे। ख़तका मज़मून यह था:—

" प्रिय महात्मा गांधी, प्रजातंत्र भावना के साथ मैं यह गाना आपको भेज रहा हूं। आशा है आप इसे इसी भावना से कुबूल करेंगे। मैं देर से आप का भक्त हूं। सरलतापूर्ण आपका ———।" गाने का नाम था " चलो धुरी राजको हराएं," और समर्पण किया गया था—" जनरल मेकआर्थर और उसकी फ़ौज को।" गाना यह था—

चलो, ज़ालिम धुरी राष्ट्रों को हराने के लिए अपनी कुल्हाड़ियां तेज़ करें। हमारा विश्वास, हमारा काम, हमारे टैक्स दुश्मन से हमारा बचाव करेंगे, इसलिए चलो ज़ालिम धुरी राष्ट्रों को हराने के लिए अपनी कुल्हाड़ियां तेज़ करें; और तब तक तेज़ करते रहें जब तक नोम (*Nome*) से पुराने डामस्कस (*Damascus*) तक अत्याचार बंद न हो जाए।

जब हंसी रुकी तो गांधीजी ने मेरी तरफ़ मुड़कर कहा—" हां, अब गोलाबारी शुरू करो।"

मैं—" मगर गांधीजी, यह तो हिंसा होगी।"

गांधीजी—" तो क्या तुम हिंसा के विरुद्ध हो?"

मैं—" क्या आपने मेरे मुंह से कोई ऐसी बात सुनी है कि मैं हिन्सक हूं या अहिन्सक?"

गांधीजी—(हंसते हुए) " तुम्हारे कहने की ज़रूरत नहीं। मैंने तुम्हें देखा और समझ गया। "

मैं—" अगर आपका आनेवाला असहयोग आंदोलन हिंसक हो जाए, जैसा पहले भी कई बार हुआ है, तो क्या आप इसे बंद कर देंगे ? "

गांधीजी—" मेरे लिए आजकलकी हालत में यह कहना ग़लत होगा कि ऐसी कोई बात नहीं होगी जिससे मुझे यह आंदोलन बंद करना पड़े। पिछले वर्षोंमें मैं बहुत सावधान रहा हूं। मेरी अपनी और मेरे साथियों की शिक्षा के लिए यह सावधानी ज़रूरी थी। लेकिन पिछले मौक़ोंपर मैंने जैसा किया है, वैसा अब नहीं करूंगा। "

मैं—" मैं जल्दी ही यहां से जा रहा हूं, इसलिए मैं आपके विचार ठीक ठीक समझ लेना चाहता हूं। जो कुछ आप चाहते हैं और जो कुछ अंग्रेज़ देनेके लिए तैयार हैं, क्या इन दोनों में किसी समझौते की उम्मीद है ? और क्या आप क्रिप्स योजना का सुधरा हुआ संस्करण मंज़ूर करेंगे ? "

गांधीजी—" नहीं, हम क्रिप्स योजना के आधार पर कोई चीज़ मंज़ूर नहीं करेंगे। मैं चाहता हूं कि अंग्रेज़ यहां से पूरी तरह चले जाएं। मैं समझौता-पसंद आदमी हूं क्योंकि मुझे खुद विश्वास नहीं कि मैं ठीक हूं या ग़लत हूं। लेकिन इस समय मेरे अंदर का भविष्य मुझपर छाया हुआ है। यहां से या तो उन्हें निकलना पड़ेगा या वह यहीं रहेंगे। मैं यह नहीं कहता कि यहां

से हरएक अंग्रेज़ को यहां से जाना पड़ेगा। लेकिन मैं यह ज़रूर कहता हूं कि राजसत्ता अंग्रज़ों के हाथ से निकलकर हिन्दुस्तानियों के हाथों में आ जाए।"

मैं—"अगर आंदोलन शुरू होने पर अंग्रेज़ आपका कहना मान जाएं, तो क्या उन्हें उसी समय राजसत्ता आपको सौंप देनी पड़ेगी?"

गांधीजी—"सत्ता सौंपने का काम अंग्रेज़ों को दो दिन या दो हफ़्तों में नहीं करना पड़ेगा। लेकिन पूरी पूरी राजसत्ता उन्हें यह समझकर हमारे हवाले करनी पड़ेगी, कि यह उन्हें वापस नहीं मिलेगी।"

मैं—"अगर अंग्रेज़ कहें कि वह लड़ाई के बाद जाएंगे, तो?"

गांधीजी—"नहीं, इस तरह मेरी तजवीज़ की कोई क़ीमत नहीं रहती। मैं उन्हें अभी निकल जानेको इसलिए कहता हूं, ताकि हम रूस और चीन की मदद कर सकें। आज हम ऐसा नहीं कर सकते। यह मेरा मनुष्यप्रेम है जिसके कारण मैं यह योजना अंग्रेज़ों के सामने रख रहा हूं। इस समय मेरी नज़रों में हिन्दुस्तान नहीं है। मैंने सिर्फ़ हिन्दुस्तान के लिए कभी आज़ादी नहीं मांगी। मैंने कुएं का मेंढ़क बनने की कभी कोशिश नहीं की।"

मैं—"गांधीजी, पहले तो आपका ऐसा ख़याल नहीं था।"

गांधीजी—"यह सारी योजना मेरे अंतर में दिन दिन खिलती जा रही है। अंग्रेज़ों को यहां से चले जानेको कहने का ख़याल भी

मुझे अचानक आया था। यह क्रिप्स की असफलता का फल है। इस ख़याल ने क्रिप्स के जाते ही मुझ पर क़ाबू पा लिया।"

मैं—"मगर यह ख़याल आपको सूझा कब?"

गांधीजी—"क्रिप्स के जाने के बाद। जब मैंने होरेस एलेक्जेंडर के ख़त का जवाब दिया तो यह ख़याल मेरे मन में घर कर चुका था। फिर प्रचार शुरू हुआ। फिर मैंने एक प्रस्ताव तैयार किया। मेरा पहला ख़याल यह था कि हमें क्रिप्स मिशन की असफलता का जवाब देना चाहिए वर्ना बहुत बुरा होगा। ख़याल आया, अगर मैं उन्हें यहांसे चले जाने को कहूं तो कैसा रहे? जब हमारे दिलकी बड़ी बड़ी आशाएं रौंदी गईं तो यह ख़याल पैदा हुआ। हमने जवाहरलाल और दूसरों से क्रिप्स के बारे में अच्छी अच्छी बातें सुनी थीं। मगर यह योजना निष्फल हुई। मैंने अपने आपसे पूछा, इसका इलाज क्या है? अंग्रेज हमारे रास्ते में खड़े हैं, इनका क्या किया जाए? जिस दिन यह ख़याल मेरे मन में पैदा हुआ, उस दिन सोमवार था और मेरा चुप-रोज़ा था। इस चुप्पी से मेरे अंदर इतने ख़याल पैदा हुए कि मुझे चुप, ने घेर लिया, और मुझे ख़यालों ने घेर लिया और मेरे मन ने कहा कि मुझे रूस और चीन और हिन्दुस्तान के लिए कुछ करना चाहिए। चीनके साथ मेरी हमदर्दी है। मुझे वह पांच घंटे कभी नहीं भूल सकते जो मैंने चांग-काई-शेक और उनकी पत्नी के साथ बिताए हैं। सिर्फ़ चीनके लिए ही मैं कुछ करना चाहता था। मेरे ख़यालों पर दुनिया भर के दुख छा गए।"

मैं—“आप इस लड़ाई के ख़त्म होने का इंतज़ार क्यों नहीं कर सकते ?”

गांधीजी—“मैं इस लड़ाई के बीचही में कुछ करना चाहता हूं।”

मैं—“क्या आपके पास इस आन्दोलन को चलाने के लिए कोई जमात है ?

गांधीजी—“मेरे पास कांग्रेस है। लेकिन अगर कांग्रेसने मेरा साथ न दिया तो मैं आप अपनी जमात बन जाऊंगा। आज मुझे एक ख़याल ने अपने बस में कर लिया है। अगर ऐसे आदमी को जमात न मिलेगी, तो वह आप अपनी जमात बन जाएगा।”

मैंने कहा—“क्या आपको देस पर पूरा पूरा भरोसा है ? क्या लोग आपकी आज्ञा का पालन करेंगे ? इस आंदोलन में लोगों को बहुत क़ुरबानियां करनी पड़ेंगी। क्या आपके इस विचार का किसी ने विरोध नहीं किया ?”

गांधीजी—“आज मुझे राजगोपालाचारी का ख़त आया है। वह इस ख़यालके ख़िलाफ़ हैं, और मैं उनके विचारों से वाकिफ़ हूं। वह पाकिस्तान का ख़ात्मा करने के लिए मुस्लिम लीग के साथ काम करना चाहते हैं। तब आप ही सोच सकते हैं कि मुस्लिम लीग उनके साथ काम करने को कैसे तैयार हो जाएगी ?”

मैं—“क्या आपका ख़याल है कि जिन्ना पाकिस्तान पर हमेशा अड़ा रहेगा ? शायद वह मोलतोल कर रहा हो। शायद हिन्दू-मुसलमानों का समझौता हो जानेपर वह इस ख़याल को छोड़ दे।”

गांधीजी—"वह इस मोलतोल के ख़याल को तभी छोड़ेगा, जब अंग्रेज़ यहां से चले जाएंगे, या उस वक्त छोड़ेगा, जब उसके साथ मोलतोल करनेवाला और कोई नहीं रहेगा।"

मैं—"तो क्या आप यह आंदोलन शुरू करने से पहले अंग्रेज़ों को ख़बर दे देंगे?"

गांधीजी—"हां।"

मैं—(हंसकर) "बेहतर होगा कि आप उन्हें ज़्यादा देर पहले ख़बर न दें।"

गांधीजी—"क्या तुम मुझे कुछ सुझा रहे हो?"

मैं—"नहीं।"

वह मुझे ढाढ़स देते हुए बोले—"उन्हें समय पर ख़बर मिल जाएगी।"

मैं—"अगर आप इस चीज़ को इतिहास की नज़र से देखें, तो आपको मालूम होगा कि आप एक नई बात कर रहे हैं। आप एक साम्राज्य के ख़ात्मे का डंका बजा रहे हैं।"

गांधीजी—"यह तो एक बच्चा भी कर सकता है। मैं सिर्फ़ लोगों की बुद्धि से अपील करूंगा। शायद वह जाग उठें!"

मैं—"अब हमें यह सोचना है, कि इसका दुनिया पर क्या असर पड़ेगा। शायद आपके मित्र चीन और रूस ही आपसे कहें कि यह आंदोलन अभी शुरू न कीजिए।"

गांधीजी—"उन्हें कहने दो। मैं शायद उन की बात मान

जाऊं। लेकिन अगर मैं समय पर अपनी योजना उनके पास भेज सकूं तो शायद वह ही मेरी बात मान लें। तुम अगर यहां के हाकिमों तक पहुंच सको तो उन्हें यह बात कह देना। तुम बहुत अच्छे श्रोता हो। तुममें बनावट नहीं है। तुम यहां के हाकिमों से इस के बारे में बातचीत करो ताकि अगर मेरी योजना में कुछ गलती हो तो मुझे मालूम हो जाए।"

मैं—"क्या आपकी तरफ़ से मुझे इजाज़त है कि मैं वायसराय से बातचीत करूं?"

गांधीजी—"हां, मेरी तरफ़ से इजाज़त है। वायसराय मेरे साथ बातचीत कर सकते हैं। शायद उनके साथ बातचीत करके मेरी राय बदल जाए। मैं अक्खड़ नहीं हूं। मैं कोई ऐसा काम नहीं करना चाहता जिससे चीनको नुक़सान पहुंचे।"

मैं—"और अमरीका को?"

गांधीजी—"अगर अमरीका को नुक़सान पहुंचेगा तो सबको नुक़सान पहुंचेगा।"

मैं—"अगर आपके रुख़ के बारे में प्रेज़िडेन्ट रूज़वेल्ट को ख़बर दी जाए, तो क्या आपको एतराज़ होगा?"

गांधीजी—"नहीं। मगर मैं किसी से अपील नहीं करना चाहता। मैं सिर्फ़ यह चाहता हूं कि प्रेज़िडेन्ट रूज़वेल्ट को मालूम हो जाए कि मेरे क्या विचार हैं, मैं क्या करना चाहता हूं और कि मैं सुलह के लिए सदा तैयार हूं। अपने प्रेज़िडेन्ट से कहना, गांधी चाहता है कोई उसका विचार बदल दे।"

मैं—"क्या आपका ख़याल है, कि आंदोलन शुरू करने पर सरकार सख़्ती करेगी?"

गांधीजी—"हां! और मैं इसके लिए तैयार हूं। मैं जानता हूं मैं गिरफ़्तार हो जाऊंगा।"

दोपहर को महादेव देसाई मुझ से मिलने आए, तो मेरे लिए गांधीजी की जीवनी लेते लाए। उन्होंने कहा—"आप यहां से जाकर क्या करेंगे," इसके बारेमें गांधीजीने मुझसे बातचीत की है। और हम दोनों इसी नतीजे पर पहुंचे हैं, कि गांधीजी से की गई बातचीत का जो हिस्सा आप चाहें यहां के वायसराय या अपने प्रेज़िडेन्ट तक पहुंचा सकते हैं। गांधीजी वायसराय से "आज के सवाल पर बातचीत करने के लिए बिल्कुल तैयार हैं।"

शाम के खाने पर गांधीजी ने मुझ से कहा—"तुम्हारे जाने पर दो बातें होंगी। एक तो यह कि ख़ुरशेद बहन को उदासी लगेगी, क्योंकि यहां कोई आदमी ऐसा नहीं होगा, जिसकी वह देखभाल कर सकें। दूसरे मुझे उदासी होगी, क्योंकि दोपहरको तुम अपने बंधे हुए समय पर मुझ से मिलने नहीं आओगे।"

मैं—"मैं कुछ दिन और भी रहना पसंद करता। और शायद मैं वर्धा में एक बार फिर आप से मिलने आऊँ, जब कांग्रेस कमेटी आप की योजना पर बहस करने को इकट्ठी होगी।"

गांधीजी—"कमेटी की बैठक पंद्रह दिन के अंदर अंदर होनेवाली है, लेकिन तुम जब चाहो आ सकते हो।" फिर उन्होंने पूछा—"तुम्हें सेवाग्राम में नींद कैसी आती रही है?"

मैं—"जैसी मज़ेकी नींद मुझे यहां आई है, वैसी कई सालों तक नहीं आई।"

गांधीजी—"तारों तले सोना अच्छा है। मगर मेरा ख़याल है रूसमें तारों तले सोना असम्भव होगा।"

मैं—"रूस के कई हिस्से गरम भी हैं।"

गांधीजी—"अच्छा! मेरा ख़याल था, रूस में हर जगह सरदी है।"

मैं खुरशेद बहन और नेहरू के साथ मेहमानघर में बैठा था। यह दोनों कई बार हिन्दुस्तान के जेलों में हो आए हैं। उन्होंने कहा कि जेलमें बड़े नेताओंको अच्छी जगह मिलती है। गांधीजी के साथ हमेशा उमदा सुलूक होता है और उन्हें भोजन भी उनकी मरज़ी के मुताबिक मिलता है। बाहर के लोगों से गांधीजी की चिट्ठी-पत्री पर भी रोक नहीं लगाई जाती। लेकिन दूसरे क़ैदियों को इतनी आज़ादी नहीं मिलती। नेहरूने कहा—"कांग्रेसी लोग जेलसे भाग निकलने की कभी कोशिश नहीं करते, क्योंकि वह तो ख़ुद क़ानून तोड़कर अपने आपको पुलिस के हवाले कर देते हैं। गांधीजी ने जितने भी आंदोलन शुरू किए हैं उनमें कभी छुपे तरीक़ों से काम नहीं लिया। कांग्रेस पहले क़ानून तोड़ने का इरादा ज़ाहिर करती है, इसके बाद क़ानून तोड़ती है। और अगर कोई कांग्रेसका क़ैदी भाग निकलता है तो सिर्फ़ इसलिए कि फिर क़ानून तोड़े और फिर जेलमें वापस आ जाए।"

अब नेहरू गांधीजी के साथ हैं। पहले वह गांधीजी का साथ

देने से हिचकिचाते थे, क्योंकि उनको आशा थी, शायद रूज़वेल्ट या चांग-काई-शेक या कोई दूसरा देस हिन्दुस्तान के मामले में दख़ल देकर भारतीय-अंग्रेज़ी झगड़े का ख़ात्मा कर दे। तब इस आंदोलन की कोई ज़रूरत न रह जाती। नेहरू प्रजातंत्र देसों के बड़े बड़े अफ़सरों से बहुत पहले धुरी राज्यों को ख़ुश करने की नीति के सख़्त ख़िलाफ़ थे और उन्होंने जापान मुसोलिनी और हिटलर के विरुद्ध लिखा और कहा भी था। अंग्रेज़ों की धुरी राज्यों के विरुद्ध लड़ाई में रुकावट डालने की उनकी बिल्कुल इच्छा नहीं थी। लेकिन मलाया और बर्मा जैसी हार अंग्रेज़ों को हिन्दुस्तान में भी न खानी पड़े, इसलिए वह ज़रूरी समझते थे, कि अंग्रेज़ों को कुछ करने पर मजबूर किया जाए। उनका ख़याल था कि अंग्रेज़ अपनी फ़ौज से भारत का बचाव नहीं कर सकते। वह कहते थे—"उन्हें इतनी अक़्ल आनी चाहिए, और उन्हें ऐसे तरीक़े अख़्तियार करने चाहिएं, जिनसे हिन्दुस्तान के लोक अपने देस की सेवा और रक्षा के लिए पूरी पूरी मदद दे।"

१० जून १९४२

आज सेवाग्राम में मेरा आख़िरी दिन था। मैं सुबह पांच बजे उठा। नेहरू मुझसे पहले ही उठकर गांधीजी से मिलने चले गए थे। वह सात बजे वापस आए और बोले—"मैं आज मौलाना

आज़ाद के साथ वर्धा जा रहा हूं, और गांधीजी भी हमारे साथ बातचीत करने के लिए वहां आ रहे हैं।" फ़ैसला हुआ कि मैं वर्धा तक उनके साथ जाऊं और वहां से गाड़ी पकड़कर सीधा हैदराबाद चला जाऊं। आश्रमवासी मुझे विदा का नमस्कार कहने के लिए आए। उन्होंने मुझसे बहुत अच्छा बर्ताव किया था। महादेव देसाई ने मुझे एक तरफ़ ले जाकर कहा—"मैंने अफ़वाह सुनी है, कि गांधीजी १७ जून को क़ैद कर लिए जाएंगे।" मैंने कहा—"मुझे इस अफ़वाह की सच्चाई पर संदेह है। मेरा ख़याल है, अंग्रेज़ तब तक इंतज़ार करेंगे जब तक कांग्रेस खुले तौर पर कानून-भंग आंदोलन का प्रस्ताव पास न कर दे।" देसाईजी ने कहा—"अफ़सोस है, कि आप सीधे नई दिल्ली नहीं जा रहे। गांधीजी वायसराय से मिलना चाहते हैं और उनका ख़याल है कि आप उनकी मुलाक़ात का इंतज़ाम करा सकते हैं। और उनको यह भी विश्वास है कि वे वायसराय से बातचीत करके किसी समझौते पर पहुंच सकेंगे।"

दोपहर का समय। गरमी ११० दरजे के क़रीब। आज़ाद, नेहरू और मैं मोटर में बैठे और झुलसती हुई धूल से भरी सड़क पर सफ़र करते हुए वर्धा के कांग्रेस-मेहमानघर में पहुंचे। पांच मील का सफ़र था। आज़ाद देवक़द आदमी हैं, सख़्त जिस्म, बड़ा सिर, छोटी सफ़ेद दाढ़ी, सिरपर सफ़ेद और छोटे बाल, गरजदार आवाज़। उनका रंग आम हिन्दुस्तानियों से ज़्यादा गोरा है। चार सौ साल गुज़रे, उनका ख़ानदान अरब से हिन्दुस्तान आया था। आज़ाद यहां के मशहूर मुसलमानों में से हैं। उन्होंने क़ुरान का

उर्दू अनुवाद किया है। अरबी साहित्य और मुस्लिम–इतिहास के वह आलिम माने जाते हैं। लोग उन्हें 'मौलाना' कहकर पुकारते हैं, जिसका मतलब है आलिम फ़ाज़िल मुसलमान।

हम तीनों ने मेहमानघर के एक ठंडे कमरे में खाना खाया। आठ दिन में यह पहला मौक़ा था जब मैंने बिजली के पंखे की ठंडी हवा खाई। खाना खा चुकने के बाद मैंने आज़ाद के साथ बातचीत की। आज़ाद अंग्रेज़ी समझ लेते हैं मगर बोलने में हिचकिचाते हैं। इसलिए नेहरू मेरे सवालों का तर्जुमा न करते थे, सिर्फ़ आज़ाद साहब के जवाबों का तर्जुमा कर देते थे। क्रिप्स के साथ ज़्यादातर बातचीत आज़ाद साहब ने ही की थी। उन्होंने कहा—"क्रिप्स ने मुझे बहुत निराश किया। मेरा खयाल था क्रिप्स हिन्दुस्तान का दोस्त है। और उसने मुझे साफ़ तौर पर कहा था कि हिन्दुस्तान में क़ौमी सरकार होगी, जिसका काम एक ज़िम्मेदार मंत्रिमंडल चलाएगा। जिस तरह इंगलैंड का राजा राजकाज में बिल्कुल दख़ल नहीं देता, उसी तरह यहां वायसराय भी बिल्कुल दख़ल नहीं देगा। इसी बुनियाद पर हम क्रिप्स से बातचीत कर रहे थे। हम यह फ़ैसला भी कर चुके थे, कि कौन कौन-सी बातें अंग्रेज़ सेनापति के मातेहत रहनी चाहिएं, और कौन कौन सी हिन्दुस्तानी रक्षा–मंत्री के मातेहत। मगर एका-एक ९ अप्रैल को क्रिप्स ने मुझे कहा कि ब्रिटिश सरकार वायसराय की 'वीटो' (**veto**) का अख़्तियार छोड़ने के लिए तैयार नहीं। इसपर हमारी बातचीत टूट गई। मेरा ख़याल है, क्रिप्सने हमें वचन तो

दे दिया, मगर उसे डर था कि लंदन उसे अपना यह वचन पूरा न करने देगा। बर्तानिया और हिन्दुस्तान में सुलह की एक ही कुंजी है—और वह है एक ऐसी काम चलाऊ सरकार की स्थापना जिसमें हरएक पक्ष के लोग हों। और कांग्रेस यह भी नहीं चाहती थी, कि इस मंत्रिमंडल में सबसे ज़्यादा आदमी कांग्रेस के हों।"

मैंने पूछा—"इस असफलता के बाद हिन्दुस्तान के लोगों पर क्या असर हुआ?"

उन्होंने कहा—"कुछ लोगों को अपनी लाचारी का ज्ञान हुआ है, कुछ लोगों में विरोध आ गया है। लेकिन ज़्यादातर लोगों का यह ख़याल है कि अंग्रेज़ी सरकार के साथ समझौते की बातचीत करना फ़ज़ूल था। अंग्रेज़ कुछ भी देने को तैयार नहीं। बहुतसे मुसलमानों का भी यही ख़याल है।"

आज़ाद साहबने कहा—"आजकल की हवा में कोई मुसलमान लीडर आज़ादी के ख़िलाफ़ नहीं बोल सकता। मुस्लिम लीग तरक्क़ी पसंद (Progressive) नहीं है, और ज़मींदारों के सिर पर ज़िन्दा है। हिन्दुस्तान के ९५ फ़ी सदी मुसलमान हिन्दुओं की औलाद हैं। ५ % मुसलमान विजेताओं के साथ आए थे। मगर यह ५ % भी, जिनमें मेरा परिवार भी शामिल है, यहां हिलमिल गए हैं।" आज़ाद साहब ने गांधीजी की बात दोहराई—"बंगालमें हिन्दू मुसलमान दोनों बंगाली बोलते हैं, एक ही तरह का लिबास पहनते हैं। मद्रास में दोनों तमिल बोलते हैं। गांवों में हिन्दु-मुस्लिम झगड़ा बहुत कम है।

जिन्ना पाकिस्तान नहीं चाहता, वह हिन्दुओं से सौदा करना चाहता है। और यह पत्ता उसे अंग्रेज़ोंने दिया है।"

आज़ाद और नेहरू दोनोंने मुझे यक़ीन दिलाया, कि अगर मुसलमान सच-मुच हिन्दुस्तानसे अलग होना चाहेंगे, तो उन्हें कोई नहीं रोकेगा। मगर आज़ाद साहब बोले—"मैं यह पसंद नहीं करता कि शादी से पहले ही तलाक़ हो जाए। अगर हिन्दू और मुसलमान साथ रहने की कोशिश कर के नाकामयाब हों, तो वह शौक़ से अलग हो सकते हैं। लेकिन बहुत से मुसलमानों को हिन्दुस्तान की एकता में विश्वास है। और वह इसकी आज़माइश किए बग़ैर इसे छोड़ने को तैयार नहीं।"

दोपहर के तीन बजे गांधीजी मेहमानघर में आ पहुंचे। उस वक्त मैं दरवाज़े के पास ही खड़ा था। उनका चेहरा मुस्कराहट से खिला हुआ था। जिस मोटर में मैं नेहरू और आज़ाद आए थे, वही मोटर गांधीजी और देसाई जी को लेने सेवाग्राम गई थी। वर्धा से पौन मील के फ़ासले पर मोटर बिगड़ गई। इसलिए गांधीजी ने यह फ़ासला हिन्दुस्तान की चिलचिलाती धूप में पैदल तय किया। वह गर्व से बोले—"सायंसके ज़माने की इन मशीनों का बिल्कुल भरोसा नहीं।"

कुछ ही मिनट बाद गांधी जी आज़ाद और नेहरू से बातचीत कर रहे थे। दरवाज़ा खुला देखकर मैं भी अंदर चला गया। मगर उन्हें हिन्दुस्तानी में बातचीत करते देखकर उल्टे पांव लौट आया। कुछ देर बाद ग्रोवर इंटरव्यू के लिए आ पहुंचा। यह नौजवान

हिन्दुस्तान में एसोसिएटेड प्रेस का प्रतिनिधि है। गांधीजी ने उससे कहा—"इस वक्त हिन्दुस्तान एक लाश है, और लाश किसी की मदद नहीं कर सकती। आज़ाद होने पर ही हिन्दुस्तान में जीवन आ सकता है, और तभी हिन्दुस्तान अपनी रक्षा कर सकता है।"

मैं रात के साढ़े नौ बजे वर्धा से रवाना हुआ। जब मैं विदा होने लगा तो गांधीजी ने मेरे साथ ज़ोर से हाथ मिलाया और बोले—"मुझे फिर भी मिलना।"

हिन्दुस्तान से हवाई जहाज़ में बैठकर मैं सात दिन के बाद न्यूयार्क पहुंचा। कुछ दिन बाद एक पत्रकार ने मेरा इंटरव्यू लेते हुए पूछा—"क्या तुमने गांधीजी को मक्खन-रोटी[1] का ख़त लिखा है?" मगर मुझे इसका ध्यान ही नहीं आया था।

*

१—लेखक का मतलब मस्काबाज़ी का ख़त मालूम होता है—अनुवादक।

मेरी राय

सेवाग्राम से चले आनेपर गांधीजी ने मेरे पास प्रेज़िडेन्ट रूज़वेल्ट के लिए एक ख़त भेजा। इस ख़त के साथ गांधीजी के हाथ का लिखा एक पुर्ज़ा भी था:—"अगर यह ख़त तुम्हें पसंद न हो तो इसे फाड़ दो। अगर तुम्हारा ख़याल हो कि ख़त किसी और तरीक़े से लिखना चाहिए तो मुझे बता दो।" गांधीजी में घमंड नाम को भी नहीं।

गांधीजी अपनी भूल मानने में कभी आनाकानी नहीं करते। और वह अपनी भूल खुल्लम-खुल्ला मान लेते हैं। मई १९४२ में जब क्रिप्स मिशन असफल रहा तो गांधीजी ने कहा—"अंग्रेज़ों को हिन्दुस्तान से चले जाना पड़ेगा और अपनी फ़ौजों को भी ले जाना पड़ेगा; नहीं तो मैं अपना आंदोलन शुरू कर दूंगा।" लेकिन जून में उन्होंने अपनी राय बदल दी और अपने अख़बार 'हरिजन' में लिखा—"मेरी पहली लिखत में कुछ दरार ख़ाली छूट गए थे। मेरे एक मुलाक़ाती ने मुझे यह दरार दिखलाए और मैंने इन्हें भर दिया। अहिन्सा में ईमानदारी की सख़्त ज़रूरत है। इसलिए लोगोंको मेरी कमज़ोरी बर्दाश्त करनी पड़ती है। मैं मित्र राष्ट्रों से ऐसी बात नहीं कह सकता जिससे उनकी हार होने का भय हो।...अगर अंग्रेज़ी फ़ौजें यहां से हटा ली जाएं तो नतीजा यह होगा कि हिन्दुस्तान पर जापान का क़ब्ज़ा हो जाएगा, और चीन हार जायगा। मेरा आंदोलन इतनी आफ़तों को बुलावा देगा,

इसका मुझे ज़रा भी ख़याल न था। इसलिए मेरा ख़याल हैं कि हिन्दुस्तान को आज़ाद करने की दरख़्वास्त मानकर भी अगर अंग्रेज़ जापान से लड़ने के लिए यहां रहना चाहें तो उन्हें रहना चाहिए।..."

आम राजकार लोग जब चुनाव के लिए खड़े होते हैं या आप से अपनी बात मनवाना चाहते हैं, तो आपसे अमन और इक़बाल, थोड़े टेक्स और ज़्यादा फ़ायदों बल्कि चांद और तारों का भी वादा कर लेते हैं और कहते हैं, हमारी हिमायत करो। गांधीजी के जीवन का ध्येय देस की आज़ादी है। इसलिए वह इंगलैंड और बाक़ी दुनिया से कह सकते हैं, कि अगर उनका जीवन ध्येय पूरा हो जाए तो हिन्दुस्तान में चैन ही चैन होगा। मगर वह कहते हैं—"अंग्रेज़ों के चले जाने के बाद यहां शांति रहेगी इसका मुझे पूरा पूरा भरोसा नहीं। शायद अंग्रेज़ों के जाते ही यहां खलबली मच जाए। मैं चाहता हूं, अंग्रेज़ यहां से शांति के साथ जाएं और हिंदुस्तान को परमात्मा के हवाले कर दें। शायद तुम्हें यह फ़रज़ी ज़बान पसंद न आए। ऐसी हालत में तुम यह कह सकते हो कि यहां 'निराज शुरू हो जाएगा। यह बुरी बात होगी। मगर हम इसे रोकने की कोशिश करेंगे। संभव है यहां निराज का दौर दौरा न हो।" गांधीजी के ऐसे बयान पढ़कर लोगोंको को यह कहने का मौक़ा मिल जाता है कि गांधीजी ख़ुद मानते हैं कि अगर अंग्रेज़ चले गए तो भारतमें खलबली मच जाएगी।

गांधीजी ने कहा, कि जब अंग्रेज़ लोग हिन्दुस्तानियों को ताक़त सौंप देंगे तो हिंदुस्तानी फ़ौज भी तोड़ दी जाएगी। लेकिन कुछ ही मिनट पहले उन्होंने कहा था:—“अगर कोई हिदुस्तानी चाहेगा तो वह अपने तौरपर फ़ौज में भरती होकर या रुपया देकर आपकी मदद कर सकेगा। इसपर हमें कोई आपत्ति न होगी।” और ६ अगस्त १९४२ के ‘हरिजन’ में उन्होंने लिखा था:—“क्या हिन्दुस्तान के करोड़ों लोगों में से अनगितन सिपाही भर्ती नहीं किए जा सकते? और क्या वह लड़ने-मरने में दुनिया के दूसरे सिपाहियों से पीछे हैं?” इन सब बातों का मतलब क्या है? क्या यह कि गांधीजी अपनी बात को आप ही काट रहे हैं? नहीं। वह हिन्दुस्तान की फ़ौज को इसलिए तोड़ना चाहते हैं क्योंकि इस फ़ौज के सिपाही या तो वह हैं जो पेट के लिए भर्ती हुए हैं, या वह हैं जिन्हें ज़बर्दस्ती भर्ती किया गया है। हिन्दुस्तान के आज़ाद होने पर हिन्दुस्तानकी अपनी कौमी फ़ौज बन सकेगी। इस मिसाल से यह साफ़ ज़ाहिर हो जाता है कि गांधीजी के शब्दों को प्रसंग से निकालकर ग़लत अर्थ दिए जा सकते हैं।

गांधीजी के मानसिक सम्पर्क में आने से जो ख़ुशी होती है, इसका एक सबब यह है कि वह आपके सामने अपना मन खोलकर रख देते हैं ताकि आप यह देख लें कि उनके मन की मशीन किस तरह काम कर रही है। ज़्यादातर लोग बातचीत करते समय सोच सोचकर बोलते हैं, ताकि सुनने वाला उनको आसानी से न काट सके। गांधीजी की हालत में यह बात नहीं। वह जैसे जैसे सोचते जाते हैं, वैसे वैसे बोलते जाते हैं। ठीक उसी तरह

जैसे एक लेखक पहले कहानी लिखता है, फिर उसमें सुधार करता है, और तीसरी बार ठीक करने के बाद उसे छपने के लिए दे देता है। पाठक शायद एतराज़ करें कि कहानी का प्लाट बदल दिया गया है, और हीरो को बदमाश बना दिया गया है। गांधीजी ऐसे एतराज़ों पर ध्यान नहीं देते। वह कहते हैं—'हां मैंने अपना ख़याल बदल लिया है।' असलमें बात यह है कि ज्यों ज्यों उन्हें ख़याल आते हैं, वह बोलते जाते हैं। इस तरह उनकी विचार-धारा लिखी जाती है। यह पढ़कर कई लोग हैरान हो जाते हैं, और कई यह कहना शुरू कर देते हैं कि गांधीजी अपनी बात को आप ही काट देते हैं। या यह कि गांधीजी ढोंगी हैं। मगर गांधीजी इन दोनों बातों की परवा नहीं करते। शायद इसलिए कि वह बूढ़े और घमंडसे ऊपर हो गए हैं, और इस दुनिया में रहते हुए भी इस दुनिया से बाहर रहते हैं। मैं हिन्दुस्तानमें कई अंग्रेज़ों और हिन्दुस्तानियों से मिला हूं। उनमें से बहुतों ने मुझे यह चुनौती दी कि "उनकी बातें छापने के लिए नहीं हैं। मगर गांधीजी ने कभी इस बात की चिंता नहीं की कि मैं उनके बारे में क्या लिखूंगा और उनकी बातों का किस तरह ज़िक्र करूंगा। वह मेरे साथ बातचीत करते थे, मुझ पर बातें फेंकते नहीं थे। मैंने मुस्लिम लीग के प्रेसिडेंट मुहम्मद-अली जिन्ना के साथ भी कई घंटे मुलाक़ात की है। वह लैक्चर देने और बहस करने में बहुत चतुर हैं। वह लालच में फंस जाने वाले राजकारों में से नहीं। मगर वह बातचीत करते समय मुझपर अपनी बातें ठूंसते थे। वह मुझ से अपनी बात मनवाने की

कोशिश करते थे। जब मैं उनसे कोई सवाल करता था, तो मुझे ऐसा मालूम होता था, कि ग्रामोफ़ोनपर रिकार्ड चढ़ा दिया गया है। मैं वह दलीलें या पहले कहीं सुन चुका था, या उनकी दी हुई किताबों में पढ़ चुका था। लेकिन जब मैं गांधीजी से कुछ पूछता था, तो मुझे ऐसा लगता था जैसे मैंने कोई क्रियात्मक काम शुरू कर दिया है। मैं उनके दिमाग़ को काम करते देख सकता था, और सुन सकता था। जिन्ना के साथ बातचीत करते वक्त मुझे सिर्फ़ रिकार्ड पर चलती हुई सुई की सरसराहट सुनाई देती थी। जिन्ना मुझे सिर्फ़ अपने नतीजे देता था। लेकिन गांधीजी को मैं नतीजे पर पहुंचते हुए देख सकता था। इसलिए जिन्ना के साथ बातें करने की निस्बत गांधीजी के साथ बातें करने में ज़्यादा उत्तेजना मिलती है। गांधीजी से ठीक सवाल करके आप उनके लिए नए विचारों का रास्ता खोल सकते हैं। उनके साथ मुलाक़ात करना किसी खोज-यात्रा पर जाने के बराबर है। कभी कभी तो वह खुद अपनी कही हुई बातों पर अचरज करने लगते हैं। उनके मंत्रियों को भी, जो हमारे साथ ही बैठे रहते थे, कभी कभी गांधीजी के विचारों की नवीनता पर अचम्भा होता था। इसीलिए मैंने गांधीजी से भी बहुत कुछ सीखा, और गांधीजी के बारे में भी बहुत कुछ सीखा। उन्होंने मुझ से सिर्फ़ सच्ची सच्ची घटनाओं और अपनी राओं का ही बयान नहीं किया, बल्कि उन्होंने मेरे सामने अपना आप खोलकर रख दिया। वह अपने दुश्मनों को भी अपने खिलाफ़ इस्तेमाल करने के लिए मसाला दे देते हैं। गांधीजी को मुझे यह कहने की ज़रूरत नहीं पड़ी कि उनके मौन दिन में कुछ ख़ास गुण हैं। यही गांधीजी की

खूबी है। उनके दिमाग़ में जो कुछ भी आता है, वह उसे साफ़ साफ़ कह देते हैं। इसीलिए कुछ लोग घबरा जाते हैं और चिढ़ जाते हैं। एक मिसाल ले लीजिए। वह कहते हैं कि अगर उन्हें मौक़ा मिले तो वह जापान जाकर जंग बंद करने की कोशिश करेंगे। उन्हें मालूम है और वह कहते भी हैं कि उन्हें जापान जाने का मौक़ा नहीं मिलेगा। और अगर मौक़ा मिल भी गया तो जापान सुलह नहीं करेगा। फिर वह कहते ही क्यों हैं कि वह जापान जाएंगे? इसलिए कि यह खयाल उनके दिमाग़ में आ गया। वह अमनपसंद हैं, इसलिए वह चाहते हैं कि लड़ाई बंद हो जाए। लेकिन चूंकि लड़ाई बंद नहीं हो सकती, इसलिए वह इस तरह के खयाल भी दिमाग़ में न आने दें, यह गांधीजी के लिए मुश्किल है।

कभी कभी गांधीजी ऐसे विचारों की छानबीन करने में मज़ा लेते हैं जो अनहोने हैं। वह आजकलकी ईजादों की हंसी उड़ाते हैं। वह जानते हैं कि वह वक्त की सुई को पीछे नहीं घुमा सकते। वह जानते हैं कि वह मोटर को इस दुनिया से बाहर नहीं निकाल सकते। मगर फिर भी वह उसकी हंसी उड़ा सकते हैं। वह ज़ोर देते हैं कि हिन्दुस्तान के लिए संघ–सरकार की कोई ज़रूरत नहीं। अगर आप दलीलें दें कि संघ–सरकार न होने से ऐसी ऐसी मुश्किलों का सामना करना पड़ेगा, तब भी वह न मानेंगे। अगर आप फिर भी दलीलें देने से बाज़ न आएं तो वह बोल उठेंगे—"मुझे मालूम है कि हिन्दुस्तान में केन्द्रीय सरकार बनकर रहेगी, चाहे मैं इसके हक़ में हूं, चाहे खिलाफ़ हूं।" गांधीजी का

यही ढंग है। वह एक सिद्धांत बनाते हैं, फिर उसका समर्थन करते हैं और अंत में मान जाते हैं कि उनके सिद्धांत पर अमल नहीं हो सकता। उनका दिमाग़ तरल और नरम है। जब वह कुछ करने पर उतरते हैं तो वह डिक्टेटर के समान होते हैं। अपने तर्क के ज़ोर से और अपने साथियों की मदद से वह सारे विरोध को कुचल डालते हैं। मगर उनके सोचने का तरीक़ा डिक्टेटरों जैसा नहीं है। क्योंकि डिक्टेटर कभी अपनी भूल नहीं मानते। मगर गांधीजी अपनी भूल मान सकते हैं और अक्सर मान लेते हैं।

गांधीजी बहुत बातों में हिन्दू हैं। हिन्दू धर्म उदार स्पंच जैसा धर्म है। हिन्दू ईश्वर को मानते हैं। मगर कुछ ईसा मसीह को भी मानते हैं, और कुछ नास्तिक भी हैं। हिन्दू कहते हैं हिन्दू धर्म जीवन का रास्ता है, इसे किसी देवता से कोई सरोकार नहीं। कुछ हिन्दू मूर्तियों की पूजा करते हैं। कुछ पहाड़ों और नदियों की पूजा करते हैं। कुछ लोग ऐसे देवताओं की भी पूजा करते हैं जो पहले आदमी थे। एक ईश्वर को मानने और मूर्ति पूजा करने में उन्हें कोई फ़र्क मालूम नहीं होता। एक हिन्दुस्तानी ने मुझसे कहा—"अगर नियाग्रा का झरना हिन्दुस्तान में होता, तो लोग उसकी भी पूजा करते।" हिन्दुओं के स्वर्ग में बहुत देवता रहते हैं और बहुत से हिन्दुओं को विश्वास है कि वहां महात्मा गांधीकी जगह ख़ाली है।

गांधीजी के बारें में हिन्दुस्तानियों का यह ख़याल है कि उन्होंने अपना जीवन लोक सेवा की भेंट कर दिया है। वह आम लोगों

की तरह रहते हैं, और आम लोगों की तरह आम तकलीफ़ें उठाते हैं। उनके पास न पैसा है, न जायदाद है। उनकी एक ही ख़्वाहिश है—हिन्दुस्तान आज़ाद हो जाए। और चूंकि हिन्दुस्तान के करोड़ों लोगों की भी यही ख़्वाहिश है इसलिए गांधीजी क़ौमी आज़ादी की तड़प की जीती जागती तस्वीर बन गए हैं।

हिन्दुस्तान में जहां कहीं भी हिन्दुस्तानी अंग्रेज़ों के विरुद्ध बोलते थे, मैं उनसे पूछता था—तुम अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ क्यों हो? एक बार मैंने एक हिन्दुस्तानी मुसलमान से जो सिविल-सर्विस में नौकर है, पूछा—"हिन्दुस्तानी लोग अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ क्यों हैं?" उसने जवाब दिया—"आपको पूछना चाहिए, कि हम उनके ख़िलाफ़ क्यों न हों। कोई देस अपने ऊपर राज करने वाले विदेशियों को पसंद नहीं कर सकता।"

गांधीजी के माननेवाले मुसलमान भी हैं, हिन्दू भी हैं, पारसी भी हैं, अछूत भी हैं। उनकी गांधीजी में भक्ति है क्योंकि वही ऐसे आदमी हैं जो सालों से हिन्दुस्तान की आज़ादी के लिए अनथक मेहनत करते रहे हैं। बहुत से लोग गांधीजी के साथ बहुत सी बातों में सहमत नहीं। बहुत से मुसलमान कहते हैं कि वह हिन्दू राज क़ायम करना चाहते हैं। लेकिन यह सभी मानते हैं कि वह सदा आज़ादी के लिए लड़ते रहे हैं। आजकल के ज़माने में जातीयता की तड़प कुदरती है। गांधीजी इस तड़प की ज़बर्दस्त व्याख्या करने वाले हैं।

गांधीजी को पूरा विश्वास है कि वह सेवाग्राम में रहकर, स्वत-

पत्र पढ़कर, अपने मिलने वालों से मिलकर लोगों की भावनाएं समझ सकते हैं, और प्रार्थनाएं सुन सकते हैं। वह जानते हैं कि उनके लोग क्या चाहते हैं इसलिए वह उनके लिए काम कर सकते हैं। उनके लिए गांधी और हिन्दुस्तान एक ही चीज़ है। हिन्दुस्तान की आवाज़ सुनने के लिए उनकी सब शक्तियां एकाग्र हैं। वह यह आवाज़ सुनते हैं और उनका ख़याल है कि वह इस आवाज़ को ठीक-ठीक समझते हैं। बड़े नेताओं का आत्मविश्वास ही उनका गतिप्रेरक और पथ-प्रदर्शक होता है। अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र के बारे में गांधीजी को शंकाएं हो सकती हैं। वह अपना प्रोग्राम बदल सकते हैं, अपने तरीक़े बदल सकते हैं। लेकिन आज़ादी के सवालपर वह ज़रा भी इधर उधर नहीं हो सकते। हिन्दुस्तानियों का विश्वास है कि गांधीजी का जन्म ही आज़ादी हासिल करने के लिए हुआ है। वह आज़ादी के लिए मरने से भी नहीं डरते। त्याग और तपस्या हिन्दुस्तान में बहुत बड़ा गुण समझा जाता है।

हिन्दुस्तान जैसे मज़हब-पसंद देश में गांधीजी की लोकप्रियता का दूसरा कारण उनकी बुद्धि, उनकी समझ और उनकी धार्मिकता है। लेकिन उनकी लोकप्रियता का सबसे बड़ा कारण है आज़ादी की तड़प, और आज़ादी को हासिल करने के लिए उनकी अथक मेहनत। मेरे ख़यालमें आज़ादी की चाह उनकी अहिन्सा की चाह से भी ऊपर है। वह अहिन्सा न मानने वाले नेहरू, आज़ाद और राजगोपालाचारी के साथ मिलकर काम कर सकते

हैं। मगर वह हिन्दुस्तान की आज़ादी के दुश्मनों के साथ कभी काम नहीं कर सकते।

आज़ादी के लिए गांधीजी और हिन्दुस्तान के करोड़ों लोग एक ही सुर में बोलते हैं। यह स्वर-संगति बड़े लीडरों के लिए ज़रूरी चीज़ है। विन्स्टन चर्चिल अपने लैक्चरों में यह स्वर-संगति प्रमाण रूप से दिखाते हैं। जो बातें मामूली बर्तानिया-निवासी टूटे फूटे लफ़्ज़ों में अपने पड़ोसियों से कहते हैं, या रातके वक्त आपस में बातचीत करते समय कहते हैं, वही बातें चर्चिल अच्छे ढंग से दोहरा देता है। तुम उसी लीडर के पीछे चलोगे जो तुम्हारा ही सुधरा हुआ एडीशन होगा। आधे नंगे, आधे भूखे, मामूली समझ के जो करोड़ों किसान और मज़दूर राष्ट्रीय प्रयास द्वारा इक़बाल और ख़ुशहाली प्राप्त करना चाहते हैं, उनके लिए गांधीजी पिता या भाई के समान हैं। वह उन्हीं की धरती से पैदा हुए हैं। अनगिनत उच्च समाज के लोग और मिलमालिक भी विदेशी राज को अपना अपमान समझते हैं। उन सब की प्रार्थनाएं गांधीजी के साथ हैं।

गांधीजी के जीवन का सिर्फ़ एक ही उद्देश्य है—वह हिन्दुस्तान को आज़ाद देखना चाहते हैं। महान पुरुष ऐसे ही होते हैं। चर्चिल की अभिलाषा है कि बर्तानिया हमेशा सबसे बड़ी ताक़त बना रहे। लेनिन अपने देश को जागीरी कीचड़ में से निकालना चाहता था। लिन्कन एकता चाहता था। हिटलर दुनिया जीतना चाहता था। हर एक महापुरुष अच्छी मूर्ति की तरह एक रूप होता है।

★

हमारी और किताबें

अुर्दूके अदीब : ले. श्रीपाद जोशी. उर्दू के अहम साहित्यिक का परिचय कराके अुर्दु साहित्यके अीतिहास की जानकारी आसान जबानमें देनेवाली अेक अनोखी किताब। दीबाचा : आचार्य काका कालेलकर।

वीर दयानन्द : ले. सुदर्शन. अुस आदमी का जीवन, जिसने अपना आप देस और धर्मपर कुर्बान कर दिया। छप रहा है.

कृपा-किरन : ले. रैहाना तैयबजी. कु: रैहाना के भजन जिन्होने सुने है अुन्हें कभी भूल नहीं सकते। यह सब भजन अब किताब रूपसे मिलेंगे। छप रहा है.

फूलवती : ले. सुदर्शन. अेक अैसी लड़की की कहानी जो सब कुछ जानती थी झूठ बोलना न जानती थी। किं. १४ आने.

सात अजूबे : ले. सुदर्शन. पुरानी दुनिया की सात अचरज भरी चीजें, जिनका हाल पढ़कर आप हैरान रह जाअेंगे।

अंगूठी का मुक़दमा : ले. सुदर्शन. मज़ेदार रसीली कहानियां, अेक से अेक बढ़कर। बच्चों के लिअे आला दरजे का तोहफ़ा। दूसरी बार छप रही है।

प्रकाशक

वोरा ऐन्ड कम्पनी, पब्लिशर्स, लिमिटेड

३ रांउन्ड बिल्डिंग, कालबादेवी रोड, बम्बई २

Printed by R. R. Bakhale, at the Bombay Vaibhav Press, Bombay 4, and published by M. K. Vora for Vora and Co. Publishers Ltd., Round Building, Kalbadevi, Bombay 2.